१

संशय की एक रात

कवि नरेश मेहता का परिचय — शीतला प्रसाद दुबे -

इकाई की रूपरेखा –

१.० उद्देश्य

१.१ प्रस्तावना

१.२ जीवन परिचय

१.३ रचना परिचय

१.४ टिप्पणी

१.५ प्रश्न

१.० उद्देश्य

१) इस इकाई का उद्देश्य है-विद्यार्थियों को कवि नरेश मेहता का परिचय देना ।

२) इससे विद्यार्थी, रचना के साथ-साथ कवि की रचना धर्मिता से परिचित हो सकेंगे ।

३) इस इकाई के अध्ययन से विद्यार्थी का सामान्य ज्ञान विकसित होगा ।

१.१ प्रस्तावना

बी.ए. द्वितीय वर्ष के विद्यार्थियों के लिए यह आवश्यक है कि वे किसी रचना का अध्ययन करने के पूर्व उसके रचनाकार का पूर्ण परिचय प्राप्त कर लें । इससे उन्हें रचना की पूर्वपीठिका का ज्ञान होता है। इस इकाई के माध्यम से कवि नरेश मेहता का पूर्ण परिचय प्रस्तुत किया गया है ।

१.२ जीवन-परिचय

आधुनिक हिंदी-साहित्य के मूर्धन्य कवि, कथाकार एवं विचारक श्री. नरेश मेहता का जन्म १५ फरवरी सन १९२४ को मालवा के राजापुर कस्बे में हुआ था। इनका मूल नाम पूर्णशंकर शुक्ल है। नरसिंहगढ़ की राजमाता ने पूर्णशंकर शुक्ल का नाम नरेश रखा। 'मेहता' इनका उपनाम था। बाद में चलकर ये नरेश मेहता के नाम से प्रसिद्ध हुए। इनके पिता का नाम पंडित बिहारीलाल शुक्ल था। ढाई वर्ष की अल्पायु में ही इनकी माता का देहावसान हो गया।

इनके पिता ने तीन विवाह किया था । पहली पत्नी निःसंतान थी, दूसरी से एक पुत्री थी - 'शांति जोशी' और तीसरी से नरेश मेहता । तीन-तीन पत्नियों और पुत्री शांति जोशी की मृत्यु के आघातों को इनके पिता सहन न कर सके और समाज से वीतरागी हो गये। फलतः बालक नरेश बचपन में ही दो बातों से घृणा करना सीख गया - एक गणित, दूसरा परिवार।

पिता के परिवार छोड़ देने के पश्चात् इनके चाचा पं. शंकरलाल शुक्ल ने इन्हें पुत्र के रूप में स्वीकार कर लिया। चाचा डिप्टी कलेक्टर थे। अतः बालक नरेश को भौतिक सुख-सुविधाओं की कमी नहीं थी परंतु माँ की मृत्यु ने उन्हें भीतर तक वेदनाग्रस्त कर दिया था।

शिक्षा –

बालक नरेश ने छठी कक्षा तक शिक्षा अपने चाचा के साथ रहकर ग्रहण की परंतु विद्यालय न होने के कारण ७, ८, ९ और १० वीं कक्षा का अध्ययन उन्होंने नरसिंहगढ़ में किया। उज्जैन से इंटरमीडियेट कक्षा उत्तीर्ण होने पर पिता ने उन्हें 'ब्लैक बर्ड' कलम भेंट स्वरूप दी। नरेश के आग्रह पर उन्होंने उन्हें उच्चशिक्षा के लिए वाराणसी जाने की अनुमति दे दी। उज्जैन से काशी की यात्रा के बीच 'प्रयाग' को उन्होंने अपने अध्ययन का केंद्र बनाना चाहा. परंतु वहाँ का साहबी ठाट-बाट उन्हें पसंद नहीं आया और बनारस चले आये। मुगलसराय में उनकी मुलाकात बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के डॉ. योगेंद्र नाथ मिश्र से हुई। इन्हीं के यहाँ वे दो महीने तक रहे, बाद में बिरला छात्रावास में प्रवेश मिल गया। अध्ययन के दौरान ही नरेश जी ने केंद्रीय प्रशिक्षण संस्थान, देहरादून से सेकेंड लेफ्टिनेंट का प्रशिक्षण प्राप्त कर लिया। राजनीतिशास्त्र, प्राचीन इतिहास और हिंदी-साहित्य जैसे विषय लेकर उन्होंने स्नातक तक की उपाधि प्राप्त की। १९४६ में उन्होंने एम.ए. किया। डॉ. नंददुलारे बाजपेयी के निर्देशन में उन्होंने शोधकार्य भी आरंभ किया परंतु उनके वाराणसी छोड़ने के कारण शोधकार्य पूरा नहीं हो सका।

आजीविका –

नरेश जी आवश्यकतावश काव्य-पाठ करते थे। अधिकारिक रूप से सन् १९४८ से १९५३ तक उन्होंने 'आकाशवाणी' में सेवा दी। इस दौरान लखनऊ, नागपुर तथा प्रयाग केंद्रों में अपनी प्रतिभा को परिचय देते हुए १९५३ में उन्होंने आकाशवाणी की नौकरी से त्यागपत्र दे दिया।

रुचि एवं प्रेरणा –

माँ की मृत्यु तथा पिता के वीतराग होने का बालक नरेश के मन पर विशेष प्रभाव पडा था। पारिवारिक अभाव के कारण वे अंतर्मुखी हो गए। किशोर आयु के दौरान आए परिवर्तनों ने उन्हें उस छोर पर ला खड़ा किया जहाँ पर वे 'भीड़ में अकेलेपन को महसूस करते रहे।

नरेश मेहता का जीवन अत्यंत ही संघर्षपूर्ण परिस्थितियों में बीता। अभाव और यातना का इतना मर्माहत दौर किसी भी व्यक्ति को भौतिकता के प्रति आग्रही बना देगा। साथ ही उसमें एक गहरा प्रतिशोध का भाव भी भरेगा। नरेश जी इस दोनों परिणतियों से बच निकलते हैं। बच ही नहीं निकलते वरन् पूर्ण वेग के साथ वो इनसे ऊपर उठ जाते हैं। 'दूसरे सप्तक' के अपने वक्तव्य में वे कहते हैं कि ''नया तो मेरा युग है, मेरी प्रकृति है तथा सबसे बड़ा मैं हूँ।''

राजनीति और साहित्य को पर्यायवाची मानने वाले नरेशजी ने आकाशवाणी में नौकरी आरंभ की। उनकी पहली नियुक्ति लखनऊ केंद्र में हुई थी। इसके बाद नागपुर तथा प्रयाग के

आकाशवाणी केंद्रों में नौकरी करते हुए अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। लेखकीय स्वतंत्रता के समर्थक और उनकी यायावरी वृत्ति ने विविधगामी प्रवृत्तियों से कभी समझौता नहीं किया और सन १९५३ में उन्होंने आकाशवाणी से त्यागपत्र दे दिया। इसके बाद नरेशजी ने दिल्ली में आकर लेखकीय दायित्व का निर्वाह करते हुए, कुछ मित्रों की प्रेरणा और सलाह से 'साहित्यकार' पत्रिका का संपादन किया। इसी बीच उन्हें अखिल भारतीय मजदूर संघ के मुखपत्र 'भारतीय श्रमिक' का संपादन भार वहन करने का अवसर मिला। पत्र संपादन की दृष्टि से नरेश मेहता द्वारा साहित्यिक पत्रिका 'कृति' का संपादन भी एक उल्लेखनीय घटना है, जिसके सहयोगी संपादक श्रीकांत वर्मा थे।

मेहता जी को जिस प्रकार के आर्थिक परिवेश में रहना पड़ा उस स्थिति में उन्हें कट्टर वामपंथी हो जाना चाहिए था, किंतु उनकी दृष्टि में क्रांति की कोई महत्ता नहीं है। उनके अनुसार - ''कहीं कुछ नहीं बदलता, यह हमारा बहुत बड़ा भ्रम है कि हम क्रांति से स्थिति को बदल देंगे।'' लेखक बनने के क्रम में मुख्य रूप से उनकी तैयारी कवि के लिए थी, परंतु 'डूबते-मस्तूल' लिखने के पश्चात् उन्हें गद्य पर अपनी पकड़ मालूम हुई। अतः अब वे लगातार गद्य और पद्य दोनों विधाओं में लिखते रहे हैं। सन १९८५ से प्रेमचंद सृजनपीठ विक्रम विश्व-विद्यालय परिसर, उज्जैन में वे निर्देशक के मानक पद पर कार्यरत रहें। नरेश मेहता सन १९९२ ई. में ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किये गये। वे अभिजात्य चारूता से मंडित राव संपन्न व्यक्तिमत्व के धनी थे। ७८ वर्ष की आयु में २२ नवंबर २००० को भोपाल में उनका निधन हो गया। उनकी बिदाई से हिंदी साहित्य संसार में सन्नाटा और गहरा हो गया।

जिस कालखण्ड में लेखक सृजन करता है, उससे वह अनिवार्य रूप से प्रभावित होता है। अतः साहित्यकार के साहित्य का अनुशीलन करने के लिये तत्कालीन परिवेश का अध्ययन भी आवश्यक हो जाता है।

युग-परिचय –

'दूसरा-सप्तक' के अंतर्गत एक सशक्त कवि के रूप में नरेश मेहता ने हिंदी साहित्य जगत का ध्यान आकर्षित किया। वे अपने युग की समसामायिक परिस्थिति में, एवं प्रवृत्तियों से गुजरते हुए युगीन चरित्रों की पीड़ा को देखते हुए उनके प्रति आत्मीय सहानुभूति को अभिव्यक्ति ने में सफल हुए हैं। उनका साहित्य उनके युग एवं समाज की ध्वस्त होती दीवारों की कहानी कहता है, जिसिके मूल में साहित्येतर परिस्थितियाँ ही हैं। आधुनिक युग की परिवर्तित गतिविधियों को भारतीय संस्कृति एवं विराट मानवीय चिंतन के परिवेश में रूपायित करने का श्रेय कविश्री नरेश मेहता को है।

साहित्यिक परिस्थितियाँ –

प्रत्येक साहित्य को राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा साहित्यिक परिवेश प्रभावित करता है। इस परिवेश से प्रभावित साहित्य समकालीन कहलाता है। आज राष्ट्रों की भौगोलिक सीमाएँ टूट रही हैं, दुनिया एक इकाई की ओर तेजी से बढ़ती जा रही है और एक विश्वमानव का जन्म हो रहा है और विविधता के बीच एकता उत्पन्न हो रही है, तो हम सब भूले से, भ्रमे से, ठगे से दिखाई देते हैं। सृजन की कथा मानव सभ्यता के विकास के साथ विकसित होती चली आई है। जो रचना एक युग में प्रासंगिक होती है वह दूसरे में अप्रासंगिक हो जाती है। द्वितीय महायुद्ध के बाद साहित्य के संदर्भ में नयी पीढ़ी के 'विद्रोह' की चर्चा की जाती रही है।

नये युग के अनुकूल मानव की प्रगति अभी होने को है। 'हिंदी साहित्य कोश' आधार कहा जाता है कि जीवन मूल्यों का संबंध व्यक्तिमत्व से होता है और व्यक्तित्व मनुष्य की वह क्षमता है जो मूल्यों की खोज करती है। प्रत्येक कवि की अनुभूति उसकी निजी निधि होती है। नरेशजी ने हाईस्कूल से पूर्व ही 'चंद्रकांता', सूरदास, तुलसीदास तथा महाभारत, पुराण और धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन और श्रवण भी किशोरावस्था में ही किया था। हिंदी में प्रेमचंद के 'गोदान' से कहीं अधिक प्रभावकारी रचना उन्हें 'त्यागपत्र' प्रतीत होती है। आधुनिक हिंदी काव्य-धारा भारतेन्दु-युग से लेकर नयी कविता तक एक विकास श्रृंखला में बँधी है; कई मोड़ आए, तूफान आए, प्रतिक्रियाएँ आई परंतु उसका बहाव सातत्यपूर्ण है। प्रवृत्तियों और शिल्प की दृष्टि से भी दृष्टिपात करें तो उनमें एक अंत:सूत्रता गुंफित रहती है। इस अंत:सूत्रता की दृष्टि से काव्यधाराओं को देखना परखना भी ऐतिहासिक आयाम से महत्त्वपूर्ण है।

भारतेन्दु युग आधुनिक हिंदी साहित्य का प्रवेशद्वार है। यह युग मध्ययुगीन एवं नवीन चेतना का संधि-स्थल है। यहीं से साहित्य प्रवाह जनता की ओर मोड़ लेता है। पूरे भारतेन्दु-युग पर दृष्टिपात करने से प्रतीत होता है कि साहित्यकारों का परंपरा के प्रति मोह शिथिल होता जा रहा था। द्विवेदी काल में भारतेन्दु की नवीन चेतना के उन्नयन के अनेक स्त्रोत खुल पड़े। हिंदी पत्रकारिता के विकास और सरस्वती के १९०३ में प्रकाशन से इस दिशा में गति आई।

द्विवेदी-युगीन प्राचीन कवि अपने चारों ओर एक व्यापक षड्यंत्र का अनुभव करता रहा, जगह-जगह देश की जनता को सावधान करता रहा। समाज में व्याप्त कुरिवाजों के परिष्कार का प्रयत्न करता रहा। गुप्तजी में गांधी युग की समस्त मूल प्रवृत्तियाँ, राष्ट्रीय, सामाजिक और राजनीतिक आंदोलन पूर्णता से प्रतिफलित हुआ है। द्विवेदी युग की प्रमुख समस्या में दीन-दुखी, अशिक्षित, भूखे-नंगे, मजदूर और कृषक वर्ग को आलंबन बनाकर राजनीतिक और आर्थिक शोषण को अभिव्यक्ति दी गई है।

द्विवेदी युगीन कवि विषय-प्रधान कविताओं एवं बाह्य जगत के चित्रण में इतना व्यस्त रहा कि उसे अपनी वैयक्तिक चेतना को अभिव्यक्ति देने का अवसर ही न मिला, इसी अंतर्मुखी प्रवृत्ति की ओर संकेत करते हुए डॉ. नगेन्द्र कहते हैं कि - ''युग की उद्‌बुद्ध चेतना ने बाह्य अभिव्यक्ति से निराश होकर जो आत्मबद्ध अंतर्मुखी साधना आरंभ की, वह काव्य में छायावाद के नवीन अंत:सौंदर्य से प्रेरित कला-बोध के दीप-दान पर चतुर्दिक नवीन जीवन सौंदर्य की संकल्पना दी है। छायावाद भव्यार्थ में ऐसी काव्य प्रवृत्ति कही जा सकती है जिसने भाव और विचार के सत्य को रमणीय शिल्प के सुंदरम् में ढालने का सफल, भावमय प्रयास किया, जो युगीन चेतना की पुकार थी और साथ ही विकासोन्मुख कविता का सोपान थी। छायावादी काव्य चेतना जहाँ भाव और विचार के सत्य और शिल्प के सुंदरम् से मण्डित थी, वहीं लोकमंगल के शिवम् से भी अनुप्राणित थी। छायावाद के प्रवर्तक के विषय में आलोचक गण एकमत नहीं हैं। कोई मुकुटधर पाण्डेय को मानते हैं, तो कोई मैथिलीशरण गुप्तको। कोई प्रसाद, पंत और निराला को, कोई माखनलाल चतुर्वेदी को भी प्रवर्तक मानते हैं।

प्रगतिवाद सामाजिक चेतना का प्रतिनिधि काव्य है। इसका जन्म छायावादी प्रवृत्तियों की प्रतिक्रिया में होता है। छायावाद के लोकहितैषी तत्वों को बीज रूप में ग्रहण करके ही यह काव्य-धारणा पनपी है, प्रगतिवादियों के अनुसार साहित्य भी वैयक्तिक संपत्ति नहीं सामूहिक पूँजी है तथा विद्रोह का स्वर बड़ी तीव्रता से मुखर है। प्रगतीवाद ने सौंदर्य को नवीन रूप दिया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के कुछ समय पूर्व हिंदी काव्यधारा के विकास में एक परिवर्तन हुआ। इस परिवर्तन का आविर्भाव सन १९४३ में अज्ञेय द्वारा संपादित 'तार सप्तक' से हुआ जिसे 'प्रयोगवाद' नाम दिया गया। इसमें कविता को प्रयोग का विषय माना गया तथा शिल्प और विषय में नए परिवर्तन किए गए।

नयी कविता प्रयोगवाद की विकसित और परिवर्तित स्थिति है। 'दूसरा सप्तक' के उपरांत की कविता को नयी कविता नाम दिया गया। नयी कविता के परिचय के पहले 'नकेनवाद' काव्य-धारा महत्त्व रखती है। 'तीसरा सप्तक' में प्रयोगवादी काव्यधारा को 'नई कविता' नाम दिया है। नयी कविता के समानांतर साठोत्तरी कविता या अ-कविता, प्रतिबद्ध कविता, सहज कविता, वीर कविता, विचार कविता तथा नवगीत आदि कई काव्यधाराएँ प्रचलित तथा विकसित हुई।

१.३ रचना-परिचय

नरेश मेहता की कविताएँ संकलित रूप में 'दूसरा सप्तक' सन १९५१ के प्रकाशन से प्राप्त होती हैं। उसके बाद से जो भी उनके काव्य-संग्रह स्वतंत्र रूप से प्रकाशित हुए हैं, उनका संक्षिप्त परिचय निम्नवत है -

१) बनपाखी सुनो (१९५७) –

यह नरेश मेहता का स्वतंत्र रूप से प्रकाशित काव्य-संग्रह है, इसमें २७ कविताएँ हैं। इसमें अधिकांश कविताएँ प्रकृति चित्रण से संबंधित हैं।

२) बोलने दो चीड़ को (१९६२) –

इस संकलन में भी कवि की मूल-भूमि प्रकृति प्रेमी की ही है, किंतु प्रकृति के अतिरिक्त सामाजिक धरातल पर लिखी गई कविताओं की भी प्रचुरता हैं। इसमें २७ कविताएँ हैं।

३) मेरा समर्पित एकांत (१९६२) –

' मेरा समर्पित एकांत' कवि नरेश मेहता के काव्य विकास का तीसरा आयाम है जो दो खण्डों में विभक्त है। प्रथम खण्ड में १९ कविताएँ और दूसरे खण्ड में 'समय देवता' नामक लंबी कविता है।

४) उत्सवा (१९७९) –

'उत्सवा' पूर्णतः प्रकृतिपरक काव्य-संग्रह है। इस संग्रह में ३५ कविताएँ हैं। कवि की काव्यभूमि वैष्णव है, उन पर उपनिषद चिंतन का भाव है, 'उत्सवा' में उनका प्रकृति से अद्वैत तादात्म्य दिखाई देता है।

५) तुम मेरा कौन हो (१९८२) –

प्रस्तुत संकलन में कवि की ५२ कविताएँ संकलित हैं। जिन्हें कवि ने 'वैयक्तिक वैष्णवता की कविताएँ' की संज्ञा से अभिहित किया है। अपने इस नवीन भावफलक का तादात्म्य अपनी पूर्व चेतना से संपूर्णता में स्थापित करता है।

६) अरण्या (१९८५) –

प्रस्तुत संकलन में ३३ रचनाएँ हैं। 'अरण्या' सन १९८९ में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित काव्य संग्रह है। कवि ने इसमें काव्य को समस्त जैविकता का संस्कार करने वाला वैचारिक माध्यम बताया है।

७) आखिर समुद्र से तात्पर्य (१९८८) –

नरेश मेहता के रचनात्मक विकास को रेखांकित करती ५१ कविताओं का संकलन 'आखिर समुद्र से तात्पर्य' है। इस संकलन की सभी कविताओं में कविता चिंतन, सौंदर्य चेतना और शिल्पगत नाविन्य आकर्षण का केंद्र है।

८) पिछले दिनों नंगे पैरों (१९८९) –

प्रस्तुत काव्यसंग्रह 'राग मन ले', 'खून टपकाते', 'इतिहास से निरपेक्ष' तथा 'काव्य की' चार खण्डों में विभाजित है।

९) देखना, एक दिन (१९९०) –

यह नरेश मेहता अपने काव्य संकलन 'देखना, एक दिन' में धरती के बहुत निकट आ गये हैं। यद्यपि इसे वे नकारते हैं।

१०) चैत्या (१९९३) –

नरेश मेहता के दस काव्य संग्रहों से चयन की गई उनकी प्रतिनिधि कविताओं का संकलन है।

११) समिधा (दो खण्डों में) (२०००) –

यह नरेश मेहता की संपूर्ण कविताओं का संकलन है जो लोकभारती से दो खण्डों में प्रकाशित हुआ है।

★ **खण्ड काव्य –**

१) संशय की एक रात (१९६७) –

'संशय की एक रात' मुक्त छंद शैली में लिखा गया एक खण्ड काव्य है। जिसका कथानक अत्यंत संक्षिप्त है। इसका आधार रामकथा है ।

२) महाप्रस्थान (१९७५) –

'संशय की एक रात' के पश्चात कवि रचित महाभारत के महाप्रस्थानिक पर्व पर आधारित खण्ड काव्य 'महाप्रस्थान' आता है। यह खण्ड काव्य अयात्रा पर्व, स्वाहा पर्व और स्वर्ग पर्व तीन खण्डों में विभाजित है।

३) प्रवाद-पर्व (१९७७) –

'प्रवाद पर्व' में नरेश मेहता ने शक्ति और प्रशासन या लोकतंत्र बनाम राजतंत्र की समस्या पर प्रश्न चिह्न लगाया है। यह पाँच सर्गों में विभाजित है।

४) शबरी (१९७९) –

श्री नरेश मेहता का 'शबरी' अत्याधुनिक खण्ड काव्य है। इसमें वर्ण व्यवस्था के प्रश्न को उठाया गया है। इसका समाधान कवि ने नवीन संदर्भों में किया है। 'शबरी' पाँच खण्डों में विभाजित है।

५) प्रार्थना पुरुष (१९८५) –

प्रस्तुत खण्ड काव्य गाँधी गाथा वस्तुतः एक इतिवृत्तात्मक लघुकृति है तथा आधुनिक हिन्दी काव्य के नए रुप को रेखांकित करती है। इसके साथ ही इसमें इसकी सृजनात्मकता भी छांदिक सरलता भी है ।

★ **कथा-साहित्य –**

उपन्यास

१) डूबते मस्तूल (१९५४) –

इस उपन्यास की कालावधि १७-१८ घण्टों तक सीमित है। इस उपन्यास का आरंभ दिन के साढ़े बारह की सूचना के साथ होता है तथा अंत दूसरे दिन की प्रत्यूष बेला के साथ।

२) यह पथ बंधु था (१९६२) –

यह स्वतंत्रता के पूर्व की राजनीतिक, सामाजिक घटनाओं की पृष्ठभूमि में लिखा गया है तथा सामान्य व्यक्ति की स्वप्निल चेतना के खण्डित होने की मार्मिक गाथा प्रस्तुत करता है।

३) धूमकेतु एक श्रुति (१९६३) –

यह उपन्यास नरेश मेहता के जीवन अनुभव पर आधारित है। बालक उदयनकी स्मृतियों को खण्ड-खण्डकर इस उपन्यास में प्रस्तुत किया गया है।

४) दो एकांत (१९६४) –

इस उपन्यास में लेखक ने विवेक और बानीरा के माध्यम से आज के तनावपूर्ण दांपत्य का चित्रण किया है।

५) नदी यशस्वी है (१९६७) –

यह उपन्यास 'धुमकेतु एक श्रुति' का दूसरा खण्ड है; जिसमें किशोर उदयन को चित्रित किया गया है।

६) उत्तर कथा (प्रथम खण्ड) (१९७९) –

यह उपन्यास नौ उपशीर्षकों में विभाजित कर प्रस्तुत किया गया है।

७) उत्तर कथा (द्वितीय खण्ड) (१९८२) –

इस उपन्यास में वही पात्र हैं जो 'उत्तरकथा खण्ड एक में थे। यहाँ परिवर्तन की प्रक्रिया काफी तीव्र होने से जीवन की गतिमयता के कारण कुछ नये संबंध जुड़ते हैं।

★ **नाट्यसाहित्य –**

१) सुबह के घण्टे (१९५५)

इस नाटक में परतंत्र एवं स्वतंत्र भारत की राजनीति का मूर्त रूप चित्रित किया गया है।

२) खण्डित यात्राएँ (१९६२)

इस नाटक में कथा सामंत वर्ग की है, जो नाटक के तीन अंकों में विभाजित है।

३) पिछली रात की बरफ (१९६२) (एकांकी)

यह नरेश मेहता के रेडियो नाटकों का संग्रह है।

४) सनोवर के फूल (१९६२) (एकांकी संकलन)

प्रस्तुत एकांकी संग्रह में छः एकांकी संकलित हैं जो 'मोह-मोक्ष गोपा' गौतम बुद्ध के निर्वाण पर आधारित हैं।

कहानी साहित्य –

१) तथापि (१९६२)

इसमें कुल आठ कहानियाँ हैं। 'चाँदनी', 'किसका बेटा', 'दुर्गा', 'वह मर्द थी', 'तिष्यरक्षिता की डायरी', 'दूसरे की पत्नी के पत्र एवं 'तथापि' आदि।

एक समर्पित महिला (१९६८) –

इसमें 'एक समर्पित महिला', वर्षा भीगी', 'श्रीमती मास्टर', 'एक शीर्षकहीन स्थिति', 'अनबीता व्यतीत' आदि शीर्षकों से छः कहानियों को स्थान प्राप्त हुआ है।

निबंध –

काव्य का वैष्णव व्यक्तित्व (१९७२) –

'काव्य का वैष्णव व्यक्तित्व' में काव्य की उत्पत्ति, काव्य तथा धर्म का संबंध, भाषा में शब्द शक्तियों का महत्व तथा भाषा के संस्कार की आवश्यकता, पुराणों का प्रयोजन, वैष्णवता आदि विषयों पर प्रकाश डाला है।

काव्यात्मकता का दिक्-काल (१९९१) –

इसमें मेहता जी ने काव्य से संबंधित विभिन्न प्रश्नों पर प्रकाश डाला है।

★ **यात्रा वृत्तांत –**

१) राम पलाश के फूल सिया कचनार कली (१९९१)

यह यात्रा-वृत्तांत साप्ताहिक हिंदुस्तान में दो अंकों में प्रकाशित हुआ था।

२) साधु न चले जमात (१९९१)

सामान्य यात्रा-संस्मरणों से सर्वथा भिन्न ये यात्रावृत्त कवि-लेखक के चिंतन, गहन अध्ययन और सम्यक् जीवन दृष्टि को उजागर करते हैं।

★ **संपादन –**

१) वाग्देवी प्रतिनिधि काव्य संकलन (१९७२)

प्रस्तुत संकलन को मेहताजी ने चार विभागों में विभाजित किया है - परा, पश्यन्ती, मध्यमा तथा वैखरी।

२) विचारात्मक लेख

नरेशजी ने मुक्तिबोध : एक अवधूत कविता, शब्द पुरुष-अज्ञेय और हिंदी कविता का वैयक्तिक परिप्रेक्ष्य जैसे चिंतनात्मक लेख भी लिखे हैं।

नरेश मेहता के अब तक के प्रकाशित काव्य के आधार पर यही कहा जा सकता है कि वे कवि से चिंता की ओर निकल आये हैं, भाव से विचार का स्पर्श करने लगे हैं और निजत्व से निकलकर परत्व की भूमिका पर आ खड़े हुए हैं।

१.४ टिप्पणी

(क) कवि नरेश मेहता की रचनाओं का परिचय दीजिए ।

(ख) कवि नरेश मेहता के युग की परिस्थितियों का परिचय दीजिए ।

१.५ प्रश्न

संभावित प्रश्न इकाई पाँच के अंत में दिए गए हैं ।

□□□□□

२

संशय की एक रात

सारांश

इकाई की रूपरेखा –

२.० उद्देश्य
२.१ प्रस्तावना
२.२ सारांश
२.३ प्रश्न

२.० उद्देश्य

१) इस इकाई का उद्देश्य है कि विद्यार्थी पूरी रचना से परिचित हो जाएँ ।

२) इससे विद्यार्थियों में पुस्तक को समझने का आधार तैयार होगा ।

३) विद्यार्थी रचना की वस्तुयोजना को समझ पाएँगे ।

२.१ प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में 'संशयकी एक रात' का सारांश प्रस्तुत किया गया है, जिससे विद्यार्थियों में रचना को पढ़ने तथा समझने मार्ग प्रशस्त होगा । इसे पढ़कर विद्यार्थी प्रश्नों के उत्तर लिखने में सुविधा महसूस करेंगे ।

२.२ सारांश

'संशय की एक रात' श्री नरेश मेहता द्वारा प्रणीत नाट्य शैली में लिखा गया राम-काव्य परंपरा में अति अधुनातन स्वरूप का खण्डकाव्य है। कवि ने पौराणिक आख्यान के सहारे समकालीन परिवेश में आधुनिक बोध को स्पष्ट किया है। 'संशय की एक रात' चार सर्गों में विभाजित है। इसका मूल आधार रामायण का एक कथाअंश है। कवि ने इसमें राम-कथा को एक नई दृष्टि से उभारा है जिसमें राम भारतीय संस्कृति के मेरुदण्ड बन चुके है, कवि के समक्ष वे एक नई चिंता के साथ अवतरित होते हैं। वह युद्ध करें या ना करें के द्वंद्व से ग्रस्त हैं।

प्रथम सर्ग में राम युद्ध और शांति के अंतर्द्वंद्व से संत्रस्त समुद्र तट पर टहलते हुए दिखाई देते हैं। रेत पर अंकित राम के पद्चिह्नों को देखकर लक्ष्मण को उनके हृदय की चिंताओं

का आभास मिलता है। राम का मन युद्ध की विभीषिका को सोचकर युद्ध के प्रति वितृष्णा से भर उठता है और वे युद्ध न करने का संकल्प कर लेते हैं।

द्वितीय सर्ग में राम फिर युद्ध विषयक चिंता में लीन हैं। राम को पुलकी मीनार के पीछे एक छाया घूमती हुई दिखाई देती है और उसके साथ में एक पक्षी फड़फड़ाता हुआ दिखाई देता है। दोनों छायाएँ राम को एकांत में ले जाकर अपना परिचय देती हैं कि वह दशरथ और जटायु की आत्मायें हैं। दशरथी छाया राम के हृदय में उत्पन्न संशय का निराकरण करती हुई कहती है –

''कीर्ति, यश, नारी, धरा,
जय, लक्ष्मी
ये नहीं है कृपा
या अनुदान।
मेरे पुत्र
भिक्षा से नहीं
वर्चस्व से
अर्जित हुए हैं आज तक।''

राम को ये छायाएँ युद्ध करने की प्रेरणा देती हैं। राम जो युद्ध नहीं चाहते, वे अनेक संवादों के बाद युद्ध के लिए तत्पर हो जाते हैं क्योंकि उनका संशयी व्यक्तित्व यह सुनता है –

''तुम्हें लड़ना युद्ध
अपने से नहीं
अनास्था से नहीं
संशयी व्यक्तित्व से भी नहीं
असत्य से।''

तृतीय सर्ग में जब लक्ष्मण, हनुमान, विभीषण तथा जाम्बवन्त युद्ध करने के लिए अपने-अपने तर्क देते हैं तब युद्ध की निश्चिंतता का संकेत मिल जाता है। राम युद्ध को अनिवार्य रूप से स्वीकार कर लेते हैं किंतु उन्हें चिंता इस बात की भी है कि युद्ध के बाद भी क्या शांति स्थापित हो सकेगी? संपूर्ण काव्य का यही कथानक है।

चतुर्थ सर्ग में सवेरा होते-ही राम युद्ध संबंधी सामूहिक निर्णय को स्वीकार कर लेते हैं और उनका संशयी व्यक्तित्व यह कह उठता है कि बड़े ही विवश भाव से हमने युद्ध के निर्णय को स्वीकार किया है —

''ओ मेरे विवेक,
मुझसे प्रश्न मत करो,
प्रश्नों की बेला अब नहीं रही,
अब मैं केवल प्रतीक्षा हूँ,
कवचित कर्म हूँ,
प्रतिश्रुत युद्ध हूँ,

निर्णय हूँ सबका,
सब के लिए।''

वस्तुतः राम काव्य में यह सूक्ष्म संदर्भ घटनाहीन ही था किंतु कवि ने इसको जिस मनौवैज्ञानिकता और आधुनिक बोधवत्ता के साथ प्रस्तुत किया है उससे स्पर्शित होकर यह प्रसंग महत्वपूर्ण बन गया है।

चीन आक्रमण के समय इस प्रबंध काव्य की रचना हुई। उस समय का जनमानस अन्याय के विरुद्ध लड़ाई के लिए प्रस्तुत था। आज मानवीय परिस्थितियाँ इतनी जटिल हो गई हैं कि मानव प्रतिक्षण समस्याओं के सूत्र में उलझा हुआ है। एक विचारशील मानव के लिए उन समस्याओं को सुलझाना अत्यंत कठिन है। आज उसका कोई भी निर्णय उसकी नियति को प्रभावित करने वाला अपना नहीं है। 'संशय की एक रात' में सीता, राम की व्यक्तिगत समस्या है जिसके लिए राम भीषण नरसंहार नहीं करना चाहते –

''युद्ध नहीं होगा
क्योंकि सीता का हरण
राम की व्यक्तिगत समस्या है।''

इतिहास की इस शक्ति को राम अपने व्यक्तिगत विवेक के लिए चुनौती के रूप में देखते हैं। हनुमान मानव मुक्ति की दिशा में बहाने वाले इतिहास का शक्तिशाली प्रवाह हैं –

''रावण अशोक वन की सीता
हम साधारण जन की अपहृत स्वतंत्रता।''

राम इतिहास के इस प्रवाह के प्रति शंकित और आतंकित हैं –

''फिर संघर्ष
फिर संहार
इस ऐतिहासिक विषमता का
कौन-सा प्रतिकार?
इस चक्र का कोई नहीं हैं अंत।''

मनुष्य इतिहास के लिए जिम्मेदार नहीं है। दो क्षणों के बीच में इतना अंतराल होता है कि उसमें ही असंख्य महान् घटनाएँ घटित हो जाती हैं। ऐसी स्थिति में राम का (मनुष्य का) अधिकार कर्म करना है, इतिहास के फलाफल की चिंता का नहीं। राम इस संदेश से प्रभावित होते हैं। इसी समय हनुमान और लक्ष्मण भी ऐसे तर्क प्रस्तुत करते हैं कि राम का संशय निर्णय में बदल जाता है। राम अब तक इस युद्ध को नैतिकता की दृष्टि से आंक रहे थे किंतु वानरों में महान समुद्र बाँधने की शक्ति का उन्मेष देखकर उन्हें निश्चय हो गया है कि यह उनका व्यक्तिगत युद्ध नहीं है, सार्वजनिक युद्ध है। अंतिम प्रेरणा लक्ष्मण की इस सूचना से मिलती है कि सेतु बँध चुका है और सेना प्रयाण के लिए प्रस्तुत है तथा संकल्प कर चुकी है। स्वयं यह तैयारी युद्ध को सार्वजनिक भूमिका प्रदान कर देती है। इसी से राम का संशय निर्णय का रूप धारण कर लेता है।

'संशय की एक रात' में समसामायिक युग के संघर्षशील व्यक्ति का चित्र प्रस्तुत हुआ है और अपनी बौद्धिक चेतना के द्वारा कवि ने उसकी मन:स्थितियों की आज के युग-संदर्भ में व्याख्या की है। आज का जागरूक व्यक्ति इस खण्डकाव्य के नायक 'राम' के समान अपने किसी भी निर्णय को अंतिम सत्य के रूप में स्वीकार नहीं करता। संशय की यह स्थिति ही व्यक्ति को स्वतंत्र चिंतन का आधार प्रदान करती है और राम व्यक्ति का प्रतिरूप दिखाई देते हैं जो कोई भी काम करने से पहले बार-बार सोचते हैं कि उसे करूँ अथवा नहीं। उसमें कितना औचित्य है और उसके दूरगामी परिणाम क्या होंगे –

''युद्ध के उपरांत होगी शांति,
उपलब्धियों की सिद्धि
इस मिथ्यात्व से
इस मरीचिका से
मुक्ति दो।

प्रस्तुत खण्ड में राम और विभीषण खण्डित व्यक्तित्व के प्रतीक बनकर आये हैं। राम का संशयात्मक व्यक्तित्व उनके खण्डित व्यक्तित्व को दर्शाता है। वे सोचते हैं कि अब परिताप और पश्चाताप के सिवा कुछ नहीं है। जानते हुए भी उन्होंने स्वर्ण मृगका पीछा किया, वे अपना पथ क्यों भूल गये? राजा जनक क्या सोचते होंगे मेरे विषय में? स्वयं सीता क्या सोचती होगी कि राम का वरण क्या मैंने इन्हीं परिणामों के लिए किया था? राम के व्यक्तित्व को ये बातें, ये परिताप बराबर खण्डित करते हैं, राम नियति के हाथों विवश हैं। नरेश मेहता के राम परंपरागत राम के रूप से भिन्न हैं जो आज के खण्डित और विभाजित व्यक्तित्व का प्रतिनिधित्व करते हैं।

राम का चिंतन आदर्शवादी है फिर भी राम स्वयं को विवश और असमर्थ पाते हैं, ऐसी स्थिति में वह सीता और साम्राज्य को भी नहीं चाहते। जबकि सीता को पाने के लिए उन्होंने धनुष तोड़ा, इतने बड़े-बड़े सम्राटों का सर समय पर नीचा किया लेकिन आज अपने आदर्श के लिए उन्हें सीता नहीं चाहिए –

''बाण बिद्ध पाखी सा विवश
साम्राज्य नहीं चाहिए
मानव के रक्त पर पग धरती आती
सीता भी नहीं चाहिए
सीता भी नहीं।''

युद्ध के प्रति विरक्ति का परिणाम यह होता है कि उनके मन में संसार के प्रति भी विरक्ति उत्पन्न हो उठती है। यहाँ तक कि उस क्षण राम अपने अस्तित्व को भी विस्मरण कर देना चाहते हैं। वे कहते हैं –

''इतिहास के हाथों
बाण बनने से अधिक अच्छा है
अंधेरों में - यात्रा करते हुए
खो जाय।

आधुनिक युग चिंतन का युग है। मनुष्य दोहरी स्थिति में जी रहा है। उसके भीतर दूसरा अप्रामाणिक व्यक्ति जन्म ले चुका है। ऐसी स्थिति में वह किसे सत्य माने, किसे असत्य? किसे निरर्थक स्वीकारे, किसे सार्थक! उसके समक्ष एक द्वंद्वात्मक स्थिति है। यही स्थिति प्रस्तुत काव्य में राम की भी हैं। जिस समय दशरथी छाया राम से कहती है कि तुम्हें मात्र असत्य से युद्ध करना है, तत्काल राम कह देते हैं –

''लेकिन कौन सा?
किसका असत्य है?
इस सत्यासत्य का
निर्णय करेगा कौन?''

ठीक ऐसी ही स्थिति विभीषण की भी है, एक ओर वह अत्याचार तथा अन्याय का समर्थन नहीं करना चाहता किंतु दूसरी ओर उसके मन में यह द्वंद्व है कि भावी पीढ़ी हमें क्या संबोधन देगी। वह राम से कहता है –

''जब हमारे तर्क मर जायेंगे
तब
हमें क्या कहकर पुकारा जाएगा?
राष्ट्र संकट के समय
मैं आक्रमण के साथ था
राज्य पाने के लिए?

राम विभीषण दोनों में द्वंद्व है, जो आज हरेक व्यक्ति में है। ऐसी स्थिति में कवि ने इसका समाधान भी खोजा है। राम के द्वंद्व को कवि सामूहिक नियति के विकल्प में बदल देता है और राम निस्संग होकर कह देते हैं –

''अब मैं निर्णय हूँ
सब का
अपना नहीं
क्योंकि अब मैं निर्णय हूँ
व्यक्ति नहीं।

अंत में यह कहा जा सकता है कि 'संशय की एक रात' नरेश मेहता की एक ऐसी कृति है जिसमें राम के माध्यम से आज के संशय ग्रस्त व्यक्तित्व को निरुपित किया गया है। कवि ने समकालीन परिवेश में संपादित विभिन्न मानस, टूटती मान्यताएँ, भविष्य का सूर्योदयी विश्वास और नये मूल्यों की स्थापना के लिए नयी कविता को महत्वपूर्ण आयाम प्रदान किये हैं। महामानव को मानवीय स्तर पर उतारकर 'कर्म मानव जीवन का उच्चतम मूल्य है' को सार्थकता प्रदान की है।

२.३ प्रश्न

संभावित प्रश्न इकाई पाँच के अंत में दिए गए हैं ।

□□□□□

३

संशय की एक रात

चरित्र सृष्टि

इकाई की रूपरेखा –

३.० उद्देश्य

३.१ प्रस्तावना

३.२ चरित्र सृष्टि

- ३.२.१ राम
- ३.२.२ लक्ष्मण
- ३.२.३ बिभीषण
- ३.२.४ हनुमान
- ३.२.५ अन्यपात्र

३.३ प्रश्न

३.० उद्देश्य

१) प्रस्तुत इकाई का उद्देश्य है कि एस.वाय.बी.ए. के विद्यार्थी अपनी पाठ्पुस्तक 'संशय की एक रात' के पात्रों का परिचय प्राप्त कर सकें ।

३.१ प्रस्तावना

इस इकाई में 'संशय की एक रात' के पात्रों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है, जिससे विद्यार्थी कवि की पात्रयोजना को समझकर पूछे गए प्रश्नों का उत्तर लिख सकें ।

३.२ चरित्र-सृष्टि

३.२.१ राम –

'संशय की एक रात' खण्डकाव्य के प्रमुख पात्र राम है। इस खण्डकाव्य में राम का व्यक्तित्व प्रश्नाकुल स्थिति और विकल्प से प्रकट संकट से लिप्त है। राम का मानस 'क्या हो', 'क्या न हो' के निर्णय-अनिर्णय में उलझाता हुआ है। उनकी थकी मुद्रियों के माध्यम से कवि ने आधुनिक मानव की मन:स्थिति में उन्हें आज के व्यक्तित्व के समान ही इतना अवसादग्रस्त बना

दिया है कि वे स्वयं को ज्वारों से घिरे, छोटे द्वीप-सा विवश पाते हैं। उनके मन में विवशता, पराजय और संकट का क्षण गहराता जा रहा है।

द्वंद्व ग्रासित विवश राम आधुनिक मानव के प्रतीक (Icon) बन गए हैं। उनका संशय उनकी भीतरी आस्था को दोनों छोरों से खींचता हुआ विभाजित-सा कर रहा है, क्योंकि राम का यह संशय संकट अकेले इन्हीं का नहीं बल्कि वर्तमान में व्यक्ति का द्वंद्वग्रस्त व्यक्तित्व है जिसे कवि नरेश मेहता ने राम के संशय के माध्यम से व्यक्त किया है। उनके मन में प्रश्न उठता है कि अपनी व्यक्तिगत समस्या 'सीता मुक्ति' के लिए युद्ध करें या न करें। इसका निर्णय वे नहीं कर पा रहे हैं। लोकमंगलवादी राम अपने व्यक्तिगत लाभ के लिए नर-संहार नहीं करवाना चाहते। वे शांति की स्थापना कराना चाहते हैं। इस शांति-विषयक नई निष्ठा का आविर्भाव उनके मानस में है। लेकिन युद्ध विषयक नई निष्ठा के बार-बार उभारने से इसकी उपादेयता प्रमाणित नहीं हो पा रही है।

राम सत्य चाहते हैं। युद्ध या खड्ग से नहीं, बल्कि मानव का मानव से सत्य। क्योंकि इस बात का कोई विश्वास नहीं है कि युद्ध के उपरांत शांति स्थापित हो जायेगी या वह युद्ध अनागत युद्धों का कारण नहीं बनेगा। अथवा संघर्ष-संहाररूपी यह चक्र इसके बाद हमेशा के लिए स्थिर हो जाएगा, तथा इस ऐतिहासिक विषमता का सदैव के लिए प्रतिकार हो जाएगा। वे 'युद्ध करें, या न करें' में से किसी एक निर्णय को स्वीकार नहीं कर पा रहे हैं। वे संशय में पडे हैं। संशयग्रस्त राम को विवशता वश अपने व्यक्तिगत निर्णय को सामूहिक निर्णय में बदलना पडता है। इसकी निराशपूर्ण अभिव्यक्ति राम के निम्न शब्दों में प्रस्तुत होती है –

''अब मैं निर्णय हूँ
सबका,
अपना नहीं।
कैसी विडम्बना
मेरा चिंतन खड्ग करेगा
और आचरण युद्ध बनेगा।

राम का व्यक्तित्व खण्डित हो चुका है। उनके द्वारा लिखा गया निर्णय 'अर्धव्यक्ति' का 'अर्धसत्य' मात्र है। वे अपना व्यक्तित्व पृथक रखना चाहते हैं, किंतु इतिहास के हाथो 'व्यक्ति नहीं, शस्त्र' ही बनने के लिए विवश बाधित है। क्योंकि व्यक्ति समाज के आगे नगण्य है, अतः उसका व्यक्तिगत निर्णय-अनिर्णय भी सामाजिक निर्णय के आगे महत्वहीन हो जाता है। राम के निर्णय के ऊपर भी यही निर्णय लागू होता है और अंत में उन्हें विवश हो सामाजिक निर्णय को अपना कह स्वीकार करना पड़ता है। इस प्रकार प्रस्तुत काव्य-कृति में राम का संशयवाद तथा आस्थाओं का विभाजन आधुनिक मनुष्य के आध्यात्मिक संकट का ही प्रतिध्वनन करता है।

३.२.२. लक्ष्मण –

लक्ष्मण राम के अनुज है। 'संशय की एक रात' में राम को संशयग्रासित तथा बार-बार परिताप-अनुताप करते हुए देख चिंतित होते हैं। वे राम की चिंता तथा संशय को समाप्त करने के लिए प्रयत्नशील हैं इसलिए वे राम के पीछे छाया से लगे हुए 'कारण' को खोजने का प्रयास करते हैं। वे राम की उस चिंता का 'कारण' तथा 'प्रयोजन' पूछते हैं। वे अपने संकल्पित प्रज्ञा,

वर्चस्वी निष्ठा उत्सर्गित इच्छा तथा अपने पौरुष का विश्वास दिलाते हुए यह स्पष्ट करते है कि वे कर्म की चुनौती को स्वीकार करने से पीछे नहीं हटेंगे। सीता हरण को अपनी व्यक्तिगत समस्या मानकर राम द्वारा युद्ध न करने के निर्णय से लक्ष्मण खिन्न एवं दुखी हो गए हैं। वे राम की इस मनःस्थिति की जानकारी हनुमान, सुग्रीव, विभीषण आदि को भी देते हैं।

युद्ध परिषद में सभी लक्ष्मण के मत का समर्थन करते हैं । अंत में सामूहिक निर्णय को स्वीकार कर राम युद्ध के अभियान का जो संकल्प करते हैं, निश्चय ही उसमें लक्ष्मण की मुख्य भूमिका है, लक्ष्मण के अंदर संयम की कमी है। वे तुरंत उद्वेलित हो जाते हैं।

३.२.३ विभीषण –

विभीषण लंका के भावी सम्राट है। राम युद्ध के संबंध में जब उनकी यंत्रणा जानना चाहते हैं, तब इसके उत्तर में वे युद्ध को एक दर्शन तथा स्वत्व और अधिकार अर्जन करने का अंतिम मार्ग बतलाते हैं और सभी युद्ध को किसी युग के लिए अंतिम सत्य की संज्ञा देते हैं वे अपने राष्ट्र पर आक्रमण के समय आक्रमण का साथ देने की बात से चिंतित हैं क्योंकि इसका कोई विश्वास नहीं कि इस युद्ध में विजयी पक्ष उसी बात का उसी कार्य अथवा क्रियाओं को नहीं दुहराएगा जो रावण ने किया है। उन्हें अपने सामने अपने राष्ट्र का अनागत धू-धू कर जलता दिखाई पड़ रहा है। उन्हें ऐसा लगता है जैसे उनका राष्ट्र कल इस युद्ध में रौंद डाला जायेगा। वे यह निश्चित नहीं कर पा रहे हैं कि अपने देश की दुर्दशा का कौन कारण है। वे स्वयं अथवा सम्राट रावण।

वर्तमान स्थिति में अपनाए जानेवाले पहलू को लेकर वे संशयग्रस्त हैं। 'क्या युद्ध हमारे सारे शुभाशुभ कर्म की नियति है' का प्रश्न उनके मानव को उद्विग्न बनाए हुए हैं। अपने ही राष्ट्र के विरुद्ध वे आक्रमक का साथ देंगे तो भावी इतिहास उन्हें राज्यलोभी तथा देशद्रोही ही ठहराएगा तथा राम का साथ न देने पर वे असत्य का साथ देने वाले माने जायेंगे। इन दोनों उलझनों के बीच वे अनिश्चय की स्थिति में पड़ गए हैं फिर भी वे राम को युद्ध से विरत नहीं करते क्योंकि वे मानते हैं कि –

अच्छा हो, इतने संशय परांत,
कोई भी काम किया जाय, चाहे
संप्रति वह युद्ध ही हो।
यह काम ही होगा

३.२.४ हनुमान –

प्रस्तुत काव्य में हनुमान राम की युद्ध परिषद की बैठक में भाग लेने वाले एक वीर सामंत के रूप में उपस्थित होते हैं। सीता हरण तथा रघुकुल के सारे दुःखों का कारण अपने को मानने वाले राम की पारिताप्रित वाणी सुनकर दुखी लक्ष्मण जब अपनी व्यथा हनुमान से कहते हैं तब हनुमान तर्क प्रस्तुत करते हैं कि राम जो कुछ भी कह या समझ रहे हैं वह सब कुछ उस समय संभव होता जब यह वास्तव में राम की ही व्यक्तिगत समस्या होती। ये कोटि-कोटि साधारण जन सीता हरण की अब राम की व्यक्तिगत समस्या नहीं अपितु अन्यायी रावण द्वारा समाज पर किया गया अत्याचार मानते हैं। वह कौन-सी शक्ति, वह कौन सा तेज तथा कौन सा मंत्र है जिसके कारण इन बौनों में अभूतपूर्व साहस एवं शक्ति का संचार हो गया है। इन साधारण

जनों को विश्वास है कि मानव इतिहास का नवनिर्माण राम ही कर सकते हैं। इसलिए साधारण व्यक्ति राम के महान ऐतिहासिक व्यक्तित्व में अपनी लघुसत्ताओं को मिला लेने के लिए आतुर हो रहे हैं। हनुमान यह भी स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि सीता माता चाहे किसी की पत्नी, बेटी अथवा बहू ही क्यों न हो, किंतु वास्तव में वह हम साधारण जनों की छीनी हुई स्वतंत्रता का प्रतीक है। अतः रावण के बंधन से सीता की मुक्ति हम सबके लिए पराधीनता की मुक्ति है। सीमा उद्धार की समस्या राम की व्यक्तिगत समस्या नहीं बल्कि समस्त पीड़ित मानव समाज की सामूहिक समस्या है।

इन विचारों को सुनने के बाद भी राम को लगता है कि आवश्यक नहीं कि इस युद्ध के पश्चात् शांति स्थापित हो जाय अथवा यह युद्ध अनागत युद्ध का कारण न बने। तब राम को आश्वस्त करते हुए हनुमान कहते हैं,

हम केवल घटना हैं,
इतिहास नहीं।

हो सकता है हमारे ही कारण अनागत युद्धों की नींव पड़े। तो क्या इस डर से न्याय और अधिकार छोड़ दिया जायेगा। नहीं ऐसा नहीं किया जा सकता है, क्योंकि उन्हें इसका पूर्ण विश्वास है कि...

समय ही करेगा प्रतिकार,
हर बार,
अनुचित का।

अतः वर्तमान के प्रति समर्पित हनुमान, न्याय तथा अधिकार की रक्षा हेतु युद्ध को आवश्यक मानते हुए राम से अभिमान की आज्ञा माँगते हैं।

३.२.५ अन्यपात्र –

'सुग्रीव' तृतीय सर्ग में, युद्ध परिषद में राम को मंत्रणा देने वाले एक सामंत के रूप में प्रस्तुत होते हैं। राम युद्ध को टालने के लिए अनेक कारण के साथ-साथ युद्ध को महत्वपूर्ण बतलाते हैं। इसका खंडन करते हुए सुग्रीव इसी युद्ध को महत्वहीन बतलाते हैं। इसका खंडन करते हुए सुग्रीव इसी युद्ध को न्याय का युद्ध तथा युद्ध को इतिहास निर्माण करने वाला बतलाते हैं। एक तरह से सुग्रीव भी युद्ध के पक्ष में हैं। इसीलिए वे भी हनुमान की तरह अभियान की आज्ञा माँगते हैं।

'मृतात्मा दशरथ' एवं 'जटायु' का आगमन प्रस्तुत काव्य में द्वितीय सर्ग में हुआ है। मीनार के पीछे पुल के समीप और अस्पष्ट छाया के रूप में दशरथ और उनके हाथ में पक्षी रूप जटायु को राम देखते हैं।

राम परिताप-पश्चाताप के वात्याचक्र में घिरे हुए स्वयं को कुलनाश का कारण मानते हैं। सीता की मुक्ति की समस्या को ले राम के संशय को तोड़ने के लिए छाया के तर्क हैं कि राम की कर्म के प्रति कापुरुषता उचित नहीं है। परिस्थितियों का उचित उपयोग करना चाहिए। जटायु पक्षी राम को समझाता है कि किसी व्यक्ति मात्र को लेकर दुःख व्यक्त करना, उसे संबंध में बाँधकर छोटा करना है। अतः राम का यह परिताप उचित नहीं क्योंकि –

''यहाँ कुछ नहीं समाप्त हुआ,
क्योंकि कभी भी,
कुछ नहीं आरंभ हुआ
वह तो क्षण था,
गुण था,
जो कि है रहेगा भी।''

अंत में छाया तथा पक्षी दोनों आपनी अपनी दृष्टि एवं विचारानुसार राम को समझाते हैं तथा युद्ध को आवश्यक बतलाते हुए विदा होते हैं क्योंकि उनकी दृष्टि में यह युद्ध राम को लड़ना है —

अपने से नहीं,
अनास्था से नहीं,
संशयी व्यक्तित्व से भी नहीं,
केवल,
असत्य से।

इस प्रकार विभिन्न पात्रों के माध्यम से कवि ने वर्तमान युग की जटिल समस्याओं पर विचार किया है। इसकी मुख्य समस्या 'युद्ध और शांति' के साथ जुड़े हुए कुछ प्रश्न - व्यक्ति और समाज, साम्राज्यवाद बनाम जनस्वातंत्र्य को भी वैचारिकता प्रदान की है।

३.३ प्रश्न

संभावित प्रश्न इकाई पाँच के अंत में दिए गए हैं ।

■■■■■

४

संशय की एक रात

प्रासंगिकता

इकाई की रूपरेखा –

४.० उद्देश्य

४.१ प्रस्तावना

४.२ प्रासंगिकता

४.३ प्रश्न

४.० उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई का उद्देश्य बी.ए.द्वितीय वर्ष के विद्यार्थियों के लिए निर्धारित पाठ्पुस्तक 'संशय की एक रात' की प्रासंगिकता को स्पष्ट करना है ।

४.१ प्रस्तावना

कवि नरेश मेहता ने अपनी इस रचना में तत्कालीन परिस्थितियों को वर्तमान संदर्भ में देखने का प्रयास किया है । इस इकाई में इसी बिन्दु पर प्रकाश डाला गया है ।

४.२ प्रासंगिकता

'संशय की एक रात' खण्ड काव्य में संशय एवं संघर्ष (युद्ध) के इर्द-गिर्द पूरी रचना घूमती है। यहाँ मूलभूत प्रश्न संघर्ष और संशय की व्युत्पत्ति का है। आखिर में वृत्तियाँ जन्मती क्यों हैं? इतिहास एवं साहित्य ग्रंथों पर दृष्टिपात करें तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि संघर्ष का एक आधार बिंदु 'अपमान' भी है। कोई भी व्यक्ति समाज अथवा देश के द्वारा किसी न किसी धरातल पर स्वयं को तुच्छ समझता है, लघुता अथवा तुच्छता के कारण उसमें कई बार हीनता की ग्रंथियाँ पनपने लगती हैं और इसीसे स्वयं को अन्य की विराटता के सम्मुख अपमानित समझने लगता है। प्राय: ऐसा देखने में आता है कि अपमान करने का प्रयास करें और इस बोध की सृष्टि हो जाए तो फिर विराटत्व में लघुत्व को मिटाने का भाव प्रबल हो जाता है। ऐसा करने में उसे किसी की सहायता की आवश्यकता भी नहीं पड़ती। इसके विपरीत महान व्यक्ति अथवा राष्ट्र का सहयोग प्राप्त करता है। यहीं से संघर्ष का वास्तविक आरंभ हो जाता है। हिंदी साहित्य के परिप्रेक्ष्य में संघर्ष की धारणा मूलत: अपमान पर केंद्रित है, सभी युगों की बहुचर्चित प्रबंध कृतियों

में युद्ध का कारण अपमान रहा है। अतः कह सकते हैं कि युद्ध के मूल में अपमान आधार रूप में स्थित रहा है।

रामायण में महासंघर्ष के मूल में अपमान-बोध का संबंध रावण से है जबकि महाभारत में इसका प्रत्यक्ष बोध दुर्योधन से है। द्रौपदी द्वारा अपमान के प्रतिशोध में वह उसे सभा में पांडवों के सम्मुख नग्न करना चाहता है, इसे पांडव अपना अपमान समझ प्रतिज्ञा करते हैं। यही अपमान केंद्रित हो माहाविनाश युद्ध का रूप धारण करता है। हमारा विश्वास है कि जितने भी प्रबंध काव्य हिंदी अथवा अन्य भाषाओं में विरचित हैं, जिनमें परस्पर युद्ध होता है, उनका आधार अपमान रहा होगा। यह अपमान-बोध प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष दोनों स्थितियों में रहता है।

'नयी कविता' का आरंभ सप्तकों की समाप्ति के पश्चात् १९५० के लगभग माना जाता है। इस 'वाद' के अंतर्गत अनेक संघर्ष एवं युद्धकाव्य लिखे गए जिनमें 'अंधायुग', 'एक कंठ विषपायी', 'आत्मजयी', 'संशय की एक रात' उल्लेख्य हैं। 'अंधा युग' का संबंध महाभारतीय मिथक से है जिसमें समकालीन संदर्भों को व्यंजित किया गया है। 'अंधा युग' में किसी का अपमान किया जा सकता है। इसलिए अपमान-बोध से प्रतिशोधात्मक स्थिति में घोर युद्ध होता है। 'एक कंठ विषपायी' का तो मूल बिंदु ही 'अपमान-बोध' रहा है। दक्ष शिव द्वारा स्वयं को प्अपमानित मानते हैं और यज्ञ में उन्हें आमंत्रित न कर उनका अपमान करते हैं। सती पति का अपमान-बोध न सह 'आत्मदाह' करती है। इतनी सुंदर एवं समर्थ अपमान-बोध की व्यंजक कृति हिंदी में अब तक प्रकाश में नहीं आई है। 'संशय की एक रात' का कथ्य रामायण का सेतुबंध की एक रात की घटना तक सीमित है। परंतु स्थिति-प्रकटीकरण से पूर्व कथानक के अंश भी समाविष्ट किए गए हैं। इसमें अपमान और प्रतिशोध के कारण ही राम-रावण का संघर्ष हुआ। उस अपमान का बोध भले ही पहले रावण को हुआ हो, 'अपमान' होने के तुरंत बाद ही प्रतिशोध स्वरूप संघर्ष हो, ऐसा अपेक्षित अथवा अनिवार्य नहीं। उपर्युक्त स्थिति एवं सामर्थ्य के एकत्रित होने पर संघर्ष होता है। पूर्व की घटना अथवा स्थितियाँ पृष्ठभूमि का कार्य करती हैं। प्रस्तुत रचना में नरेश मेहता की दृष्टि 'संशय' पर अधिक रही है। संशयी व्यक्ति द्वंद्वात्मक स्थिति में साँस लेता है। ऐसे व्यक्ति में आत्मसंशय अधिक रहता है। संशय के मूल में प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष कारण भी रहते हैं।

'संशय की एक रात' के नायक राम का आत्मसंशय बाह्य संघर्ष अथवा प्रचण्ड युद्ध के कारण है। वे रावण के साथ होने वाले युद्ध को जनविनाश का आधार नहीं बनाना चाहते। इसीलिए युद्ध अथवा शांति में राम किसे अपनाए इसका समाधान स्वयं नहीं कर पाते हैं। यहीं राम का आत्मसंशय आत्मसंघर्ष का रूप धारण कर लेता है और वये स्वयं को सभी अप्रिय घटनाओं का उत्तरदायी मानने लगते हैं। संघर्ष के द्वारा वे सीमा तक को प्राप्त नहीं करना चाहते। वे तो स्वयं को यहाँ तक दोषी मानते हैं :-

हाय !
आज तक मैं निमित्त ही रहा,
कुल के विनाश का,
लेकिन,
अब नहीं बनूँगा कारण,
जन के विनाश का ।

वस्तुतः कवि राम के आत्मसंघर्ष पर केंद्रित है, शेष पात्र हनुमान, लक्ष्मण, विभीषण, जामवंत, दशरथ और जटायु की प्रेत-आत्मायें इस संघर्ष से राम को मुक्त करने के लिए अनेक तर्क प्रस्तुत करती हैं। यहाँ उल्लेख है कि इस संघर्ष का आधार सीता है जिन्हें प्रस्तुत कृति में संदर्भों की पुष्टि की गई है। आत्मसंघर्ष के कारण राम संशय से ग्रासित हैं तथा युद्ध में होने वाले विनाश का उत्तरदायित्व स्वयं झेलना नहीं चाहते, आत्मसंघर्ष में घटित की आशंकाओं से राम चिंतित हैं। कवि ने राम के इस स्वरूप का युगीन समस्याओं के परिप्रेक्ष्य में प्रकटीकरण किया है। इस आत्मसंघर्ष एवं प्रचंड युद्ध के मूल में सीता है जिन्हें स्वतंत्रता एवं पवित्रता का प्रतिक माना गया है। इसके अन्य पात्र संशयी राम के आत्मसंघर्ष को व्यक्ति तक सीमित नहीं मानते वरन् इसका संबंध समाष्टिक घोषित करते हैं। यहीं उन्हें कर्म की महत्ता को प्रतिपादित युद्ध की चुनौती रूप में स्वीकारने का उपदेश भी दिलवाने का कवि ने उपक्रम किया है। यहाँ ध्यातव्य है कि नरेश मेहता की दृष्टि संशय की एक राम में पौराणिक मिथकों को प्रस्तुत करने की अपेक्षा समकालीन संदर्भों को व्याख्यित करता हैं इसीलिए संशयी राम के रूप में नेहरू तथा उके युद्ध और शान्ति मे युद्ध को त्यागने तथा पंचशील के आधार पर शान्ति मनाए रखने का संकल्प है। राम-रावण की पुनरावृत्ति कवि का लक्ष्य नहीं रहा है परंतू तत्कालीन चीन के युद्ध को दृष्टि में रखा गया है । यही कारण है कि रचनाकार ने रामराज्य के राजतंत्र कोभी व्याख्यायित नहीं किया है वरन् समकालीन लोकतंत्र के स्वरूप को उद्घाटित करना चाहा है । राजतंत्र अन्यथा सामंतीय शासन पद्धति में तो प्रजा की आवाज जो यद्यपि नकारा जा सकता है पर संसदीय शासन प्रणाली में लोकमत एवं जनवाणी का महत्त्व सदैव रहा है । यही कारण है कि तत्कालीन प्रधान मंत्री के सिद्धांतो के विपरीत युद्ध हुआ और जन विनाश कोन टाला जा सका । हनुमान, लक्ष्मण, बिणीषण, जामवंत तथा प्रेतात्माओं के रूप में दशरथ तथा जटायु द्वारा राम को युद्ध भी वास्तविकता का बोध कराया जाना वस्तुतः काँग्रेस संसदीय दल तथा विरोधी दलोंद्वारा युद्ध की अनिवार्यता घोषित करना है । यही कारण है कि ये पात्र विशेषकर हनुमान सीता को स्वतंत्रता का प्रतीक मानते हैं । चीन को भला किस प्रकार भारत जननी को परतंत्र रखने की अनुमति दी जाए, इसलिए ना चाहते हुए भी १९६२ में युद्ध हुआ तथा उके फलस्वरूप हानि भी उठानी पड़ी, पर भअरत की स्वतंत्रता अखण्ड बनी रहती है । इतना ही नही, अन्ततः राम स्वयं स्वीकारते हैं कि -

मैं निर्णय हूँ सबका,
अपना नहीं,
क्यों कि मैं अब निर्णय हूँ,
व्यक्ति नहीं ।

इसे भी बढ़कर राम का यह मानना कि 'संशयी राम का यह रूप समाप्त हुआ से तात्पर्य व्यक्ति की अनिच्छा पर भी उसे समूह-चेतना को स्वीकारना है । इसीलिए युद्ध का किसी भी आधार पर तिरस्कार नहीं किया जा सका भले ही इससे तर्क व्यक्तिगत स्वार्थ का दिया जाय या पंचशील के सिद्धान्तों की अवहेलना हो । शान्ति एवं युद्ध की शाश्वत समस्या में भी युद्ध की अनिवार्यता को स्वीकारना पड़ा ।

रचनाकार भी एक सामाजिक प्राणी होने के कारण समकालीन संदर्भों, अथवा युग-बोध से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित अवशय होता है । प्रस्तुत रचना में कवि ने भारतीय

शीर्षस्य नेताओं को अत्यधिक उद्‌भ्रांत स्थिती में पाया । संशय की एक रात स्वातंत्र्य युग की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि षे । इसमें स्वातंत्र्योत्तर भारत तथा मानवीय अस्तित्व से सम्पृहत युद्ध की समरूया से सम्बद्‌ध विभिन्न सन्दर्भ एक विशेकशील और प्रज्ञा-सम्पन्न महामानव की चिन्ता के रूप में अपनी समग्रता में अवतरित हुए हैं । मानव-मूल्यों की दृष्टि से यह एक सर्वथा चिन्तन-प्रधानसभा मूलक का व्यकृति है । कश्य में अनेक नवीन भाव भूमियों एवं युगीन संदर्भो का प्रकटाव सहज रूप में हुआ है । युद्ध की समरुया को नये आयामों सन्दर्भो तथा प्रश्नों के परिप्रेक्ष्य में व्याख्यायित किया गया है । वैयक्तिक एवं सामाजिक दृष्टि से मानव की विसंर्गातियों एवं उसमें व्याप्त विरोधाभासों का पौराणिक आधार पर विश्लेषण कवि का नवीन सफल प्रभास मान जा सकता है ।

आदिकवि से स्वातंत्र्य-युग के कवियों की कृतियों में प्रज्ञा-पुरूष राम का आलम्बनत्व रूप विविध पक्षी रहा है । प्राय: सभी कवि राम के नवीन प्रतीक की संरचना करते समय उनके शाश्वत, सार्वभौमिक स्वरूप को विस्मृत नहीं कर सके हैं । यही कारण है कि युगानुरुप राम का प्रतीक परिवर्तित होता रहाहै । कवि की स्पष्ट धारणा है कि प्रज्ञा-पुरुष राम एक सनातन प्रतीक है । यही कारण है कि प्रस्तुत रचना में नरेश मेहता ने युद्ध जैसी सार्वकालिक एवं सार्वभौमिक समस्या का सन्दर्भ राम जैसे सनातन प्रज्ञा-पुरूषसे सम्पृक्त करने का प्रयास किया है । राम का संशयात्मक होना न होना अन्य धारणा है पर युग में चारों और संशय अविश्वास, कुण्ठा, अनास्था जैस दुष्प्रवृत्तियाँ.व्याप्त हो चुकी थीं । कवि के सम्मुख सामयुक स्थिति-बोध के साथ शाश्वत स्थिति बोध का प्रश्न मुख्य रहा। इसके लिए इन्हें राम से बढ़कर अच्छा प्रात्प अथवा प्रतीक नहीं मिला । यहाँ उल्लेखनीय है कि राम का अलौकिक रूप आधुनिक काल के कवियों में कम होता है । उनके सम्मुख राम एक प्रज्ञा-पुरुष अधिक सार्थ कर रहे हैं । यदि मैथिलीशरण गुप्ता उन्हें धरती का संदेश लानेवाला घोषित करते हैं तो निराला जी ने राम की शक्तिपूजा मे उन्हें संशय से स्मपृक्त दिखलाया है । प्रस्तुत रचना का आधअर अथवा प्रेरणास्त्रोत 'राम की शक्ति-पूजा की निर्विवास माना जा सकता है । साथ ही ध्यातव्य तथ्य यह है कि निराला जी ने स्थिर (प्रज्ञा-पुरूष) राम को रावण की विजय के भय से संशकित दिखलाया है । जबकि नरेश मेहता का लक्ष्य इससे सर्वथा भिन्न है । यहाँ राम व्यक्तिगत स्वार्थ के हेतु वैयक्तिक एवं समष्टिगत दृष्टि है । वस्तुत: युग के सार्थक सन्दर्भो को कवि ने प्रस्तुत काव्य में संयोजित करने का प्रयास किया है ।

४.३ प्रश्न

संभावित प्रश्न इकाई पाँच के अंत में दिए गए हैं ।

■■■■■

५

संशय की एक रात

मिथक एवं संभावित प्रश्न

इकाई की रूपरेखा –

५.० उद्देश्य

५.१ प्रस्तावना

५.२ मिथक

५.३ संदर्भ संहित व्याख्या हेतु अवतरण

५.४ प्रश्न

५.५ टिप्पणियाँ

५.० उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई का उद्देश्य यह है कि विद्यार्थी अपनी पाठ्यपुस्तक 'संशय की एक रात' के मिथक आधारित संदर्भों को जान सकें इसके साथ ही कुछ अवतरण, प्रश्न तथा टिप्पणियाँ के आधार पर तैयारी कर सकें ।

५.१ प्रस्तावना

इस इकाई में 'संशय की एक रात' का मिथक आधारित अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। इकाई के अंत में संदर्भ सहित व्याख्या हेतु संभवित अवतरण, प्रश्न तथा टिप्पणियाँ दी हई हैं ताकि विद्यार्थी अपनी तैयारी कर सकें ।

५.२ मिथक

'संशय की एक रात' में **'पुरा कथा'** के माध्यम से युग-जीवन की अनेक विडम्बनापूर्ण स्थितियों के बीच से गुजरते हुए नरेश मेहता ने अपनी आत्म-स्थितियों को पहचानना और अपनी अस्मिता की बेचैनी भरी खोज का मार्मिक चित्रण किया है। हालांकि नरेश मेहता व्यक्ति चेतना और समूह-मन मनुष्य और उसके परिवेश को एक दूसरे के आमने-सामने रखकर उनकी आपसी टकराहट और द्वंद्व को ही चित्रित करते हैं। वे उनके बीच संवाद का कोई सहज सूत्र भी नहीं खोज पाते, लेकिन उनमें अंतिम निर्णय पर पहुँच जाने की जल्दबाजी भी नहीं है। यही कारण है कि वे युद्ध, संघर्ष, शांति, न्याय और सत्य आदि जीवन की मूलभूत समस्याओं का

न तो सरलीकरण करते हैं और न 'मैं जो कुछ जानता हूँ वही अंतिम सत्य है' की मसीहाई मुद्रा अख्तियार कर झूठे आत्मप्रदर्शन और आत्म-स्फीति की ओर प्रवृत्त होते हैं।

'संशय की एक रात' में एक ओर राम है जो अपनी व्यक्तिगत समस्या के लिए एक भीषण युद्ध का आह्वान करने में कोई औचित्य नहीं खोज पाते और कहते हैं कि —

''युद्ध नहीं होगा,
क्योंकि सीता का हरण,
राम की व्यक्तिगत समस्या है।''

उनका अपना विवेक यह स्वीकार करने के लिए भी तैयार नहीं है कि सीता की मुक्ति के लिए अनेक निर्दोष व्यक्तियों को युद्ध की विनाशकारी ज्वाला में झोंक दिया जाय –

धनुष बाण खड्ग और शिरस्त्राण,
मुझे ऐसी जय नहीं चाहिए,
बाण-बिद्ध पाँखी-सा विवश,
साम्राज्य नहीं चाहिए,
मानव के रक्त पर पग धरती आती,
सीता भी नहीं चाहिए।

दूसरी ओर सामान्य जन की यातनाओं और संघर्ष का प्रतिनिधित्व करने वाले हनुमान हैं, जो राम की व्यक्तिगत समस्या को सामान्य जन की मुक्ति की समस्या के रूप में देखते हैं–

रावण-अशोक बन की सीता,
हम साधारण जन की अपहृत स्वतंत्रता

आधुनिक युग के निरर्थकता-बोध की पीड़ा में डूबे विभीषण का भी अपना एक वैचारिक पक्ष है जो इस निर्णय पर पहुँचते हैं –

काम सामूहिक अंधता है, और
संशय वैयक्तिक अंधता है।

लेकिन 'संशय एक रात' में इन तमाम व्यक्तियों के अतिरिक्त भी कई ऐसी शक्ति है जो मानव-नियति और मानव-निर्णयों को प्रभावित करती है, मानव को दिशा-बोध कराती है, वह शक्ति है इतिहास। राम इस शक्ति को अपने व्यक्तिगत विवेक के लिए चुनौती के रूप में देखते हैं। साधारण जन की स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत हनुमान के लिए यह इतिहास मानव-मुक्ति की दिशा में बहने वाला एक ऐसा शक्तिशाली प्रवाह है जिसके साथ विरोध की अपेक्षा तादात्म्य की स्थिति काम्य है। राम इतिहास के प्रवाह के प्रति शंकित हैं, किन्ही अंशों में उससे आतंकित भी हैं –

फिर संघर्ष,
फिर संहार,
इस ऐतिहासिक विषमता का कौन-सा प्रतिकार?

इस चक्र का कोई नहीं है अंत,
हनुमान वीर!

लेकिन हनुमान इस समस्या पर बिल्कुल भिन्न प्रकार से सोचते हैं, वे मानते हैं कि इतिहास की दिशा यदि संघर्ष की ओर उन्मुख हैं, तो वह स्थिति अपने आप में अनपेक्षित नहीं है –

संभव है,
हमारे कारण ही,
अनागत युद्धों की नींव पड़े,
पर इस डर से,
क्या हम न्याय और अधिकार छोड़ दें?
नहीं नहीं महाराज,
समय ही करेगा प्रतिकार,
हर बार,
अनुचित का।

प्रश्न यह नहीं है कि इतिहास की अनिवार्यता के संदर्भ में युद्ध को लेकर राम और हनुमान में किसके विचार अधिक तर्कसंगत और विवेकपूर्ण हैं। प्रश्न यह भी नहीं है कि कवि की सहानुभूति किसके साथ है? महत्व की बात यह है कि कवि किसी भी स्थिति पर एक से अधिक दृष्टिकोणों को आमने-सामने रखकर उनकी टकराहट से उत्पन्न नये विचारों के व्यक्त होने की स्वतंत्रता में विश्वास करता है। विशेषता यह है कि राम का पक्ष कमजोर दिखाई देता है। वे युद्ध-विरोधी हैं किंतु अंततः युद्ध के पक्ष में परिषद का निर्णय स्वीकार कर लेते हैं। काल की दिशा को नियंत्रित करने वाले राम जैसे काल प्रवाह के समक्ष अपने आपको असमर्थ पाते हैं। राम का व्यक्तित्व खण्डित है, उनके चिंतन और कर्म के बीच एक बहुत बड़ी खाई है। स्वयं राम अपने विवेक और कर्म में सामंजस्य नहीं खोज पाते। उनका व्यक्तित्व अपने खण्डित रूप में आधुनिक व्यक्ति के अंतर्विरोधों का प्रतिनिधित्व करता है। यहाँ प्रश्न यह उठता है कि लोक-मानस में प्रतिष्ठित राम के अपराजेय व्यक्तित्व को युगानुरूप बनाने के लिए इतना अधिक बदल कर प्रस्तुत करने की छूट लेना कहाँ तक औचित्यपूर्ण है?

नये कवि अपने समकालीन संकट बोध की व्यंजना के लिए प्रायः महाभारत के कथा-प्रसंगों और प्रतीकों का अपनी कविता में उपयोग किया है। दो विश्व युद्धों के बाद के मनुष्य की अस्तित्वगत दुश्चिंताएँ महाभारत की युद्धजन्य भयावह स्थिति के अधिक अनुरूप दिखाई देती हैं। अनास्था, अविश्वास, निराशा, विषाद और अनिर्णय के क्षणों की दिशाहीनता के अनेक मार्मिक प्रसंग महाभारत की कथा में सहज ही उपलब्ध हो जाते हैं। ये प्रसंग आधुनिक मानव की संत्रासपूर्ण मनःस्थितियों को उजागर करने में पूर्ण समर्थ हैं। लेकिन रामकथा में ऐसे प्रसंगों का एकान्त अभाव है। राम का चरित्र उच्च मानवीय आदर्शों का पुंजीभूत रूप है। उनमें मानव सहज कमजोरियों के स्थान पर देवतुल्य पवित्रता और महानता है। उनके जीवन में अनिर्णय, द्विधा और संदेह के क्षण नहीं हैं। राम का विवेक इतना प्रखर और उनके व्यक्तित्व में इतनी अपराजेय दृढ़ता है कि वे सामान्यतः अपने संकल्प अपने निर्णय से पीछे नहीं हटते। ऐसी स्थिति में अपने परंपरागत रूप में राम आज के मनुष्य के खण्डित व्यक्तित्व का प्रतिनिधित्व नहीं करते। अतः आधुनिक संवेदना की व्यंजना के लिए राम कथा को आधार रूप में ग्रहण कर नरेश मेहता ने अपनी काव्य-यात्रा के लिए अपेक्षाकृत अधिक कठिन और चुनौती भरा मार्ग चुना है। 'संशय की

एक रात' में द्विधा और अनिर्णय की मन:स्थिति में डूबे, समय की धारा के समक्ष अपने आपको विवश और असमर्थ पाने वाले राम अपने परंपरित रूप से बहुत कुछ भिन्न होने के बावजूद यदि हमें अविश्वसनीय नहीं दिखाई देते तो इसका मुख्य कारण यही है कि यहाँ भी राम की बेचैनी का प्रमुख कारण उनका आदर्शवादी चिंतन है।

लंका पर आक्रमण की पूरी तैयारियाँ हो चुकी है। समुद्र का सेतु बँध जाने के साथ ही विराट युद्ध का आयोजन हो चुका है। राम की चेतना को आंदोलित करने वाला निर्णय का अंतिम क्षण उपस्थित हो चुका है। कल युद्ध प्रारंभ होने के साथ ही अगणित निर्दोष व्यक्तियों का संहार अनिर्णय बन जायेगा। राम का अपना विवेक इस युद्ध को स्वीकार नहीं कर पाता। उनका युद्ध-विरोधी विचार इतना प्रबल है कि यदि सीता को पाने का एकमात्र मार्ग युद्ध है तो वे सीता को त्यागने के लिए भी अपने आपको तैयार कर लेते हैं। राम के इस रूप की उनके परंपरागत रूप के साथ संगित बिठाई जा सकती है। किंतु जब परिषद इसके विपरीत वे परिषद के निर्णय को अपनी स्वीकृति प्रदान कर देते हैं। राम की यह स्वीकृति उनके अपने व्यक्तित्व की पराजय की परिचायक है। यहाँ वे अपने परंपरागत रूप से भिन्न दिखाई देते हैं। अपने सहयोगियों, अनुगामियों और अनुचरों के समक्ष असमर्थ होना बड़ा करूण और विडम्बनापूर्ण है। प्रश्न यह कि युद्ध विरोधी राम परिषद के निर्णय का विरोध क्यों नहीं करते। युद्ध का निर्णय स्वीकार करने वाले राम के अंतद्वंद्व का तब मूल्य ही क्या है? राम ने अपने पिता दशरथ की छाया से कहा था कि –

सम्मुख अब केवल युद्ध,
अवैतरित सिंधु,
युद्ध की विभीषिका,
गर्जन-तर्जन मुक्त,
कृत्या।
ओ पिता,
क्या यही?
क्या यही नियति है?

यह अपनी इच्छा के विरुद्ध युद्ध की स्वीकृति क्या अपनी नियति के समक्ष राम का आत्म-समर्पण नहीं है? 'संशय की एक रात' में समसामायिक जीवन का यह संदर्भ परोक्ष रूप से ही प्रकट हुआ है। पुराण कथा के मूल स्वरूप को क्षति पहुँचाये बिना कवि ने उसे युग-संदर्भ प्रदान कर दिया है। अपने मूल स्वरूप में 'संशय की एक रात' की समस्या न राजनीतिक है और न इसमें प्रजातांत्रिक व्यवस्था के अंत:स्वरूप को समझने का उपक्रम ही है। वस्तुत: राम को मात्र अपनी विडम्बनापूर्ण स्थिति पर सोचते-विचारते हैं, लेकिन धीरे-धीरे पाठक इस तथ्य से अवगत होने लगता है कि राम की अपनी विडम्बना युग जीवन की विडम्बना का स्वरूप ग्रहण कर चुकी है। राम की व्यक्तिगत समस्या में व्यक्ति और परिवेश के संघर्ष और सामंजस्य, जीवन के विस्तार और खण्डित व्यक्तित्व की करुणा तथा विचार और भाव-चेतना के आंतरिक द्वंद्व के विविध आयामों और स्तरों को समाहित कर पाने की कलात्मक क्षमता के कारण 'संशय की एक रात' मिथकीय कथा-प्रसंग में नयी संवेदना और नये बोध की एक महत्वपूर्ण काव्यकृति बन पड़ी है।

५.३ संदर्भ संहित व्याख्या हेतु अवतरण

१) सीता माता
भले ही राम की पत्नी हों
किसी की वधू
किसी की दुहिता हों
पर
हम कोटि-कोटि जनों की तो केवल
प्रतीक हैं।

२) किंतु युद्ध, दायित्व है,
किसी भी पीढ़ी के लिए दायित्व है
आवेश नहीं।

३) कैसी विषमता है।
हम सब
यहाँ
टूटे हुए व्यक्तित्व ले
अपनी समस्याएँ लिये एकत्र हैं।

४) युद्ध
मंत्रणा नहीं
एक दर्शन है राम!
अंतिम मार्ग है
स्वत्व और अधिकार अर्जन का।

५) मैं भी युद्ध की अनिवार्यता को मानता हूँ
किंतु
अपने राष्ट्र के प्रति
क्या यही कर्तव्य है मेरा
उस पर हो रहे
इस आक्रमण में साथ दूँ?

६) जब काम नहीं होता
तो संशय किया करते हैं
काम सामूहिक अंधता है, और
संशय, वैयक्तिक अंधता है।

७) अब मैं निर्णय हूँ
सबका
अपना नहीं।

८) इतिहास
व्यक्ति को व्यक्ति नहीं
शस्त्र मानता है
अपने अंधे उद्देश्य पूर्ति में।

९) मेरी आत्मा में भी यही है द्वंद्व
क्या कुछ नियति है
हमारे सारे शुभाशुभ कर्म की?

५.४ प्रश्न

१) 'संशय की एक रात' में श्री नरेश मेहता ने किन-किन समस्याओं का चित्रण किया है?

२) 'संशय की एक रात' का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

३) 'संशय की एक रात' की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिए।

४) 'संशय की एक रात' के राम का चरित्र चित्रण कीजिए।

५) 'संशय की एक रात' के तीसरे सर्ग का सारांश लिखिए।

६) 'संशय की एक रात' के चौथे सर्ग का सारांश लिखिए|

७) 'संशय की एक रात' प्रबंध आज की समस्याओं का साक्षात्कार कराता है। कथन की सार्थकता पर प्रकाश डालिए।

८) 'संशय की एक रात' के विभीषण का चरित्र चित्रण कीजिए।

९) युद्ध स्वयं में मूल्यों के विघटन का परिणाम होता है। स्पष्ट कीजिए।

१०) 'संशय की एक रात' के लक्ष्मण का चरित्र चित्रण कीजिए।

११) 'संशय की एक रात' के हनुमान का चरित्र चित्रण कीजिए।

५.५ टिप्पणियाँ –

१) हनुमान। २) राम। ३) लक्ष्मण। ४) शिल्प एवं भाषा ५) सुग्रीव ६) जामवंत ७) विभीषण ८) यह परिषद की बैठक.

□□□□□

६

काव्य गौरव - डॉ. अशोक मिश्र

१. कबीर २. सूरदास ३. तुलसीदास

इकाई की रूपरेखा :

६.० उद्देश्य

६.१ कबीर

- ६.१.१ प्रस्तावना
- ६.१.२ भावार्थ/कथ्य
- ६.१.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण
- ६.१.४ बोध प्रश्न
- ६.१.५ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरी प्रश्न

६.२ सूरदास

- ६.२.१ प्रस्तावना
- ६.२.२ भावार्थ
- ६.२.३ संदर्भसहित स्पषिटकरण
- ६.२.४ बोध प्रश्न
- ६.२.५ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरी प्रश्न

६.३ तुलसीदास

- ६.३.१ प्रस्तावना
- ६.३.२ भावार्थ
- ६.३.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण
- ६.३.४ बोध प्रश्न
- ६.३.५ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरी प्रश्न

६.० उद्देश्य

इस इकाई में पाठ्यक्रम में निर्धारित तीन कवियों - कबीर, सूरदास और तुलसीदास - की कविताओं का परिचय दिया गया है। इससे इन कवियों के काव्य का वर्ण्य-विषय, भावार्थ, कवि का दृष्टिकोण आदि स्पष्ट हो सकेगा। साथ ही कुछ अवतरणों की संदभसहित व्याख्या की जा सकेगी। अंत में कविताओं से संबंधित बोध प्रश्न दिये गए हैं। वस्तुनिष्ठ या लघुत्तरी प्रश्नों के उत्तर भी दिये गए हैं।

६.१ कबीर

जन्म : सन् १३९५ ई.

मृत्यु : सन् १५१८ ई.

कवि परिचय :

किंवदन्ती के अनुसार कबीर का जन्म काशी में किसी विधवा ब्राह्मणी के गर्भ से हुआ, जिसने लोकलाज के डर से नवजात शिशु को लहरतारा तालाब के किनारे छोड़ दिया । निस्सन्तान जुलाहा-दम्पत्ति नीरू और नीमा शिशु को उठाकर घर ले आए और उसका पुत्रवत् पालन-पोषण किया। इस तरह कबीर को हिंदू और मुस्लिम संस्कारों का सम्मिलित प्रभाव जन्म से ही प्राप्त हुआ। 'बीजक' कबीर की प्रामाणिक रचना हैं - इसमें कबीर के उपदेशों का संकलन है । बीजक के तीन भाग हैं - साखी, सबद, रमैनी ।

कबीर समाज के निम्नवर्ग में रहकर पले, अत: उन्हें कोई शिक्षा नहीं मिली। कबीर भले ही पढ़े-लिखे नहीं थे, परंतु सत्संग से उन्होंने गहरा जीवनानुभव प्राप्त किया था। कबीर की भाषा खिचड़ी भाषा थी। उनकी भाषा भावों-विचारों को अभिव्यक्त करने में समर्थ थी। 'भाषा पर कबीर का जबर्दस्त अधिकार था। जिस बात को उन्होंने जिस रूप में प्रकट करना चाहा है, उसे उसी रूप में भाषा से कहलवा दिया है।'

६.१.१ प्रस्तावना

कबीर युगीन समाज धार्मिक रूढ़ियों, बाह्याडंबरों, अंधविश्वासों आदि से ग्रस्त था, वह जड़-समाज बन गया था। समाज अज्ञान के अंधकार से व्याप्त था। सच्चे धार्मिक गुरु बहुत कम थे। लोग धार्मिक पुस्तकें पढ़कर उपदेश देने में कुशल थे, किंतु उपदेश के अनुसार आचरण नहीं करते थे। कबीर का आग्रह आचरण की शुद्धता पर था। उनकी कविता का प्रतिपाद्य मानव है। प्रभु प्रेम और मानव-मात्र के प्रति प्रेम कबीर का आदर्श था। ईश्वर भक्ति और मुक्ति गुरु-कृपा से प्राप्त होती है। इसलिए कबीर के काव्य में गुरु का ऊँचा स्थान है।

६.१.२ भावार्थ / कथ्य –

क) करनी बिना कथनी को अंग :

इसके अंतर्गत पाठ्य-क्रम में निर्धारित दोहों का सारांश दिया जा रहा है। इसमें वाणी और कर्म, कथनी और करनी की एकता पर बल दिया गया है। कबीरदास के अनुसार ईश्वर का साक्षात्कार करने या मुक्ति प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि साधक जो समझे वह कहे और जो कहे उस पर पूरी सच्चाई के साथ आचरण करें। कथनी के अनुसार आचरण करने वाला मनुष्य सहज ही मुक्त हो जाता है - संसार में जन्म-मरण करे चक्कर से छूट जाता है। जो मनुष्य दूसरों को उपदेश देता है और उपदेश के अनुसार स्वयं आचरण नहीं करता है, वह मनुष्य कुत्ते के समान है। अपने इस विषम आचरण के कारण बँधकर यमपुर ले जाया जाता है।

ब्रह्म का रहस्य समझने पर ही मनुष्य का कल्याण होता है। पद (ईश्वर भक्ति का गीत) गाने से मन प्रसन्न होता है और साखियाँ कहने से आनंद मिलता है। परंतु परम ब्रह्म-तत्व का रहस्य जाने बिना मनुष्य को मुक्ति नहीं मिलती। जिसको मुक्ति नहीं मिलती है, उसके गले में जन्म-मरण का फंदा डाला जाता है।

निष्ठापूर्वक नाम-जप से ही मनुष्य को लाभ मिलता है। जो व्यक्ति महत्व समझे बिना केवल मुँह ऊँचा करके भगवान के नाम का कीर्तन करता है, वह वास्तव में अज्ञानी है। सिर रहित शरीर के समान है। यहाँ कबीर ने बाह्याचार का विरोध किया है।

ख) कथनी बिना करनी को अंग –

कबीर कहते हैं कि वेद-शास्त्रों का अध्ययन अच्छी बात है, उससे भी अच्छा योग की साधना करना है। अंत में कबीर कहते हैं कि लोगों को राम-नाम से प्रेम करना चाहिए, भले ही सामान्य जन भक्ति की अपेक्षा योग को श्रेष्ठ मानते हों।

कबीर ने राम नाम की महिमा स्वीकार की है। उनका कथन है कि धर्मग्रंथों को पढ़ना बंद करो। धार्मिक बाह्याचार की चर्चा करनेवाली पुस्तकों को नदी में बहा दो। बावन अक्षरों का सार तत्व-राम का नाम है। इसी में अपना मन लगाओ।

धर्म-ग्रंथों को पढ़-पढ़कर संसार के लोग मर गये, किंतु उनमें कोई भी ज्ञानी (ब्रह्म साक्षात्कार करने वाला) नहीं हो सका। जिसने प्रिय (प्रभु) के नाम का एक शब्द (राम) पढ़ लिया वह ज्ञानी-पंडित हो गया।

ग) साधु को अंग –

इन सखियों में साधुओं और भक्तों की संगति का महत्व प्रतिपादित किया गया है। साधुओं की संगति से मन में भक्ति का संचार होता है। मन में भक्ति व्याप्त होने से व्यक्ति ईश्वर का साक्षात्कार प्राप्त करता है, अर्थात् आवागमन के चक्र से मुक्त हो जाता है। कबीर कहते हैं कि कोई मथुरा जाए, या द्वारकापुरी जाए, उसे पसंद आए तो जगन्नाथपुरी की यात्रा कर आए। परंतु साधु की संगति और हरि की भक्ति के बिना उसे कुछ भी लाभ नहीं होगा। इस तरह कबीर ने धर्म के बाह्याचरण का विरोध किया है।

कबीर के अनुसार सच्चे हितैषी दो लोग ही हैं - वैष्णव तथा श्रीराम। राम मुक्ति देते हैं और वैष्णव जन (हरि भक्त) भगवान के नाम का स्मरण कराते हैं। जीवन का सार हरि का भजन और मुक्ति है।

कबीर के अनुसार भक्त का महत्व भगवान से भी अधिक है। इसलिए हरि भक्त ही सच्चा हितैषी है। कबीर कहते हैं कि मैं राम की खोज में जगह-जगह भटकता फिरा। मुझको राम के समान पवित्र आचरण वाले भक्त जन मिल गये। उन्होंने मेरा सब काम पूरा कर दिया। अर्थात् राम से मिला दिया।

६.१.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण –

कबीर पढ़िबा दूरि करि, पुस्तक देइ बहाइ ।

बावन आखिर सोधि करि, ररै ममै चित लाइ ।।

संदर्भ –

प्रस्तुत पंक्तियाँ 'काव्य गौरव' में संकलित 'कथनी बिना करनी को अंग' से ली गई हैं। इसके रचयिता संत कवि कबीरदास हैं।

प्रसंग –

कबीरदास निर्गुण भक्त थे। उनका मत है कि धर्म के बाह्याचरण से धार्मिक विद्वेष उत्पन्न होता है और समाज अशांत रहता है। इसलिए उन्होंने धर्म के बाह्याचार का विरोध किया है। भिन्न-भिन्न धार्मिक पुस्तकों में ईश्वर और मुक्ति को लेकर भिन्न-भिन्न मत व्यक्त होते हैं। इससे सामान्य-जन भ्रमित होता है। कबीर ने धार्मिक पुस्तकों के अध्ययन की अपेक्षा राम-नाम के जाप को महत्व दिया है।

व्याख्या –

कबीर राम-नाम के जाप का महत्व प्रतिपादन करते हुए कहते हैं कि धर्म-ग्रंथों के अध्ययन से मुक्ति नहीं मिलती है। अत: उन्हें पढ़ना बंद करो, नदी में बहा दो। बावन अक्षरों के सार तत्व राम-नाम में अपना मन लगाओ।

विशेष –

धर्म के बाह्याचरण का विरोध है तथा नाम-जाप की महिमा का प्रतिपादन किया गया है।

६.१.४ बोध प्रश्न –

१) कबीर की भक्ति पर प्रकाश डालिए।

२) कबीर ने साधु-संगति का क्या महत्व बताया है?

३) कबीर ने कथनी और आचरण की समानता किस तरह प्रितपादितकी है?

६.१.५ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरी प्रश्न –

१) किस मनुष्य का आचरण कुत्ते के समान होता है?

उत्तर – कथनी और करनी में भेद रखने वाले मनुष्य का आचरण कुत्ते के समान होता है।

२) क्या गाने से मन प्रसन्न रहता है?

उत्तर - पद (ईश्वर भक्ति के गीत) गाने से मन प्रसन्न रहता है।

३) किस व्यक्ति के गले में फंदा पड़ता है?

उत्तर - ब्रह्म के तत्व का रहस्य न जानने वाले व्यक्ति के गले में फंदा पड़ता है।

४) कबीर ने किस नाम से प्रीति करने को कहा है?

उत्तर - कबीर ने राम के नाम से प्रीति करने को कहा है।

५) कबीर ने किसमें चित्त लगाने का उपदेश दिया है?

उत्तर - कबीर ने राम के नाम में चित्त लगाने का संदेश दिया है।

६) व्यक्ति क्या पढ़ने से ज्ञानी (पंडित) बनता है?

उत्तर - प्रिय के नाम का एक अक्षर (राम) पढ़ने से व्यक्ति पंडित बनता है।

७) कबीर के दो संगी कौन-कौन हैं?

उत्तर - वैष्णव और राम-कबीर के दो संगी हैं।

८) कबीर को प्रभु के नाम का स्मरण कौन करता है?

उत्तर - कबीर को प्रभु के नाम का स्मरण वैष्णव करता है।

९) कबीर किसके लिए वन-वन भटकते फिरे?

उत्तर - कबीर राम के लिए वन-वन भटकते फिरे।

६.२ सूरदास

जन्म - सन् १४७८ ई.

मृत्यु सन् १५८३ ई.

कवि परिचय –

सूरदास सगुणोपासक कृष्णभक्त कवि हैं। सूरदास का जन्म सीही ग्राम में एक सारस्वत परिवार में हुआ। पारिवारिक और आर्थिक परिस्थिति के कारण बाल्यावस्था से ही वे दैन्य भाव के पद गाकर भिक्षा-याचना किया करते थे। महाप्रभु वल्लभाचार्य के निर्देश पर वे कृष्णलीलाओं का सरस गान करने लगे। महाप्रभु ने उन्हें पुष्टिमार्ग में दीक्षित किया और कृष्ण-कथा से अवगत कराया। सूरदास 'अष्टछाप' के प्रमुख कवि हैं। सूरसागर, सूर-सारावली, साहित्य-लहरी प्रमुख रचनाएं हैं।

६.२.१ प्रस्तावना –

सूरदास के काव्य के प्रतिपाद्य को तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है – १) दैन्य भाव के पद २) वात्सल्य ३) श्रृंगार

स्वयं को दीन-हीन मानकर प्रभु कृष्ण से आत्मोद्धार की याचना सूर ने जिन पदों में की है वे दैन्य या विनय भाव के अंतर्गत रखे जा सकते हैं। वात्सल्य में कृष्ण की बाल-लीलाओं का मनोहारी वर्णन है। सूरदास ने बाल-स्वभाव का जैसा सूक्ष्म, सजीव और सरस चित्रण किया है, वह बेजोड़ है –

"भैया, कबहिं बढ़ैगी चोटी?

किती बार मोहिं दूध पियत भई, यह अजहू है छोटी।"

श्रृंगार के दो पक्ष हैं – संयोग और वियोग। राधा और गोपियों के साथ कृष्ण की रासलीला, प्रेमक्रीडा आदि के प्रसंग संयोग श्रृंगार के अंतर्गत आते हैं। श्रीकृष्ण के व्रज से मथुरा चले जाने के बाद राधा और गोपियों के दुखों का वर्णन वियोग श्रृंगार के सुंदर उदाहरण प्रसुत

करते हैं। विरह-वर्णन सूरसागर में भ्रमरगीत के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें निर्गुण पर सगुण-उपासना की विजय की स्थापना की गई है। सूरदास की संपूर्ण रचना गेय पदों में है। गीतिमयता इनके काव्य की सबसे बड़ी विशेषता है।

६.२.२ भावार्थ –

क) विनय के पद

सूरदास ने आरंभ में दैन्य-भाव के गीतों की रचना की। इसके लिए उनकी परिस्थितियाँ उत्तरदायी थीं। स्वयं को दीन-हीन मानकर उन्होंने प्रभु से आत्मोद्धार की याचना की है। सूरदास कृष्ण से कहते हैं कि मैं भोग की वस्तुओं को प्राप्त करने को लेकर बहुत नाच चुका। सांसारिक आकर्षण में मन का लीन होना ही अज्ञानता या अविद्या है । काम और क्रोध रूपी वस्त्रों को शरीर पर धारण किया, गले में विषय-वासना की माला पहन ली, पैरों में बंधे हुए माया-मोह रूपी घुँघरुओं से सरस शब्द निकलते हैं। भ्रम में भटका मन कुप्रवृत्तियों में लीन रहता है। हृदय में तृष्णा की आवाज होती है, उससे अनेक प्रकार के ताल निकलते हैं। नृत्य के लिए मैंने माया को फेटा की तरह बाँधा और माथे पर लोभ का तिलक लगाया। मैंने प्रयासपूर्वक बहुत-सी नृत्यकलाएं प्रकट की, इस क्रिया में स्थान और समय का ध्यान नहीं रखा। सूरदास कहते हैं कि हे कृष्ण मेरी अज्ञानता को दूर कीजिए।

सूरदास कृष्ण से प्रार्थना करते हैं कि मेरे दुर्गुणों पर ध्यान न दीजिए। आप का नाम 'समदरसी' है, इस आधार पर भक्तों के समान मुझ-जैसे पापी का भी उद्धार कीजिए। एक लोहा पूजा में प्रयुक्त होता है, एक-दूसरा है जिसे कसाई प्रयोग में लाता है। पारस पत्थर दोनों को स्पर्श करके उन्हें समान रूप से शुद्ध सोना बना देता है, दोनों में भेद नहीं करता है। गंगा नदी में गंदे पानी वाला नाला मिलता है तब वह गंगा का नाम धारण करता है। माया में लिप्त होने से जीवन नष्ट हो गया, ब्रह्म का साक्षात्कार नहीं कर सका। हे कृष्ण आप समदर्शी है, उद्धारकर्त्ता हैं। मेरा उद्धार कीजिए, नहीं तो आप का प्रण झूठा पड़ जाएगा। नाले और गंगा के माध्यम से सूरदास ने जीव और ब्रह्म की अद्वैतता का उद्घाटन किया है।

ख) वात्सल्य (गोकुल लीला)

इस शीर्षक के अंतर्गत कृष्ण की बाल–लीलाओं का वर्णन है। इस बाल-लीला में माता यशोदा कृष्ण को सुलाना चाहती हैं। वे कृष्ण को पुचकारती हैं और कुछ गीत गुनगुनाती हैं - हे नींद मेरे प्यारे बच्चे के पास शीघ्र आ और उन्हें सुला दे। नींद, तुझे कृष्ण बुलाते हैं, तू क्यों नहीं आती? कृष्ण कभी पलकें बंद करते हैं तथा कभी होंठ फड़काते हैं। कृष्ण को सोता समझकर यशोदाजी मौन धारण करती हैं, वे संकेतों से बातें करती हैं। इस बीच कृष्ण अकुला उठते हैं, यशोदाजी पुनः मीठा गीत गुनगुनाने लगती हैं। सुलाने की प्रक्रिया में यशोदा जो सुख प्राप्त करती हैं वह देवताओं और मुनियों के लिए दुर्लभ है।

श्रीकृष्ण माता यशोदा से अपनी चोटी बड़ी करने का हठ करते हैं। वे यशोदाजी से कहते हैं कि मैंने कितनी बार दूध पीया, किंतु, यह चोटी आज भी छोटी है। तुम तो कहती थी कि दूध पीने से यह चोटी बलराम के समान लंबी और मोटी हो जाएगी। कंघी करने, गूंथने और नहाने से यह नागिन के समान लंबी-मोटी होकर भूमि पर लौटने लगेगी, तुम मुझे कच्चा दूध पिलाती हो, वह जल्दी पच जाता है। तुम मक्खन और रोटी खाने को नहीं देती, इसलिए यह

छोटी है। सूरदास जी इच्छा करते हैं कि कृष्ण और बलराम - दोनों की जोड़ी चिरकाल तक जीवित रहे।

ग) विरह (भ्रमर गीत)

श्रीकृष्ण ब्रज से मथुरा गये, वहाँ कंस को मार कर राजा बन गए। ब्रज में गोपियाँ कृष्ण के वियोग में दुखी हैं। उद्धव गोपियों को समझाने ब्रज आते हैं वे समझाते हैं कि कृष्ण ब्रह्मस्वरूप हैं। यह निराकार 'ब्रह्म संसार के प्रत्येक कण में निवास करता है अर्थात गोपियों के ह्रदय में भी स्थित है। निर्गुणोपासना से गोपियाँ कृष्ण की उपस्थिति अपने भीतर अनुभव करेंगी, तब उनका विरह समाप्त हो जाएगा।

गोपियाँ उद्धव से कहती हैं कि हमारी आँखें कृष्ण-दर्शन के लिए प्यारी हैं। ये आँखें कमल के समान नेत्रवाले कृष्ण को देखना चाहती हैं। न देख पाने पर उदास रहती हैं। उद्धव यहाँ आए, निर्गुण ब्रह्म की उपासना का फंदा हमारे गले में डालकर चले गए। इस ब्रह्म को हम स्वीकार नहीं कर सकती हैं। हम सब तो वृंदावन वासी कृष्ण को देखना चाहती हैं, जिनके माथे पर केसर का तिलक और गले में मोतियों की माला सुशोभित हो। हमारे मन की दशा का ज्ञान किसी को क्या होगा?

लोग हमारा मजाक उड़ाते हैं। गोपियाँ कहती हैं कि कृष्ण तुम्हारे दर्शन के लिए हम काशी जाकर प्राण त्याग देंगी।

गोपियाँ निर्गुण-ब्रह्म उपासना की उपेक्षा करती हुई उद्धव पर व्यंग्य करती हैं कि हमारी ग्वाल बस्ती में एक बड़ा व्यापारी आया है। वह निर्गुण-ब्रह्म का भारी बोझ लादकर ले आया है। वह निर्गुण-भक्ति रूपी भूसा देकर बदले में कृष्ण भक्ति रूपी सोना माँगता है। उसने हमें बिल्कुल भोली समझ रखा है। वह थोथा ज्ञान देकर मूल्यवान प्रेम त्यागने को कहता है। उसका माल तो आरंभ से ही खोटा है। ऐसी खोटी वस्तु कैसे बिकेगी? हम ऐसी मूर्ख नहीं है कि इनके बहकावे में आ जाएँ। कृष्ण प्रेम रूपी दूध को त्याग कर इनके ज्ञान रूपी खारे पानी को कौन पीएगा? हे उद्धव! यहाँ से अभी जाइए, विलम्ब मत करिए । आप मुँहमाँगा मूल्य पाएंगे, जब हमारे प्रभय कृष्ण को ले आकर दिख देंगे । यहाँ सूरदास ने निर्गुण पर सगुण, ज्ञान पर भक्ति-प्रेम की विजय दिखायी है।

६.२.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण –

जसोदा हरि पालनै झुलावै ।

हलरावै, दुलराइ मल्हावै, जोइ-सोई कछु गावै।

मेरे लाल कौं आउ निदँरिया, काहैं न आनि सुवावै।

तू काहैं नहिं बेगहिं आवै, तोकों कान्ह बुलावै।

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ 'काव्य गौरव' में संकलित 'वात्सल्य (गोकुल-लीला)' से ली गई हैं। इसके रचयिता सगुणोपासक कवि सूरदास जी हैं।

प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियों में कृष्ण की बाल लीला का मनोरम चित्रण किया गया है। कृष्ण को सुलाने के लिए यशोदा के प्रयास का सुंदर वर्णन कवि ने प्रस्तुत किया है।

व्याख्या - यशोदा कृष्ण को सुलाना चाहती है। इसके लिए वे कृष्ण को झूले पर झुलाती हैं। वे झूले को हिलाती हैं, कृष्ण को पुचकारती है और कोई गीत गुनगुनाती है, जिसे सुनकर कृष्ण सो जाएँ। वे कहती हैं - नींद! तू मेरे प्यारे बच्चे के पास जल्दी आ। उन्हें सुला दे। तुझे कृष्ण बुलाते हैं।

कृष्ण जल्दी सो जाएँ - इसके लिए यशोदा मौन रहकर संकेतों से बातें करती हैं। कृष्ण भी सोने का नाटक करते हैं। कभी पलकें बंद करते हैं तो कभी होंठ फड़काते हैं। कभी शरीर हिलाकर अकुलाहट प्रकट करते हैं। इस तरह कृष्ण को सुलाने के प्रयास में यशोदा को अपार सुख मिलता है ।

विशेष - (१) कृष्ण की बाल-लीला का सुंदर, सरस वर्णन मिलता है। बाल लीला वर्णन में सूरदास बेजोड़ हैं। (२) कविता की भाषा सरस ब्रज भाषा है।

६.२.४ बोध प्रश्न –

(१) सूरदास जी आत्मोद्धार के लिए कृष्ण से क्या विनती करते हैं।

(२) कवि सूर द्वारा चित्रित बाल-लीला पर प्रकाश डालिए।

(३) भ्रमरगीत का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

६.२.५ लघुत्तरी प्रश्न –

१) सूरदास अपनी अविद्या दूर करने की विनती किससे करते हैं?

उत्तर - सूरदास अविद्या दूर करने की विनती नंदलाल से करते हैं।

२) सूरदास ने अपने माथे पर किसका तिलक लगाया था?

उत्तर - सूरदास ने अपने माथे पर लोभ का तिलक लगाया था।

३) पारस किन दो लोहों को स्वर्ण बनाने में भेद नहीं करता?

उत्तर - पूजा में और कसाई के यहाँ प्रयुक्त लोहों को स्वर्ण बनाने में पारस भेद नहीं करता है।

४) कृष्ण के अकुलाने पर यशोदा क्या करती हैं?

उत्तर - कृष्ण के अकुलाने पर यशोदाजी मधुर गीत गाती हैं।

५) चोटी बढ़ाने के लिए कृष्ण क्या खाने की माँग करते हैं?

उत्तर - चोटी बढ़ाने के लिए कृष्ण माखन-रोटी की माँग करते हैं।

६) गोपियों की आँखें किसका दर्शन करने के लिए प्यासी हैं?

उत्तर - गोपियों की आँखें कृष्ण-दर्शन के लिए प्यासी हैं।

७) गोपियाँ किस स्थान पर करवट लेने को कहती हैं?

उत्तर - गोपियाँ काशी में करवट लेने को कहती हैं।

८) ब्रज में बड़ा व्यापारी बनकर कौन आया है?

उत्तर - ब्रज में उद्धव व्यापारी बन कर आए हैं।

९) उद्धव किस चीज का भारी बोझ लाद कर ब्रज ले आए हैं?

उत्तर - उद्धव योग-ज्ञान का भारी बोझ ब्रज ले आए हैं।

१०) गोपियाँ ज्ञान-योग को क्या कहती हैं?

उत्तर - गोपियाँ ज्ञान-योग को खारा पानी कहती हैं।

६.३ तुलसीदास

जन्म – सन् १४९७ ई.

मृत्यु – सन् १६८३ ई.

कवि परिचय – इनका जन्म जिला बांदा के राजापुर नामक गाँव में हुआ। विद्वानों ने इनके पिता का नाम आत्माराम दूबे तथा माता का नाम हुलसी माना है। इनका जन्म अभुक्त मूल नक्षत्र में हुआ था। अमंगल के डर से माता-पिता ने इन्हें त्याग दिया। दासी मुनिया ने इनका पालन-पोषण किया। इन्हें महात्मा नरहरिदास का शिष्य बनने का सौभाग्य मिला। काशी में इन्होंने विभिन्न शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त किया। पत्नी का नाम रत्नावली था। पत्नी के कारण इनके जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ।

अपने गुरु नरहरिदास से सुनी हुई पवित्र रामकथा को इन्होंने अपने काव्य का विषय बनाया। रामचरित मानस, विनयपत्रिका, गीतावली, दोहावली आदि तुलसी की प्रमुख रचनाएं हैं। इनकी रचनाओं के केंद्र में रामभक्ति और राम का पवित्र चरित्र है। इनकी रचनाओं में जीवन के सभी पक्षों का उद्घाटन हुआ है। तुलसीदास समन्वयवादी कवि हैं। लोकजीवन के विविध पक्षों, विभिन्न भक्ति-मार्गों, विभिन्न दार्शनिक विचारधाराओं में इन्होंने अद्भुत समन्वय प्रस्तुत किया। इनकी रचनाएं प्रमुखत: अवधी और व्रज भाषा में हैं।

६.३.१ प्रस्तावना –

पाठ्यक्रम में निर्धारित तुलसीदास की दो कविताओं का संबंध नौका चलानेवाले केवट से है। वन मार्ग पर चलते हुए राम गंगा तट पर पहुँचते हैं और केवट से नौका द्वारा गंगा पार कराने कहते हैं। राम के पैरों की धूल के स्पर्श से मुनि की पत्नी के उद्धार की कथा केवट सुन चुका है। वह डरता है कि उसकी नाव भी कहीं सुंदर स्त्री में परिवर्तित न हो जाए। राम का पैर धोकर ही केवट उन्हें नाव पर चढ़ाने की विनती करता है।

६.३.२ भावार्थ –

श्रीराम ईश्वर हैं, सर्वशक्तिमान हैं। उन्होंने बहुत से पापियों का उद्धार किया। राम ने अजामिल जैसे क्रूर शिकारी को भवसागर से मुक्त किया। अजामिल एक क्रूर शिकारी था। मृत्यु से पूर्व उसने अपने पुत्र नारायण को पुकारा। 'नारायण' नाम मुख से निकलने पर राम ने उसे मोक्ष प्रदान किया। जिस राम का नाम स्मरण करने से सुमेर पर्वत पत्थर का कण बन जाता है, बढ़ा हुआ समुद्र बकरी के खुर के समान छोटा हो जाता है। जिसके कमलवत् चरणों से गंगा नदी प्रकट हुई, जो बड़े-बड़े पापों को नष्ट करती हैं। वही प्रभु राम किनारे पर खड़े होकर नदी पार करने के लिए केवट से नाव की माँग करते हैं।

केवट जानता है कि श्री राम ईश्वर हैं। उसके मन में प्रभु राम का पैर धोकर मोक्ष प्राप्त करने का लोभ है। उसने अहिल्या के उद्धार की कथा सुन रखी है। उसने राम का पैर धोने की विनती की। उसे डर है कि राम के पैरों की धूल के स्पर्श से उसकी नाव सुंदर स्त्री में परिवर्तित हो जाएगी। नाव खो देने पर वह अपने बाल-बच्चों का पालन नहीं कर पाएगा । नाव ही जीविका का एम मात्र साधन है। राम उसे पैर धोने की आज्ञा देते हैं । इस पर वह अत्यन्त प्रसन्न होता हैं । वह राम के चरणों की वन्दना करता है । वह अपने बाल-बच्चों और घरवाली को बुलाता है। वे सब राम के चारों तरफ बैठ जाते हैं। फिर वह छोटे से कठौते (लकड़ी के पात्र) में गंगाजी का पानी भरकर ले आता है। उसने राम का पैर धोया। पवित्र पानी को बार-बार पिया। तुलसी कहते हैं कि केवट की भाग्य की सराहना देवता करते हैं और पुष्प की वर्षा करते हैं। राम ने देवताओं की स्नेह से सुनी हुई सहज-सरल वाणी सुनी तथा जानकी और लक्ष्मण की ओर देखकर वे हँसे। यहाँ पर कवि ने राम के ईश्वरत्व को रेखांकित किया है।

६.३.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण –

तुलसी जेहि के पदपंकज तें

प्रकटी तरिनी जो हरे अघ गाढ़े।

सो प्रभु स्वै सरिता तरिबे कहँ

माँगत नाव करारे हवै ठाढ़े ।

संदर्भ – प्रस्तुत पंक्तियाँ 'काव्य गौरव' में संकलित 'कवितावली (केवट प्रसंग)' से ली गई हैं। इसके रचयिता गोस्वामी तुलसीदास जी हैं।

प्रसंग – इन पंक्तियों में कवि तुलसी ने राम के ईश्वरत्व और उनके मनुष्य आचरण की ओर संकेत किया है। राम ब्रह्म-रूप हैं, सर्व शक्तिमान हैं। फिर भी साधारण मनुष्य के समान आचरण करते हैं। वे नदी पार करने के लिए केवट से नाव माँगते हैं।

व्याख्या – राम ईश्वर हैं। वे बड़े उदार ह्रदयवाले हैं। वे इस धरती पर धर्म की रक्षा और पापियों के विनाश हेतु अवतरित होकर मनुष्य के समान आचरण करते हैं। उनके नाम के स्मरण से बड़ी-से-बड़ी बाधाएँ दूर हो जाती हैं। सुमेर पर्वत छोटे कण में बदल जाता है और बढ़ा हुआ समुद्र बकरी के खुर जैसा तुच्छ लगता है। उन्होंने संपूर्ण सृष्टि की रचना की है। उनके कमलवत् चरणों से उत्पन्न गंगा नदी बड़े-बड़े पापों को नष्ट करती हैं। वही राम किनारे पर खड़े होकर नदी पार करने के लिए केवट से नाव माँगते हैं।

विशेष – इन पंक्तियों में राम के ईश्वरत्व और मनुष्य आचरण पर प्रकाश डाला गया है।

६.३.४ बोध प्रश्न –

१) कवि तुलसीदास ने राम के ईश्वर और मनुष्य रूप का स्मरण किस तरह किया है?

२) राम के पैर धोने की आज्ञा पाने पर केवट की प्रसन्नता पर प्रकाश डालिए।

६.३.५ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरी प्रश्न –

१) राम ने भवसागर में डूबने से किस व्यक्ति को बचाया?

उत्तर – राम ने भवसागर में डूबने से अजामिल को बचाया।

२) राम के स्मरण से बढ़ा हुआ समुद्र क्या बन जाता है?

उत्तर – राम के स्मरण से बढ़ा हुआ समुद्र बकरी का खुर बन जाता है।

३) राम नदी के किनारे पर खड़े होकर क्या माँगते हैं?

उत्तर – राम किनारे पर खड़े होकर नाव माँगते हैं।

४) राम के कमलवत् चरणों से क्या प्रकट हुई?

उत्तर – राम के कमलवत् चरणों से तरिनी (नदी) प्रकट हुई।

५) केवट के परिवार के लोग कहाँ बैठे हैं?

उत्तर – केवट के परिवार के लोग राम के चारों ओर बैठे हैं।

६) केवट राम का पैर धोने के लिए किस पात्र में पानी ले आया?

उत्तर – राम का पैर धाने के लिए केवट कठौते में पानी ले आया।

७) देवताओं ने किसके भाग्य की सराहना की?

उत्तर – देवताओं ने केवट के भाग्य की सराहना की।

८) राम किनकी ओर देखकर हँसे?

उत्तर – राम जानकी और लक्ष्मण की ओर देखकर हँसे।

■■■■■

७

काव्य गौरव

कवि – १. सुमित्रानंदन पंत, २. हरिवंश राय बच्चन, ३. गजानन माधव मुक्ति बोध

इकाई की रूपरेखा –

७.० उद्देश्य

७.१ बिहारी

- ७.१.१ प्रस्तावना
- ७.१.२ भावार्थ / कथ्य
- ७.१.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण
- ७.१.४ बोध प्रश्न
- ७.१.५ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरी प्रश्न

७.२ भूषण

- ७.२.१ प्रस्तावना
- ७.२.२ भावार्थ / कथ्य
- ७.२.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण
- ७.२.४ बोध प्रश्न
- ७.२.५ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरी प्रश्न

७.३ मैथिलीशरण गुप्त

- ७.३.१ प्रस्तावना
- ७.३.२ भावार्थ / कथ्य
- ७.३.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण
- ७.३.४ बोध प्रश्न
- ७.३.५ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरी प्रश्न

७.० उद्देश्य

इस इकाई में तीन कवियों-बिहारी, भूषण और मैथिलीशरण गुप्त की पाठ्यक्रम में निर्धारित रचनाओं की विवेचना की गई है। इससे आप –

– कविता का भावार्थ समझ सकेंगे।

– कविता से चुने हुए अंश की व्याख्या कर सकेंगे।

– कविता से संबंधित बोध प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे।

– वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर दे सकेंगे।

७.१ बिहारी

जन्म – १५९५ ई.

मृत्यु – १६६३ ई.

कवि परिचय –

इनका जन्म ग्वालियर के निकट बसुआ गोविंदपुर नामक गाँव में हुआ। बिहारी कई भाषाओं के ज्ञाता अैर अनुभवसिद्ध व्यक्ति थे। जयपुर-नरेश मिर्जा राजा जयसिंह के आग्रह पर उन्होंने 'सतसई' की रचना की। प्रतिपाद्य की दृष्टि से यह श्रृंगार प्रधान रचना है।

७.१.१ प्रस्तावना –

बिहारी 'सतसई' में वर्ण्य-विषय की दृष्टि से श्रृंगार की प्रमुखता है। इसमें नायिका के रूप-वर्णन, हास-विलास, भाव-अनुभव का आकर्षक वर्णन है। श्रृंगार के अतिरिक्त शुद्ध भक्ति की दृष्टि से भी बिहारी ने कुछ दोहों की रचना की है। प्रकृति-चित्रण और नीति-कथन में भी बिहारी बेजोड़ हैं। कम शब्दों में अधिक भाव भर देने में बिहारी कुशल हैं। बिहारी की भाषा समास-शक्ति संपन्न है।

७.१.२ भावार्थ/कथ्य –

क) भक्ति

बिहारी की भक्ति के केंद्र में राधा-कृष्ण हैं। इन्हें आराध्य मानकर उन्होंने अपनी भक्ति प्रकट की है। 'मेरी भव-बाधा...उनकी प्रसिद्ध भक्ति रचना है। इस दोहे के कई अर्थ किये जाते हैं। बिहारी ने प्रार्थना की है – हे वह राधा नगरी, जिसके तन की परछाँहीं। आभा पड़ने से श्याम वर्ण वाले कृष्ण जी हरे रंग की द्युति वाले हो जाते हैं, मेरी भव-बाधा हरो। इसका दूसरा अर्थ है - हे वही राधा नागरी, जिसके तन की झाँकी (झलक) आँखों में पड़ने (दिखाई देने) से श्री कृष्ण जी हरे-भरे अर्थात प्रसन्न वदन हो जाते हैं, मेरी भव-बाधा हरो।

कवि प्रार्थना करता है – हे बिहारी लाल (कृष्ण जी) मेरे ह्रदय में तुम सदा ऐसी वेष-भूषा में बसो, जिसमें सिर पर मोर मुकुट हो, कटि में काछनी हो, कर में मुरली एवं उर पर वनमाला हो। कवि कृष्ण के ग्वाल-वेष का उपासक है।

बिहारी कहते हैं कि इस अनुरागी (प्रेमी/लाल रंग वाले) चित्त की अद्भुत दशा कोई समझ नहीं सकता। ज्यों–ज्यों यह श्याम रंग में डूबता है; त्यों-त्यों उज्ज्वल / पवित्र होता है।

ब्रह्मज्ञानी किसी भक्त से कहता है कि मैंने यह सिद्धांत समझ लिया है कि यह कच्चा (असत्य) जगत् काँच के समान है, जहाँ एक ही रूप अनंत रूप से प्रतिबिंबित होता है, दिखाई देता है।

ख) नीति

बिहारी की दृष्टि असहनीय दोहरे प्रशासन में जनता के दुख द्वंद्व पर गई है। दु:सह द्विराज में प्रजा का दु:ख-द्वंद्व क्यों न बढ़े। अमावस को सूर्य और चंद्रमा दोनों मिलकर जगत में अधिक अंधेरा करते हैं।

कवि का मत है कि धन, धतूरे से सौगुना अधिक उन्मत्त करने वाला है। मादकता में कनक (स्वर्ण) कनक (धतूरे) से सौ गुना बढ़ जाता है। क्योंकि उसको खाने से मनुष्य बौराता है, पर इसके पाने मात्र से बौरा जाता है।

नायिका अपनी सखी से प्रेम के व्यवहार में विलक्षण चलन के बारे में कहती है – हे सखी! इस व्यवहार में उलझते तो दृग हैं, पर टूटते कुटुंब के संबंध हैं और चतुर प्रेमियों के चित्त जुड़ते (मिलते) हैं। सामान्यत: जो वस्तु उलझती है, वही टूटती और जुड़ती है, एवं उसी में गाँठ पड़ती है। पर प्रेम-व्यवहार की विलक्षणता यह है कि एक वस्तु उलझती है, दूसरी वस्तु टूटती है, तीसरी वस्तु जुड़ती है और गाँठ अन्य स्थान पर बनती है।

कवि की उक्ति है कि जिससे जिसका अभीष्ट सधता हो वही उसके लिए सब कुछ है, चाहे वह बड़ा हो या छोटा। नदी, कूप, सर, वापी कुछ भी हो, और वह चाहे गहरा हो या छिछला; जिसकी प्यास जहाँ से बुझे, वही उसके लिए सागर है। अभीष्ट प्राप्त करने में सहायक वस्तु को कवि ने मूल्यवान बताया है।

ग) नायिका वर्णन

बिहारी ने श्रृंगार के आलंबन रूप नख-शिख के अंतर्गत नायिका के मुख-सौंदर्य का वर्णन किया है। नायिका के मुख की प्रशंसा सखी नायक से करती हुई कहती है कि उस (नायिका) के घर के आस-पास केवल पत्रे से ही तिथि जानी जाती है, क्योंकि वहाँ तो मुख की चमक के उजास (प्रकाश) से नित्यप्रति पूर्णिमा ही रहती है। रात भर चाँदनी का सा प्रकाश रहता है।

नायक और नायिका बड़ी चतुराई से हृदय के भावों को आँखों के माध्यम से प्रकट कर देते हैं। वही बात एक सखी दूसरी से कहती है– ये दोनों बड़ी चतुराई से गुरुजनों से भरे भवन में आँखों ही से सब बातें कर लेते हैं। प्रेम संबंधी अपने अभिप्राय प्रकट कर देते हैं। नायक कुछ कहता है, जिस पर नायिका निषेध करती है। नायिका की निषेध करने की चेष्टा पर नायक रीझता है। नायक के रीझने की चेष्टा पर नायिका बनावटी खीझ प्रकट करती है। फिर दोनों मेल कर लेते हैं। शीघ्र ही नायिका के खीझ छोड देने पर नायक हँस देता है। उसके हँसने पर नायिका लज्जित हो जाती है।

घ) विरह

विरह की स्थिति में नायक और नायिका दूर-दूर होते हैं। दूर रहने की पीड़ा दोनों ही सहन करते हैं। नायिका पत्र में अपने हृदय की पूर्ण व्यथा लिख पाने में असमर्थ है। वह कहती है कि कागद पर अपनी विरह-व्यथा प्रकट कर पाने में असमर्थ हूँ। दूत के माध्यम से अपनी व्यथा कह कर तेरे पास तक पहुँचाने में लज्जा आती है। मेरे हृदय की व्यथा तेरा विरही हृदय तुझसे कह देगा। अर्थात् तुझे अपने हृदय की व्यथा से मेरे हृदय की सच्ची दशा का अनुमान हो जाएगा।

नायक और नायिका विरह में दुखी हैं। नायक के लिए नायिका का पत्र ले जाने वाली दूती, दोनों की विरह-विकलता के बारे में मन में कहती है – विरह विकल नायिका ने नायक को चिट्ठी लिखना चाहा, पर विकलता के कारण लिख न सकी तो बिना लिखी ही चिट्ठी भेज दी। इधर नायक की दशा ऐसी है कि यह बिना अक्षर की चिट्ठी भी सूनैं (एकांत) में जाकर बड़े ध्यान से बाँचता है। कवि ने यहाँ विरह दु:ख का मार्मिक वर्णन किया है।

७.१.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण –

पत्रा हीं तिथि पाइयै वा धर के चहुँ पास।

नित प्रति पून्यौं ही रहै, आनन ओप उजास।

संदर्भ – प्रस्तुत दोहा 'काव्य-गौरव' के 'नायिका-वर्णन' शीर्षक से लिया गया है। इसके रचयिता कवि बिहारी हैं।

प्रसंग – नायिका के मुख-सौंदर्य की प्रशंसा सखी नायक से करती है, अथवा सौंदर्य के विषय में नायक स्वगत कथन करता है। रीतिकालीन कवियों ने नायिका के नख-शिख वर्णन में बड़ी रुचि ली है।

स्पष्टीकरण – तिथि जानने के दो साधन हैं – एक तो पत्रा (पंचांग) और दूसरा चंद्रमा का उजास। पर सखी कहती है कि उस नायिका के घर के आस-पास केवल पत्रे से ही तिथि जानी जाती है, क्योंकि वहाँ तो मुख की चमक के उजास से नित्यप्रति पूर्णिमा रहती है। रात भर चाँदनी का-सा प्रकाश रहता है।

विशेष – १) श्रृंगार के अंतर्गत नख-शिख का सुंदर वर्णन है।

२) कवि इस दोहे में कम शब्दों में अधिक से अधिक भाव भरने में सफल हुआ है।

७.१.४ बोध प्रश्न –

१) बिहारी की भक्ति-भावना स्पष्ट कीजिए।

२) बिहारी के नीति कथनों की विस्तारपूर्वक चर्चा कीजिए।

३) बिहारी के विरह-चित्रण पर प्रकाश डालिए।

७.१.५ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरी प्रश्न –

१) बिहारी भव-बाधा दूर करने के लिए किससे विनती करते हैं?

उत्तर – भव-बाधा दूर करने के लिए बिहारी राधा से विनती करते हैं।

२) अनुरागी का चित्त श्याम रंग में डूबने से कैसा हो जाता है?

उत्तर – अनुरागी का चित्त श्याम रंग में डूबने से उज्ज्वल हो जाता है।

३) बिहारी के अनुसार कच्चा जगत किसके समान है?

उत्तर – कच्चा (असत्य) जगत काँच के समान है।

४) नायिका के घर के आस-पास तिथि कैसे जानी जाती है?

उत्तर – नायिका ने घर के आस-पास पत्रा से ही तिथि जानी जाती है।

५) भरे भवन में नायिका-नायक कैसे बातें करते हैं?

उत्तर – भरे भवन में नायक-नायिका आँखों ही से बातें करते हैं।

६) नायिका के ह्रदय की व्यथा नायक से कौन कहेगा?

उत्तर – नायिका की विरह-व्यथा नायक से उसका ह्रदय ही कहेगा।

७) विरह–विकल नायिका नायक के पास कैसी पत्रिका भेजती है?

उत्तर – विरह-विकल नायिका नायक को बिना लिखी पत्रिका भेजती है।

७.२ भूषण

जन्म – सन् १६१३ ई.

मृत्यु – सन् १७१५ ई.

कवि परिचय – भूषण का जन्म जिला कानपुर के अंतर्गत तिकवाँपुर गाँव में हुआ। इनके पिता का नाम रत्नाकर त्रिपाठी था। इन्हें औरंगजेब की राजसभा में स्थान मिला, किंतु औरंगजेब की अन्यायपूर्णअनीतियों से खिन्न होकर ये वहाँ से चले आए। इन्होंने कई राज्यों में अपना कवि-कौशल दिखाया, किंतु इनका मन कहीं संतुष्ट नहीं हुआ। अंततः ये मराठा वीर छत्रपति शिवाजी के पास पहुँचे, जहाँ इन्हें राष्ट्र-प्रेम को व्यक्त करने का स्वर्णावसर प्राप्त हुआ। शिवाजी के पास रहकर भूषण ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ 'शिवभूषण' अथवा 'शिवराजभूषण' की रचना की। इनकी प्रसिद्ध रचनाओं में 'शिवराजभूषण', शिवा बावनी तथा छत्रसाल दशक विशेष प्रसिद्ध हैं। भूषण के काव्य की मूल संवेदना जातीय गौरव और शौर्य वर्णन है। इनकी कविता वीर रस और ओजगुण से ओतप्रोत है जिसके नायक शिवाजी हैं और प्रतिनायक औरंगजेब।

७.२.१ प्रस्तावना –

कवि भूषण ने भारतीय गौरव से प्रेरित होकर शिवाजी की वीरता का जीवन वर्णन किया है। शिवाजी के शौर्य और पराक्रम से आतंकित शत्रुओं की मानसिक स्थिति का इन्होंने सजीव चित्रण किया है। भूषण की रचनाओं के केंद्र में जातीय गौरव और राष्ट्रप्रेम है। इनकी रचनाएं वीर रस और ओज से परिपूर्ण हैं। कवि ने शिवाजी की दान और धर्मरक्षा की प्रवृत्ति का भी वर्णन किया है।

७.२.२ भावार्थ / कथ्य –

भूषण के युग में देश पर मुगलों का प्रशासन था। औरंगजेब ने हिंदुओं पर बड़ा अत्याचार किया। औरंगजेब की संकुचित धार्मिकता से भूषण खिन्न थे। जातीय गौरव की रक्षा के लिए कवि ने शिवाजी को औरंगजेब के विरुद्ध नायक के रूप में स्वीकार किया। इसी संदर्भ

में शिवाजी का शौर्य-पराक्रम भूषण की रचनाओं का प्रतिपाद्य बना।

शेर के समान वीर शिवाजी चतुरंगिनी सेना सजाकर युद्ध जीतने के लिए चलते हैं। वे उत्साह से परिपूर्ण होकर घोड़े पर सवार होते हैं। उत्साह में वृद्धि के लिए नगाड़े बड़ी ऊँची आवाज में बजते हैं। हाथियों के मस्तक से बड़ी-बड़ी नदियों के समान मद प्रवाहित होता है। उनकी सेना के फैलाव से संसार और गली-गली में खलबली मच जाती है। हाथियों धक्कों से पर्वत उखड़ जाते हैं। सेना के चलने से इतनी धूल उठती है कि सूर्य तारे के समान लगता है। समुद्र थाल में रखे पारे की तरह हिलता है।

शिवाजी की वीरता से मुगल बेगमें आतंकित हैं। वे भयभित होकर महल छोड़ कर भाग गई हैं, जंगलों-पहाड़ों में छिपकर जान बचा रही हैं। महलों में सुंदर पकवान खानेवाली बेगमें जंगलों में कंद-मूल खाकर जीवन निर्वाह करती हैं। वे पहले तीन समय खाती थी, अब तीन बेर पर निर्वाह करती हैं। उनके अंग आभूषणों से लदे होते थे अब भूख से कमजोर होने के कारण आभूषण अंगों पर ढीले पड़ गये हैं। पहले वे आराम के लिए पंखे डुलाती थीं अब जंगल में डोलती-फिरती हैं।

औरंगजेब की राज-सभा में आए हुए राजाओं, नवाबों, सरदारों आदि का पद 'हजारी' के रूप में निश्चित होता था। जिसकी सेना पाँच हजार सैनिकों की थी वह पंचहजारी, जिसकी छः हजार होना थी वह छः हजारी कहलाता था इसी के अनुसार मुगल दरार में उन्हें नीचा या ऊँचा स्थान मिलता था । शिवाजी छत्रपति थे। उनके पास अपार सेने थी। औरंगजेब ने उन्हें छः हजारी सरदारों की पंक्ति में स्थान देकर अपमानित किया। उचित सम्मान न मिलने से उन्हें बहुत क्रोध आया। इस लिए शिवाजी ने औरंगजेब को सलाम नहीं किया और प्रिय वचन भी नहीं बोले। शिवाजी का क्रोध उबलने लगा, तब दरबार के सभी लोगों के होश उड़ गये। दिल घबरा गए, क्रोध से लाल हुए शिवाजी के मुख को देखकर औरंगजेब का मुँह काला पड़ गया और सिपाहियों के मुँह भय से पीले हो गये। इस कविता में ऐतिहासिक घटना की झलक है।

धर्मवीर शिवाजी ने हिंदुत्व की रक्षा की। जातीय गौरव को प्रतिष्ठा दी। शिवाजी के कारण दुनिया में चारों ओर हिंदुस्तान प्रकट रूप से उसी तरह सुशोभित होता है, जैसे स्त्री पति से, रात चंद्रमा से, बिजली वर्षा ऋतु के बादलों से, यश दान से, सूरत ज्ञान से, प्रेम सम्मान से, तन आभूषण से, कमलिनी नए उदय हुए सूर्य देव की लाली से सुशोभित होती है। यहाँ भूषण ने जातीय गौरव की रक्षा के लिए शिवाजी के संघर्ष की ओर संकेत किया है।

७.२.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण –

ऊँचे घोर मंदर के अंदर रहनवारी,

ऊँचे घोर मंदर के अंदर रहाती हैं।

कंद मूल भोग करैं, कंद मूल भोग करैं,

तीनि बेर खातीं सो तीनि बेर खाती हैं।

संदर्भ – प्रस्तुत पंक्तियाँ डॉ. रामदरश मिश्र संपादित काव्य गौरव से ली गई हैं। इसके रचयिता कवि भूषण हैं।

प्रसंग – इस कविता में कवि ने शिवाजी के शौर्य-पराक्रम की चर्चा की है। उनकी

वीरता से मुगल प्रशासन आतंकित है। बेगमें महलों के भीतर भी असुरक्षित अनुभव करती हैं। शिवाजी के भय से वे महल छोड़ कर वनों तथा पहाड़ों में जा छिपी हैं।

व्याख्या – ऊँचे विशाल महलों में रहने वाली बेगमें शिवाजी के भय से ऊँचे भयंकर पहाड़ों में छिपी हैं। महलों में स्वादिष्ट पकवानों का उपभोग करने वाली बेगमें कंद-मूल खाकर जीवन निर्वाह करती हैं। महलों में वे तीन-बार खाती थीं, अब तीन बेर (जंगली कंद) खाकर जीवित रहती हैं। अर्थात् वनों-पहाड़ों के बीच दुख उठाते हुए अपने प्राण बचा रही हैं।

विशेष – इसमें जातीय प्रतिष्ठा की रक्षा हेतु शिवाजी के पराक्रम की चर्चा है। यहाँ यमक अलंकार का सुंदर प्रयोग दर्शनीय है।

७.२.४ बोध प्रश्न –

१) कवि भूषण ने शिवाजी की सेना का कैसा वर्णन किया है?

२) शिवाजी के पराक्रम का मुगल बेगमों पर कैसा प्रभाव पड़ता है?

३) औरंगजेब के दुर्व्यवहार पर शिवाजी के क्रोध पर प्रकाश डालिए।

४) शिवाजी से हिंदुस्तान किस तरह सुशोभित है?

७.२.५ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरी प्रश्न –

१) युद्ध जीतने के लिए शिवाजी क्या सजाते हैं?

उत्तर – युद्ध जीतने के लिए शिवाजी चतुरंगिनी सेना सजाते हैं।

२) शिवाजी की सेना से कहाँ पर खलबली मचती है?

उत्तर – शिवाजी की सेना से जगत (संसार) में खलबली मचती है।

३) किनके धक्कम धक्के से पहाड़ उखड़ जाते हैं?

उत्तर – हाथियों के धक्कम धक्के से पहाड़ उखड़ जाते हैं।

४) शिवाजी के आतंक से मुगल बेगमें कहाँ रहती हैं?

उत्तर – शिवाजी के आतंक से वे ऊँचे भयंकर पहाड़ों के अंदर रहती हैं।

५) मुगल बेगमें महलों में कितनी बार खाती थीं?

उत्तर – मुगल बेगमें महलों में तीन बार खाती थीं।

६) औरंगजेब ने शिवाजी को किसके निकट खड़ा किया ?

उत्तर – औरंगजेब ने शिवाजी को 'छः हजारी' के पास खड़ा किया।

७) शिवाजी के क्रोध से सिपाहियों के मुख किस रंग के हो गये?

उत्तर –शिवाजी के क्रोध से सिपाहियों के मुख भय से पीले हो गये।

८) भूषण के अनुसार रात किसके साथ सुशोभित होती है?

उत्तर – रात चंद्रमा के साथ सुशोभित होती है।

७.३ मैथिलीशरण गुप्त

जन्म – सन १८८६ ई.

मृत्यु – सन १९६५ ई.

कवि परिचय –

गुप्तजीका जन्म झाँसी जिले के चिरगाँव में हुआ। ये द्विवेदीकाल के प्रसिद्ध कवि हैं। गुप्तजी ने मुख्यतः प्रबंध काव्य की रचना की है। 'रंग में भंग' इनका पहला प्रबंध काव्य है। 'भारत-भारती' से इन्हें बड़ी ख्याति मिली। जयद्रथ वध, पंचवटी, साकेत और यशोधरा इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।

'दोनों और प्रेम पलता है।'

७.३.१ प्रस्तावना –

इस कविता में कवि ने उर्मिला की विरह-व्यथा का मार्मिक चित्रण किया है। अपनी विरह-व्यथा वह अपनी सखियों से प्रकट करती हैं। उनके प्रेम में एकनिष्ठता है। उन्हें यह भी विश्वास है कि उनके पति लक्ष्मण भी उनके समान ही विरह व्यथा भोग रहे हैं।

७.३.२ भावार्थ/कथ्य –

उर्मिला के पति लक्ष्मण अपने भाई रामचंद्रजी और सीता जी के साथ जंगल चले गये। अयोध्या के राजमहल में रहकर उर्मिला विरह की आग में जल रही हैं। उन्हें विश्वास है कि लक्ष्मण भी विरह में दुःखी होंगे। दीपक के प्रति पतंगे के प्रेम-समर्पण के समान वे अपने प्रेम-समर्पण को मानती है। पतंगा उर्मिला का और दीपक लक्ष्मण का प्रतीक है। पतंगा दीपक के प्रति अगाध प्रेम रखता है। दीपक से दूर रहकर वह अपना जीवन व्यर्थ समझता है। प्रिय के पास पहुँचकर मिटने में ही वह अपने जीवन की सार्थकता मानता है। दीपक पतंगे को जल कर मरने से मना करता है, लेकिन पतंगा प्रेम में बेचैन होकर प्रिय के निकट पहुँचता है, अपना जीवन समाप्त कर लेता है। उर्मिला सखी से कहती हैं कि पतंगा जलकर न मरे और जीवित रह जाए तो उसे वियोग में हर पल बार-बार मरना होगा। पतंगा अपने प्रिय दीपक तक पहुँचकर मिटने में जीवन की सार्थकता मानता है, क्योंकि वह प्रिय की निकटता प्राप्त कर लेता है। पतंगा उदास होकर दीपक से कहता है कि तुम महान हो और मैं तुच्छ प्राणी हूँ। लेकिन मरने पर मेरा अधिकार है। मैं तुम्हारी शरण में आता हूँ। शरण किसी को नहीं छलता।

पतंगे को एक बात का दुख है। वह कहता कि दीपक! तुम जलते हो, तो तुम्हारी ओर सब ध्यान देते हैं। तुम्हारा जलना मूल्यवान होता है। मेरी भाग्य लिपि काली है। जलकर राख बनता हूँ। लोग हानि-लाभ की प्रवृत्ति रखते हैं। जिससे लाभ होता है, उसे सम्मान देते हैं। यहाँ पतंगे के माध्यम से उर्मिला ने अपना समर्पण और विरह-व्यथा व्यक्त की है।

७.३.३ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण –

बचकर हाय! पतंग मरे क्या?

प्रणय छोड़ कर प्राण धरे क्या?

जले नहीं तो मरा करे क्या? क्या यह असफलता है?

दोनों ओर प्रेम पलता है।

संदर्भ – प्रस्तुत पंक्तियाँ राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित 'दोनों ओर प्रेम पलता है' से ली गई हैं जो 'काव्य गौरव' में संकलित हैं। इसके संपादक डॉ. रामदरश मिश्र हैं।

प्रसंग – यहाँ उर्मिला ने पतंगे के माध्यम से अपनी विरह-वेदना, प्रिय लक्ष्मण के प्रति समर्पण की भावना व्यक्त की है। विरह की अग्नि में जलती उर्मिला को सखियाँ धैर्य देती हैं। लेकिन पतंगे के समान जलकर मरने में वे अपना जीवन सार्थक मानती हैं।

व्याख्या – पतंगा अपने प्रिय दीपक से बहुत प्रेम करता है। प्रिय से वियोग वह सहन नहीं कर सकता। वह प्रिय के निकट पहुँचता है, खुद को मिटा देता है। इस समर्पण में वह जीवन की सफलता तथा सार्थकता पाता है। प्रेम त्याग कर जीवन धारण करने में उसे अधिक दुख होगा। प्रिय वियोग में जीवित रहकर वह हर पल मरता रहेगा।

पतंगे का प्रेम एक तरफा नहीं है। उसे विश्वास है कि प्रिय दीपक भी उससे बहुत प्रेम करता है। विरह की आग में दोनों समान रूप से जलते हैं। पतंगे को दुख यही है कि संसार के लोग उसके समर्पण और विरह दु:ख की ओर ध्यान नहीं देते हैं। जब कि दीपक से लाभ यानी प्रकाश मिलने के कारण उसे सभी याद करते हैं।

विशेष – पतंगे के माध्यम से उर्मिला की विरह व्यथा का मार्मिक चित्रण हुआ है।

७.३.४ बोध प्रश्न –

१. उर्मिला ने अपनी विरह-व्यथा किस तरह व्यक्त की है?

२. 'दोनों ओर प्रेम पलता है।' का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

७.३.५ वस्तुनिष्ठ / लघुत्तरी प्रश्न –

१) दीपक पतंगे से क्या कहता है?

उत्तर – दीपक पतंगे से कहता है कि वह व्यर्थ में न जले।

२) पतंगा क्यों प्राण धारण करना नहीं चाहता?

उत्तर – पतंगा प्राण धारण करना नहीं चाहता क्योंकि जीवित रहकर उसे हर पल मरना होगा।

३) पतंगा किसे महान कहता है?

उत्तर – पतंगा दीपक को महान कहता है।

४) पतंगे की भाग्य लिपि कैसी है?

उत्तर – पतंगे की भाग्य लिपि काली है।

५) पतंगे के अनुसार दुनिया कैसी वृत्ति रखती है?

उत्तर – दुनिया वणिक्-वृत्ति रखती है।

■■■■■

८

काव्य गौरव

कवि – १. सुमित्रानंदन पंत २. हरिवंश राय बच्चन, ३. गजानन माधव मुक्ति बोध

इकाई की रूपरेखा –

८.० उद्देश्य

८.१ सुमित्रानंदन पंत

८.१.१ प्रस्तावना

८.१.२ भावार्थ/कथ्य

८.१.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण

८.१.४ बोध प्रश्न

८.१.५ वस्तुनिष्ठ/लघुत्तरी प्रश्न

८.२ हरिवंशराय बच्चन

८-२-१ प्रस्तावना

८-२-२ भावार्थ/कथ्य

८-२-३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण

८-२-४ बोध प्रश्न

८-२-५ वस्तुनिष्ठ/लघुत्तरी प्रश्न

८-३ गजानन माधव मुक्तिबोध

८-३-१ प्रस्तावना

८-३-२ भावार्थ/कथ्य

८-३-३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण

८-३-४ बोध प्रश्न

८-३-५ वस्तुनिष्ठ/लघुत्तरी प्रश्न

८.० उद्देश्य

इस इकाई में तीन कविताओं-'द्रुत झरो', 'निशा निमंत्रण' और 'लकड़ी का रावण' - की विवेचना की गई है। इससे आप –

- तीनों कविताओं का भावार्थ समझ सकेंगे।

- कविता से चुने हुए अंश की व्याख्या कर सकेंगे।
- कविता से संबंधित बोध प्रश्नों का उत्तर लिख सकेंगे।
- कविता से संबंधित लघत्तरी प्रश्नों के उत्तर दे सकेंगे।

८.१ सुमित्रा नंदन पंत

कवि परिचय- पंतजी का जन्म अल्मेड़ा के कौसानी गाँव में हुआ। ये प्रमुख छायावादी कवि हैं। इनमें प्रकृति के प्रति गहरा अनुराग मिलता है। प्रकृति के इतने सुंदर चित्र आधुनिक काल के किसी अन्य कवि में देखने को नहीं मिलते ।

पंत जी की प्रमुख रचनाएँ हैं - उच्छ्वास, वीणा, पल्लव, युगांत, युगवाणी, स्वर्ण-किरण, उत्तरा आदि।

८.१.१. प्रस्तावना –

'द्रुत झरो' कविता में पुराने युग से मुक्ति की इच्छा प्रकट की गई है, क्योंकि उसकी उपयोगिता समाप्त हो चुकी है। उसके नियम-कानून रूढ़ि बन कर जीवन-प्रवाह और विकास में बाधक बन गये हैं। कवि नये युग की प्रतिष्ठा चाहता है, जिसके नियम-कानून जीवनानुकूल हों इस नये युग में जीवन का आकर्षण और विकास हो।

द्रुत झरो

८.१.२ भावार्थ –

कवि पंत छायावादी कवि हैं। छायावादी कविता में नवीन के प्रति विशेष आकर्षण मिलता है तथा प्राचीन से मुक्ति की इच्छा व्यक्त होती है। 'द्रुत झरो' कविता में प्राचीन युग और उसके रीति-रिवाज, नियम-कानून की तुलना पुराने, पीले, सूखे बेजान पत्तों से की गई है तथा नये, कोमल, लाल-हरे पत्तों और खिले पुष्पों से युक्त वृक्ष नये युग के प्रतीक हैं।

सूखे-पीले और बेजान पत्ते पुरानेपन से ग्रस्त हैं। वे बसंत की हवा से भयभीत रहते हैं। वे अपना जीवन जी चुके हैं। उनमें निवास करने वाले पक्षी मृत हो चुके हैं। उनके घोंसले शब्द और श्वास हीन हैं। पक्षी भूमि पर गिरे हैं। कवि चाहता है कि सूखे-पीले पत्ते और मृत पक्षी मिट्टी में मिल जाएँ। उस मिट्टी पर लाल-हरे पत्तों और फूलों से युक्त नये वृक्ष का विकास हो। वे हवा की सांसों से मुखरित हों। उनकी हरियाली में आकर्षण हो। कोयल के मधुर स्वर से पत्ते गूँज उठें।

कवि पंत नये युग की प्रतिष्ठा चाहते हैं। इस नये युग को प्राचीन का आधार लेकर विकसित होना है। सभी कानून - सभी नियम समाज-सापेक्ष हैं, इसलिए परिवर्तनशील हैं। प्राचीन युग के नियम, रीति रिवाज नये युग के अनुसार परिवर्तित न होने पर रूढ़ि बन जाते हैं। ये रूढ़ियाँ जीवन के सहज विकास में बाधा बनती हैं, जीवन पर बोझ स्वरूप बन जाती हैं। व्यक्ति उनमें घुटन का अनुभव करता है। उनसे मुक्ति चाहता है, क्योंकि उनकी उपयोगिता समाप्त हो चुकी होती है। नये युग के मनुष्यों के सामान्य आचरण से प्राचीन रूढ़ियाँ और उन्हें पालन करनेवाले लोग आहत होते हैं।

कवि चाहता है कि पुराने युग का अंत हो, क्योंकि उसका जीवन-रस सुख गया है। उसमें रहने वाले लोग निष्प्राण हो चुके हैं। नये युग का जन्म हो, इस नये युग के नियम-सिद्धांत जीवन के अनुकूल हों। इस नये में जीवन की लालिमा हो। नया जीवन आकर्षक बने। इस नये युग में यौवन के कोयल का प्रेम स्वर गूँजे।

८.१.३. संदर्भसहित स्पष्टीकरण –

मंजरित विश्व में यौवन के

जग कर जग का पिक मतवाली

निज अमर प्रणय-स्वर-मदिरा से

भर दे फिर नवयुग की प्याली!

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ 'काव्य-गौरव' के 'द्रुत झरो' कविता से ली गई हैं। इसके रचयिता कवि सुमित्रानंदन पंत हैं।

प्रसंग - इन पंक्तियों में नये युग के प्रति आकर्षण व्यक्त हुआ है। यह नया युग जीवन के अनुकूल और उसके विकास में सहायक है। उसमें आनंद और प्रेम व्याप्त है।

स्पष्टीकरण - प्राचीन युग जीवन के विकास में बाधक बन जाता है। उसके रीति-रिवाज परिवर्तित न होकर रूढ़ि बन जाते हैं व्यक्ति उसमें घुटन अनुभव करता है। कवि का आग्रह है कि प्राचीन युग नष्ट होकर नये युग की प्रतिष्ठा हो। इस नये युग में प्रसन्नता का फूल खिले। यौवन का कोयल नये युग की प्याली को अपने अमर प्रेम-स्वर की मदिरा से भर दे। व्यक्ति का जीवन प्रसन्नता से भर जाय।

८.१.४ बोध प्रश्न –

१) कवि पंत के अनुसार नये युग की विशेषताएं स्पष्ट कीजिए।

२) कवि पंत पुराने युग का अंत क्यों चाहते हैं?

८.१.५ वस्तुनिष्ठ/लघुत्तरी प्रश्न –

१) जीर्ण पत्र क्यों पीले हुए हैं?

उत्तर - जीर्ण पत्र हिमताप से पीले हुए हैं।

२) जीर्ण पत्र किससे भयभीत हैं?

उत्तर - जीर्ण पत्र मधुवात (बसन्त की हवा) से भयभीत हैं।

३) कंकाल-जाल कहाँ फैले?

उत्तर - कंकाल जाल जग में फैले।

४) नवयुग की प्याली किससे भर जाए?

उत्तर - कोयल के प्रणय-स्वर-मदिरा से नवयुग की प्याली भर जाए।

५) 'द्रुत झरो' में कौन मृत हैं?

उत्तर - विहंग (पक्षी) मृत हैं।

८.२ हरिवंश राय 'बच्चन'

कवि परिचय - कवि बच्चन का हिंदी जगत से सर्वप्रथम परिचय 'उमर खैयाम' की रुबाइयों के अनुवाद से हुआ। यह अनुवाद हृदय-रस से ओत-प्रोत है। मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश, निशा-निमंत्रण, एकांत सगीत आदि बच्चन जी को प्रमुख रचनाएं हैं। बच्चन जी हालावाद के संस्थापक हैं।

८.२.१. प्रस्तावना –

'निशा-निमंत्रण' के गीतों में एक गहन वेदना व्यक्त है। बच्चनजी मूलतः आत्मानुभूति के कवि हैं। इन गीतों में कवि की निजी पीड़ा अनुमूति के रंग में डूब गई है। इन गीतों में कवि की पीड़ा-वेदना स्वानुभूति के योग से अपने प्रभाव में तीव्र और मर्मस्पर्शी है। प्रिय की अनुपस्थिति में कवि का जीवन दुख से भरा है, जीवन जीने का उत्साह नहीं है। जीवन बिखर गया है। सपने तहस-नहस हो गये हैं। संयोग में प्रिय से मिले सुखों को याद कर कवि विहवल हो जाता है।

८.२.२ भावार्थ/कथ्य –

१) दिन डूबने वाला है और रात होने वाली है। संसार के सभी प्राणी रात होने से पहले अपने प्रिय के पास पहुँचना चाहते हैं। प्रिय की याद से उनमें उत्साह, भर जाता है। एक राही रात होने से पहले प्रिय के पास पहुँचना चाहता है। मंजिल दूर नहीं है – यह सोचकर चिड़ियों के पंख स्फूर्ति और शक्ति से भर जाते हैं। बच्चे उसकी प्रतीक्षा में होंगे, उससे कुछ पाने की आशा में होंगे – यह सोचकर चिड़िया अपने नीड़ में जल्दी पहुँचना चाहती है। कवि का प्रिय नहीं है, उसकी प्रतीक्षा में कोई नहीं है। वह घर क्यों जल्दी पहुँचे? प्रियरहित घर के विषय में सोचकर कवि का हृदय बेचैन हो उठता है। घर पहुँचने का उत्साह समाप्त हो जाता है।

२) शाम होने वाली है। पक्षी अपने बसेरे (पेड़ों) पर लौट रहे हैं। नौकाएं किनारे पर लौट रही हैं। सूरज की थकी किरणें पश्चिम के आकाश की गोदी में पहुँच गई हैं। संध्या प्रेम-मिलन का क्षण है। सूरज और रात का मिलन (आलिंगन) होता है। स्त्रियाँ प्रिय की प्रतीक्षा घर में दीप जलाकर करती हैं। कवि का जीवन निराशा के अंधेरे से भरा है। दिन में मौन छाया के समान रहने वाली कवि की संगिनी उसे निराशा में डुबा कर चली गई।

३) गिरजे से घंटे की आवाजें मंदिर से शंख की और मस्जिद से नियमित नमाज की आवाजें अपने भक्तों को बुलाती हैं। कवि का भी सुंदर घर था, घर में प्रिय को सुंदर मूर्ति थी और कवि का मन प्रेम की पूजा से भरा था। स्वच्छ आसमान से अचानक वज्र गिरा और कवि के घर और प्रिय की मूर्ति को खंडित कर दिया। जब गिरजे, मंदिर और मस्जिद से पवित्र ध्वनियाँ उठती हैं, तब लोग अपना शीश झुकाने आराध्य के पास पहुँचते हैं। लेकिन कवि के पास अपना घर-मंदिर नहीं है, उसमें प्रिय की मूर्ति नहीं है। प्रिय-मृत्यु के वज्रपात ने उन्हें खंडित कर दिया है। कवि का मन यह सोचकर व्यथित हो जाता है कि वह किसे अपनी प्रेम-पूजा समर्पित करे?

४) कवि के जीवन का महल निराशा के अंधेरे से निर्मित है। इसमें सुख-दुख के अनेकों दीप जलते हैं। निराशा के क्षणों में कवि के सुंदर सपने भी बुरे सपनों में परिवर्तित हो गये हैं। भूत और भविष्य का जीवन भी वर्तमान की निराशा में डूब गया है। कवि के मन में इच्छा होती

है कि वह देश-काल-समाज के नियंत्रण को त्याग कर अपने सपने साकार करे। इस पर कवि को कोई अदृश्य शक्ति सावधान करती है कि नादान मनुष्य, ठहर ! तेरे साथ भारी धोखा हो रहा है।

५) कवि सोचता है कि बीते हुए सुखमय दिन फिर नहीं मिलेंगे। संसार के लोग मेरे मधुर गीत ध्यान से सुनेंगे, लेकिन मेरे हृदय की धड़कन को सुनने वाले मुझसे दूर चले गये। मेरे सफल होने पर संसार हाथ बढ़ाकर और शीश झुका कर मेरा सम्मान करेगा, लेकिन मतवाले, नेत्र मेरी प्रतीक्षा में नहीं खुलेंगे। मेरी सफलता और अच्छाई को लेकर संसार झुककर मेरा सम्मान करेगा, लेकिन मेरी कमजोरी के लेकर सहानुभूति प्रकट करनेवाला मेरा प्रिय नहीं मिलेगा। कवि व्यथित है कि बीते हुए सुख के क्षण फिर न मिलेंगे।

८.२.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण –

जग के विस्तृत अंधकार में,

जीवन के शत-शत विचार में,

हमें छोड़कर चली गई, लो, दिन की मौन संगिनी छाया।

साथी अंत दिवस का आया!

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ 'निशा-निमंत्रण' शीर्षक से ली गई हैं। इसके रचयिता हरिवंशराय बच्चन हैं।

प्रसंग - प्रिय की अनुपस्थिति में कवि का मन व्यथित है। प्रेम-मिलन के क्षण संध्या में उसकी व्यथा और अधिक उभर आती है। 'संध्या स्नेह-मिलन का क्षण' होने से कवि अपने प्रिय को याद करता है। संध्या के समय सूरज और रात का मिलन होता है। बसेरे पर लौटकर पक्षी प्रिय से मिलते हैं, नौकाएं तट से मिलती हैं। दिन में मौन छाया के समान संग रहने वाली कवि की प्रिया उसे अकेला छोड़ गई। उसने कवि के जीवन को निराशा के अंधेरे से भर दिया। कवि का जीवन सौ-सौ दुखद विचारों से घिर गया है।

विशेष - (१) यह व्यक्तिवादी कविता है।

(२) इसमें कवि की निजी पीड़ा की अभिव्यक्ति हुई है।

(३) पीड़ा स्वानुभूति जन्य होने से प्रभाव में तीव्र और मर्मस्पर्शी है।

८.२.४ बोध प्रश्न –

(१) 'निशा-निमंत्रण' में कवि ने अपनी पीड़ा किस तरह अभिव्यक्त की है?

(२) 'निशा-नियंत्रण' के आधार पर कवि के दुखों पर प्रकाश डालिए।

(३) कवि बच्चन ने संयोग के सुखों को किस तरह याद किया है।

८.२.५ वस्तुनिष्ठ/लघुत्तरी प्रश्न –

(१) पथिक क्या सोचकर जल्दी-जल्दी चलता है?

उत्तर - पथ में रात न हो जाय - यह सोचकर पथिक जल्दी-जल्दी चलता है।

(२) नीड़ों से कौन झाँक रहे होंगे?

उत्तर - नीड़ों से बच्चे झाँक रहे होंगे।

(३) तरु पर कौन लौट रहे हैं?

उत्तर - तरु पर पक्षी लौट रहे हैं।

(४) सूरज की श्रान्त किरणें कहाँ आश्रय पाईं?

उत्तर - सूरज की श्रान्त किरणें पश्चिम की गोदी में आश्रय पाईं।

(५) कवि के मंदिर और प्रतिमा को किसने खंडित किया?

उत्तर - कवि के मंदिर और प्रतिमा को वज्रपात ने खंडित किया।

(६) कवि के मधुमय स्वर को कौन सुनेगा?

उत्तर - कवि के मधुमय स्वर को विश्व सुनेगा ।

(७) विश्व कवि का आदर किस तरह करेगा?

उत्तर - विश्व हाथ बढ़ाकर और शीश नवाकर कवि का आदर करेगा।

(८) घंटे की टन-टन कहाँ से उठती है?

उत्तर - घंटे की टन-टन गिरजे से उठती है।

(९) कांत-प्रतीक्षा में गृहिणी ने क्या किया?

उत्तर - कांत-प्रतीक्षा में गृहिणी ने घर में दीप जलाया।

(१०) मंदिर से शंखों की तानें किसका आवाहन करती हैं?

उत्तर - मंदिर से शंखों की तानें अपने भक्तों का आवाहन करती हैं।

८.३ गजानन माधव मुक्तिबोध

कवि परिचय : मुक्तिबोध का अनुभव जगत व्यापक है। वे अपने परिवेश के जीवन से गहन भाव से जुड़े हुए हैं। मुक्तिबोध की कविता में सामाजिक जीवन यथार्थ का चित्रण हुआ है। वे यथार्थ को अपने अनुभव का अंग बनाकर व्यक्त करते हैं। 'मुक्तिबोध' में फैन्टेसी है। अर्थात् वे एक जादुई कथा में आधुनिक जीवन अनुभवों को व्यक्त करते हैं। लगता है पाठक किसी जादुई लोक में घूम रहा है जहाँ रह-रह कर दृश्य दलते हैं, तरह-तरह के विचित्र व्यापार दिखाई पड़ते हैं। रह-रह कर जादुई चमत्कार होते हैं। और पाठक भय, घृणा , यातना, शक्ति, आक्रोश के मिले-जुले लोक से गुजरने लगता है। वास्तव में यह सारा जादुई लोक आधुनिक जीवन-अनुभव की अभिव्यक्ति के लिए रचा गया काव्य लोक है।'

मुक्तिबोध की प्रमुख रचनाएं - चाँद का मुँह टेढ़ा, भूरि-भूरि खाक धूल, एक साहित्यिक की डायरी आदि हैं।

८.३.१. प्रस्तावना –

'लकड़ी का रावण' कविता में सामाजिक विकृतियों का तीखा बोध अभिव्यक्त हुआ है। शोषण के बल पर पूँजीवादी समाज बहुत समृद्ध और निरंकुश हो जाता है। कुहरा अर्थात् निम्नवर्ग की संगठित शक्ति पूँजीवाद (लकड़ी का रावण) के विरोध में खड़ी हो जाती है। मजदूर वर्ग की शक्ति देखकर लकड़ी का रावण (पूँजीवाद) भयभीत हो जाता है, वह अपना आत्मविश्वास खोकर पराजय का अनुभव करने लगता है।

लकड़ी का रावण

८.३.२ भावार्थ/कथ्य –

नामहीन, आकारहीन, अदृश्य, बिना ओर-छोर वाला कुहरा कटी-फटी पहाड़ियों पर फैला है। यह कुहरा ही शोषित मजदूर वर्ग है। कुहरा राख जैसा मटमैला है तथा उसकी लहरें मैदानों और पहाड़ों पर फैली हैं। कुहरे से बहुत दूर ऊपर उठी हुई पर्वतीय नोक (शिखर) दिखाई पड़ती है। इस ऊँचाई पर स्थित पूँजीवाद खुद को सुरक्षित मानता है। वह अपने को भव्य पिता, मोहहीन, ध्यान में मग्न ब्रह्म और विराट पुरुष कहता है। पूँजीपति का यह भी मानना है कि उसके ही कंधे पर नीला आकाश, सूरज, चंद्रमा - साम्राज्य व्यवस्था - स्थित है। पूँजीपति और उसका साम्राज्य दूर तक कुहरे के लहरीले कम्बल को देखते हैं, जो गुफाओं, तालाबों, वृक्षों और मैदानों को ढके हैं।

पूँजीपति अचानक देखता है कि कम्बल की लहरों में हलचल हो रही है, वे हिल और मुड़ रही हैं। उसे लगता है कि कम्बल के भीतर कोई करवट बदल रहा है - मजदूर शोषण के विरुद्ध आंदोलन करने को तैयार हो रहे हैं। पूँजीपति इस विरोध को झूठा मानकर खुश होना चाहता है। लेकिन लहरें अनियंत्रित हो रही हैं। वे मुड़ती और आपस में जुड़ती हैं। इन लहरों से अगणित मानव आकृतियाँ प्रकट हो रही हैं। ये मजदूर हैं, जो भयंकर दिखाई देते हैं। ये मनुष्य लोहे और पत्थर के बने हुए हैं उनके हाथ लंबे और बलशाली हैं।

पूँजीपति डरता है कि लोहे और पत्थर के मजदूर कहीं उस तक न पहुँच जाएँ। वह डरता है कि उसके सुनहरे, अद्वितीय साम्राज्य पर ये मनुष्य हमला कर देंगे। मजदूरों की भीड़ का दिमाग खराब है। जब तक ये दूर थे तब तक कुहरे के प्रसार थे। ये लंगूर हैं मेरे शिखर पर स्थित मुझ तक पहुँच जाएंगे। पूँजीपति मजदूरों से संघर्ष के लिए अपनी भुजाओं में तलवारों और बिजलियों की शक्ति चाहता है। वह चाहता है कि पुच्छल तारे मजदूरों को नष्ट कर दें। वह मजदूरों को भ्रष्ट और असभ्य मानता है। वह चिंता करता है कि मजदूर शिखर पर चढ़ते आ रहे हैं। वह चारों तरफ से मजदूरों से घिर गया है। वह लाख मुख और हाथ वाले राक्षस तथा देवता की तरह दिखाई देता है। मजदूरों की शक्ति के सामने शिखर पर स्थित पूँजीपति बाँस, कागज और पुट्ठे से बने रावण की तरह कमजोर और हास्यास्पद लगता है। अधिकार प्राप्त करने के लिए मजदूरों का चेहरा भयंकर होता जा रहा है। पूँजीपति भाग कर खुद को बचा नहीं पाता। वह धराशायी होने को है।

इस लंबी कविता में वर्गीय-संघर्ष का निरुपण है। कवि का मानना है कि मजदूर शोषण के विरोध में संगठित होंगे। उनकी संगठित शक्ति के सम्मुख पूँजीपति पराजित होगा। पूँजीपतियों का समृद्ध-सुनहरा साम्राज्य शोषण पर आधारित है, जो मजदूरों द्वारा ध्वस्त किया जाएगा।

८.३.३. संदर्भसहित स्पष्टीकरण –

हाय, हाय,

उग्रतर हो रहा चेहरों का समुदाय

और कि भाग नहीं पाता मैं

हिल नहीं पाता हूँ

मैं मंत्र-कीलित-सा, भूमि में गड़ा सा,

जड़ खड़ा हूँ

अब गिरा, तब गिरा

इसी पल कि उस पल...।

संदर्भ - प्रस्तुत अवतरण 'लकड़ी का रावण' से लिया गया है। इसके रचयिता गजानन माधव मुक्तिबोध हैं।

प्रसंग - इन पंक्तियों में मजदूरों की संगठित शक्ति के सामने पूँजीवाद के खोखलेपन, पराजय और हताशा का चित्रण किया गया है।

व्याख्या - शोषण के चरम पर पहुँचने पर मजदूर पूँजीवादी व्यवस्था को चुनौती देते हैं। जब तक मजदूरों में अधिकार-चेतना जागृत नहीं हुई रहती, वे चुप रहते हैं। शोषण का क्रम चलता रहता है। शोषण के बल, पर पूँजीपति और अधिक समृद्ध तथा मजदूर और अधिक गरीब होते जाते है। अभाव में जीते हुए मजदूरों की सहनशक्ति चुक जाती है, तब वे संगठित होकर पूँजीपतियों से संघर्ष करने को प्रस्तुत होते हैं पूँजीपति मजदूरों के आक्रोश और शक्ति से भयभीत हो जाता हैं। वह मजदूरों से अपने आर्थिक साम्राज्य की रक्षा नहीं कर पाता, वह मजदूरों के सामने स्वयं को असहाय तथा कमजोर पाता है। पूँजीपति को लगत है कि वह जड़ हो गया है। अंततः मजदूरों की पूँजीवादी समाज पर विजय होती है।

विशेष - (१) इन पंक्तियों में वर्ग-संघर्ष का चित्रण है।

(२) अपने अभावग्रस्त, शोषित जीवन को लेकर मजदूरों के आक्रोश का वर्णन है।

(३) मजदूरों द्वारा पूँजीवादी व्यवस्था को चुनौती है।

८.३.४. बोध प्रश्न –

(१) 'लकड़ी का रावण' में वर्ग-संघर्ष का चित्रण किस तरह किया गया है?

(२) 'लकड़ी का रावण' के आधार पर पूँजीवादी समाज की चिंता पर प्रकाश डालिए।

(३) 'लकड़ी का रावण' के माध्यम से मजदूरों की संगठित शक्ति की चर्चा कीजिए।

८.३.५. वस्तुनिष्ठ/लघुत्तरी प्रश्न –

(१) 'अनाम, अरूप और अनाकार' ऐसा कौन दिखाई देता है?

उत्तर - कुहरा अनाम अरूप और अनाकार दिखाई देता है।

(२) 'लकड़ी का रावण' में क्या हिल-मुड़ रही हैं?

उत्तर - 'लकड़ी का रावण' में कम्बल की कुहरीली लहरें हिल-मुड़ रही है।

(३) लहरीला असंयम किसमें हैं?

उत्तर - कुहरे में लहरीला असंयम है।

(४) किनके मुख जाने-पहचाने लगते हैं?

उत्तर - कुहरे से प्रकट लोगों के मुख जाने-पहचाने लगते हैं।

(५) मजदूर कबतक कुहरे के श्याम प्रसार थे?

उत्तर - दूर होने पर मजदूर कुहरे के प्रसार थे।

(६) किसके चेहरे विकृत और भ्रष्ट हैं?

उत्तर - कुहरे के रंगवाले वानरों के चेहरे विकृत और भ्रष्ट हैं।

(७) पूँजीपति को कौन धोखा दे रही है?

उत्तर - पूँजीपति को आत्मप्रतीति धोखा दे रही है।

■■■■■

९

काव्य गौरव

कवि : १. धूमिल २. राजेश जोशी ३. अरुण कमल
४. मंगलेश डबराल

इकाई की रूपरेखा –

९.० उद्देश्य

९.१ धूमिल

- ९.१.१ प्रास्तावना
- ९.१.२ भावार्थ/कथ्य
- ९.१.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण
- ९.१.४ बोध प्रश्न
- ९.१.५ वस्तुनिष्ठ/लघुत्तरी प्रश्न

९.२ राजेश जोशी

- ९.२.१ प्रस्तावना
- ९.२.२ भावार्थ/कथ्य
- ९.२.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण
- ९.२.४ बोध प्रश्न
- ९.२.५ वस्तुनिष्ठ/लघुत्तरी प्रश्न

९.३ अरुण कमल

- ९.३.१ प्रस्तावना
- ९.३.२ भावार्थ/कथ्य
- ९.३.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण
- ९.३.४ बोध प्रश्न
- ९.३.५ वस्तुनिष्ठ/लघुत्तरी प्रश्न

९.४ मंगलेश डबराल

- ९.४.१ प्रस्तावना
- ९.४.२ भावार्थ/कथ्य
- ९.४.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण
- ९.४.४ बोध प्रश्न
- ९.४.५ वस्तुनिष्ठ/लघुत्तरी प्रश्न

९.० उद्देश्य

इस इकाई में चार कवियों की कविताओं-प्रौढ़ शिक्षा, जहर के बारे में कुछ बेतरतीब पंक्तियाँ, पृथ्वी किसलए घूमती रही, पहाड़ पर लालटेन - का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

इससे आप -

- चारों कविताओं का भावार्थ समझ सकेंगे।
- कविताओं से चुने हुए अंशों की व्याख्या कर सकेंगे।
- कविताओं से संबंधित बोध प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे।
- वसुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर दे सकेंगे।

९.१ धूमिल

धूमिल साठोत्तरी कविता के सशक्त हस्ताक्षर हैं। बनारस के पास खेवली नामक गाँव में उनका जन्म हुआ। उनकी कविता का स्वर समाजोन्मुखी रहा है। उन्होंने देश और समाज में व्याप्त मोहभंग को निर्मम अभिव्यक्ति दी है। धूमिल ने बहुत निर्भयता से देश की जनतांत्रिक व्यवस्था और अभिजात वर्ग के दोगले चरित्र का उद्‌घाटन किया है। वे व्यवस्था की विसंगतियों से टकराते हैं और इस प्रक्रिया में सामान्य जन का पक्ष लेते हैं। कथ्य के निरूपण के लिए धूमिल ने लट्ठमार भाषा और शैली का सहारा लिया है।

संसद से सड़क तक, कल सुनना मुझे, सुदामा पाण्डे का प्रजातंत्र - धूमिल के तीन काव्य-संग्रह हैं।

९.१.१. प्रस्तावना –

'प्रौढ़ शिक्षा' में सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था की विसंगतियों पर व्यंग्य है। कवि ने बड़ी निर्भयता से जनतांत्रिक व्यवस्था और अभिजात वर्ग के दोगले चरित्र पर प्रहार किया है। वर्तमान व्यवस्था में किसान उपेक्षित और शोषित जीवन जी रहा है। कविता में किसानों को अपने अधिकार प्राप्त करने के लिए जागृत करने का प्रयास चित्रित है।

९.१.२ भावार्थ/कथ्य - प्रौढ़ शिक्षा –

राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्था में किसान उपेक्षित और शोषित रहे हैं। वे अशिक्षित हैं। उनमें अधिकार-बोध नहीं है। वे परिश्रम करके दूसरों का जीवन सुखी बनाते हैं, खुद अभावग्रस्त जीवन बिताते हैं। कवि किसानों में अधिकार चेतना पैदा करने के लिए उन्हें शिक्षित करना चाहता है। व्यवस्था से मिली उपेक्षा को किसान चुप रह कर सहता रहा है। कवि चाहता है कि भ्रष्ट और स्वार्थी व्यवस्था का वे विरोध करें। जीवन में मिले अभाव और भावना को लेकर किसानों के मुख से ''आ'' निकलता है। कवि प्रसन्न होता है कि किसानों ने शोषण का विरोध करना आरंभ कर दिया है। इसके पहले शोषण के सामने गूँगे बने रहते थे। अब उन्होंने 'बीते दिनों की यातना के खिलाफ पहली बार मुँह खोला है।' किसानों में पहले शोषण का

विरोध करने का साहस नहीं था। वे जानवरों की तरह चुपचाप सब-कुछ सहते थे। लेकिन अधिकार बोध आने पर वे अन्याय को चुनौती देने को तैयार हैं। वे अधिकार और अन्याय के विषय में चर्चा करने लगे हैं - कलतक जो मवेशीखाना था आज पंचायत भवन है।'

किसानों को अपना विरोध तीव्र करने के लिए बीते दिनों की यातना याद करनी चाहिए। किसान ने मेहनत करके अभिजात वर्ग को समृद्ध बनाया, उन्हें भोजन-वस्त्र दिया और खुद भूखा नंगा रहा। उसकी इस स्थिति का कारण व्यवस्था से मिली उपेक्षा है। किसान अनपढ़ और सरल थे। राजनीति ने उनके साथ छल किया। किसानों को आजादी का सुख न मिला । सत्ताधारी वर्ग विलसिता में खो गया। वही लोग आजादी को भुना रहे हैं। राजनीतिक व्यवस्था में तुम्हारा शोषण करने के लिए तुम्हें 'पृथ्वीपुत्र' और 'अन्नदाता' कहकर भ्रमित किया गया। इस झूठी प्रशंसा से तुम्हें धोखा दिया गया। तुम प्रकृति के बीच रहते हो। प्राकृतिक-सौंदर्य का आनंद लेते हो - ये बातें तुम्हें चुप रहने के लिए कही गई हैं। खेत तुम्हारी जीविका का साधन है। तुमको उससे लगाव है। खेत में मेहनत करके भी तुम अभावग्रस्त हो। डूबते सूरज से लंबी परछाई के अतिरिक्त तुम्हें कुछ नहीं मिला।

अभावग्रस्तता के कारण किसानों का स्वास्थ्य ठीक नहीं है। वे पशुओं की हरकतों से आने वाले खतरों को जान लेते हैं। कवि चाहता है कि किसान राजनीतिक व्यवस्था से मिली उपेक्षा की भी पहचान रखें। वे हर किसी के छल का शिकार न बनें। अन्याय का विरोध करें। जीवन के लिए ठोस आधार प्राप्त करें। दुनिया बदल रही है, किसान भी भ्रष्ट-व्यवस्था का विरोध करके अपना जीवन बदलें।

९.१.३. संदर्भसहित स्पष्टीकरण –

तुम्हें तुम्हारी भूख पर भरोसा था

सबसे पहले उन्होंने एक भाषा तैयार की

जो तुम्हें न्यायालय से लेकर नींद से पहले की

प्रार्थना तक, गलत रास्तों पर डालती थी

'वह सच्चा पृथ्वी-पुत्र है'

'वह संसार का अन्नदाता है'

संदर्भ - प्रस्तुत अवतरण 'प्रौढ़-शिक्षा' से लिया गया है। इसके रचयिता कवि धूमिल हैं।

प्रसंग - इन पंक्तियों में आजादी के बाद, भ्रष्ट राजनीतिक व्यवस्था में किसानों के साथ हुए छल की चर्चा है। सत्ता में बैठे लोग अपने स्वार्थ की पूर्ति में लगे हैं। वे किसानों की दयनीय स्थिति के प्रति लापरवाह हैं। राजनीति नेताओं की स्वार्थ-पूर्ति का साधन बन कर रह गई है। वे विलासितापूर्ण जीवन जी रहे हैं, दूसरी ओर किसान के साथ छल करते हैं। किसानों में भूखे रहने की आदत हो गई है। नेता किसान को 'पृथ्वी पुत्र' और 'अन्नदाता' कहकर उसे संतुष्ट करना चाहता है। कवि किसान को सावधान करता है कि इन विशेषणों से तुम्हारे साथ छल किया जा रहा है। ये शब्द किसानों के जीवन को दयनीय और अभावग्रस्त बनाते हैं।

विशेष -

(१) इनमें भ्रष्ट राजनीति पर व्यंग्य किया गया है।

(२) कवि की सहानुभूति शोषित किसानों के साथ है।

(३) राजनीतिक छल किसान-जीवन को दयनीय बनाने में प्रमुख हैं।

(४) राजनीतिक भ्रष्टाचार के उद्‌घाटन में लट्टमार भाषा-शैली का प्रयोग किया गया है।

९.१.४ बोध प्रश्न –

(१) 'प्रौढ़ शिक्षा' कविता का व्यंग्य स्पष्ट कीजिए।

(२) 'प्रौढ़ शिक्षा' में राजनीतिक व्यवस्था के दोगले चरित्र का उद्‌घाटन किस तरह किया गया है?

(३) कवि धूमिल ने किसानों को संघर्ष-प्रेरणा किस तरह दी है?

९.१.५ वस्तुनिष्ठ/लघुत्तरी प्रश्न –

१) कवि सफेद खड़िया से 'अ' कहाँ लिखता है?

उत्तर - कवि काले तख्ते पर सफेद खड़िया से 'अ' लिखता है।

२) किसान किसकी तरह चुप है?

उत्तर - किसान जानवर-सा चुप है।

३) कल का मवेशीखाना आज क्या बन गया है?

उत्तर - कल का मवेशीखाना आज पंचायत भवन बन गया है।

४) कवि कहाँ पर लालटेन लटकाने को कहता है?

उत्तर - कवि पेड़ में गड़ी कील से लालटेन लटकाने को कहता है।

५) नये सबक की शुरुआत में क्या शरीक है?

उत्तर - नये सबक की शुरुआत में पिछले पाठ का दुहराना शरीक है।

६) सुराजिये क्या खा रहे थे?

उत्तर - सुराजिए गर्म कुत्ता खा रहे थे।

७) सुराजिये क्या पी रहे थे?

उत्तर - सुराजिये सफेद घोड़ा पी रहे थे।

८) किसानों के बुरे हाल की वजह क्या है?

उत्तर - किसानों के बुरे हाल की वजह खेत है।

९) किसानों की भूख का दलाल कौन है?

उत्तर - किसानों की भूख का दलाल खेत है।

१०) डूबता हुआ सूरज किसानों को क्या देता है?

उत्तर - डूबता हुआ सूरज किसानों को एक लंबी परछाईं देता है।

९.२ राजेश जोशी

राजेश जोशी का जन्म १८ जुलाई १९४६ में मध्यप्रदेश में हुआ। वे बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार हैं। कविता, कहानी, नाटक, समीक्षा, अनुवाद, संपादन आदि सभी क्षेत्रों में उन्होंने अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है। उनकी रचनाओं का कई देशी-विदेशी भाषाओं में अनुवाद हुआ है। एक दिन बोलेंगे पेड़, मिट्टी का चेहरा, चाँद की वर्तनी आदि उनके प्रमुख कविता संग्रह हैं। 'इसलिए' पत्रिका का कुछ वर्ष तक उन्होंने प्रकाशन एवं संपादन किया। साहित्य अकादमी सम्मान, मुक्तिबोध सम्मान, शिखर सम्मान आदि उन्हें प्राप्त हुए हैं।

९.२.१ प्रस्तावना –

'जहर के बारे में कुछ बेतरीब पंक्तियाँ' में जीवन में व्याप्त विडंबनाओं की अभिव्यक्ति हुई है। राजनीतिक भ्रष्टाचार ने वातावरण को विषाक्त बना दिया है। वोट की राजनीति के चलते देश के जीवन में जातिवाद, संप्रदायवाद का जहर घोला जा रहा है। मुनाफाखोरी और भ्रष्ट राजनीति से लोगों को घुटन हो रही है।

९.२.२ भावार्थ/कथ्य –

जहर के बारे में कुछ बेतरतीब पंक्तियाँ

इस कविता में व्यवस्था में व्याप्त भ्रष्टाचार और मूल्यहीनता पर चिंता व्यक्त की गई है। राजनीतिक क्षेत्र में मूल्यों का पतन अधिक हुआ है। भ्रष्ट राजनीति और मुनाफाखोरी में साट-गाँठ है। राजनीति सेवा के लिए नहीं, स्वार्थपूर्ति में सहायक है। मूल्यहीनता के कारण देश का जीवन विषाक्त हो गया है। लाभ और स्वार्थ-साधना जीवन का लक्ष्य है। देश को मूल्यहीनता में जीने की आदत हो गई है।

राजेश जोशी ने भिन्न-भिन्न प्रकार जहरों की व्यंग्यात्मक चर्चा की है। जहर के बारे में एक जानकारी यह है कि उसका उपयोग दवाओं में और उपचारों में होता है। इससे जहर के खतरनाक प्रभावों को लेकर मन में भय और सनसनी नहीं होती है। इसी तरह हम सरकार की गलत आर्थिक नीतियों से चकित और भयभीत नहीं होते हैं। कुछ लोग जहर का उपयोग कर के आत्महत्या करते हैं। इससे अधिक खतरनाक जहर वह है जो मुनाफा खोरों द्वारा रोजमर्रा की उपयोग की वस्तुओं में मिलाया जा रहा है। राजनीतिक-सामाजिक व्यवस्था में व्याप्त जहर ने हमसे हमारी आजादी छीन ली है। व्यवस्था में बैठे कुछ लोगों ने अपने लाभ के लिए वातावरण में जहर घोल दिया है। नेता ऐसे कामों में अधिक कुशल हैं। नेता देश सेवा के नाम पर लोगों का जीवन विषाक्त बनाते हैं। यह कार्य नेताओं की आदत में शामिल हो चुका है। लोगों को नेताओं से प्राप्त जहरीली आत्मीयता बड़ी लुभावनी, मोहक लगती है।

हिंसा की उत्तेजना बड़ा प्रभावकारी जहर है। यह साँप और विच्छू के जहर को मात देता है। हिंसा की उत्तेजना समाज के लिए विष का काम करती है, लेकिन यह विष के रूप में नहीं दी जाती है।

९.२.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण –

कुछ जहर एक सनसनी की तरह चढ़ते और दौड़ते हैं बदन में

हिंसा की उत्तेजना

साँप और बिच्छू को मात कर सकती है हजार बार

बहर हाल जहर धीमा हो या तेज

वह अपना काम जरूर करता है

एक न एक दिन।

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ राजेश जोशी रचित 'जहर के बारे में कुछ बेतरतीब पंक्तियाँ' से उद्धृत हैं।

प्रसंग - इन पंक्तियों में स्वार्थ के लिए फैलाई गई हिंसा की उत्तेजना को सबसे अधिक खतरनाक जहर बतलाया गया है।

व्याख्या - मूल्यहीनता के कारण देश का जीवन जहरीला हो गया है। जहर कई तरह के होते हैं। वे कम या ज्यादा प्रभावकारी होते हैं। हमारे उपयोग की वस्तुओं में मुनाफाखोर मिलावट का जहर मिलाते हैं। राजनीतिक और धार्मिक सत्ता के लोभी व्यक्ति अपनी बातों से सांप्रदायिकता का जहर फैलाते हैं। सत्ता लोभी व्यक्ति यह काम लोगों का शुभेच्छु बन कर करता है। सांप्रदायिक या राजनीतिक हिंसा की उत्तेजना बड़ी खतरनाक है। यह जहर साँप और बिच्छू को भी मात करता है। सत्ता लोभी व्यक्ति शुभेच्छु बन कर ही समाज को हिंसा का जहर देते हैं।

विशेष - (१) मानवमूल्यों के पतन पर चिंता व्यक्त है।

(२) कविता का विषय सामायिक है। इससे प्रति दिन हमारा सामना होता है।

(३) सत्ता लोभी प्रवृत्तियों पर व्यंग्य किया गया है।

९.२.४ बोध प्रश्न –

(१) 'जहर के बारे में कुछ बेतरतीब पंक्तियाँ' कविता में भ्रष्ट व्यवस्था पर किस तरह प्रहार किया है?

(२) कविता में व्यवस्था में व्याप्त मूलहीनता पर क्या व्यंग्य किया गया है?

(३) 'जहर के बारे में कुछ बेहतरतीब पंक्तियाँ' का भावार्थ लिखिए।

९.२.५ वस्तुनिष्ठ/लघुत्तरी प्रश्न –

(१) जहर किस काम में प्रयुक्त होता है?

उत्तर - जहर औषधियों के निर्माण और उपचार के काम में प्रयुक्त होता है।

(२) कवि किन लोगों का जिक्र मुल्तवी रखने को कहता है?

उत्तर - जहर का उपयोग कर दुनिया से कूच करने वाले लोगों का जिक्र कवि मुल्तवी रखने को कहता है।

(३) जहर के बारे में अच्छी जानकारी किसे है?

उत्तर - सत्ता को जहर के बारे में अच्छी जानकारी है।

(४) जहर के उपयोग में हुनरमंद कौन हैं?

उत्तर - जहर का उपयोग करने में सत्ताएँ बहुत हुनरमंद हैं।

(५) धीमे जहर की क्या तासीर होती है?

उत्तर - धीमा जहर जीवन को बहुत धीरे-धीरे खत्म करता है।

(६) हमारी भाषा में कड़वे को क्या कहने का चलन है?

उत्तर - हमारी भाषा में कड़वे को जहर कहने का चलन है।

(७) हिंसा की उत्तेजना किसे मात कर सकती है?

उत्तर - हिंसा की उत्तेजना साँप और बिच्छू को मात कर सकती है।

९.३ अरुण कमल

अरुण कमल का जन्म नासरीगंज, बिहार में हुआ। उनकी चार कविता पुस्तकें - अपनी केवल धार, सबूत, नये इलाके में, पुतली में संसार तथा एक आलोचना-पुस्तक-'कविता और समय' प्रकाशित हैं। उन्होंने पत्र-पत्रिकाओं में स्तंभ लेखन किया है। उन्हें 'नये इलाके में' पुस्तक के लिए १९९८ का साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला है।

९.३.१ प्रस्तावना -

'पृथ्वी किसलिए घूमती रही' में नारियों के उपेक्षित, अभावमय और अंधविश्वासग्रस्त जीवन का वर्णन है। कवि चाहता है कि नारियाँ अंधविश्वासों से मुक्त हों। उसका मानना है कि नारियाँ संघर्ष से ही अपने जीवन को समृद्ध-सुखी बना सकती हैं।

९.३.२ भावार्थ/कथ्य - पृथ्वी किसलिए घूमती रही

सामाजिक व्यवस्था में नारियों को व्यक्तित्व-विकास के अवसरों से वंचित रखा गया, इसलिए वे आर्थिक क्षेत्र में असमर्थ बन गईं। अभावमयता के कारण वे अपने जीवन-याापन के लिए पुरुषों पर आश्रित हुईं तथा अंधविश्वासग्रस्त हो गईं। वे अपनी छोटी-छोटी इच्छाओं की पूर्ति के लिए भगवान की ओर ताकने लगीं।

जिन स्त्रियों को जीवन में दो वक्त का भोजन भी नसीब नहीं होता है, वे छप्पन प्रकार के भोजन का गीत गाती हैं। जिनके बच्चे शिक्षा से वंचित हैं, वे शिक्षित बेटों और दामादों के गीत गाती हैं। उनका जीवन निराशा के अंधकार से घिरा है, वे जीवन में सुख-समृद्धि के प्रकाश की कामना करती हैं। इस सब को पाने के लिए वे खुद पर नहीं, भगवान पर आश्रित हैं। इन्हें पाने के लिए उनमें आत्मविश्वास और संघर्ष का अभाव है। कवि चाहता है कि वे इच्छाओं की पूर्ति के लिए स्वयं संघर्ष करें, अपना आत्मविश्वास जागृत करें। पृथ्वी अपने पूरे जीवन काल में सूर्य के चारों ओर घूमती रही, फिर भी उसे कुछ नहीं मिला। कवि चाहता है कि नारियाँ अंध-धार्मिकता से मुक्त हों। उनकी इच्छाएँ इसी धरती पर उनके द्वारा सपन्न होंगी।

९.३.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण –

इतनी प्रार्थनाएँ

कोई देवी-देव नहीं, कोई सूर्यदेव नहीं

तुम्हीं से पूरी होंगी सारी इच्छाएँ

यहीं इसी धरती पर मिलते हैं

छप्पन व्यंजन

पढ़ेलिखे बेटे-दामाद

और सुख भरा जीवन।

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ अरुण कमल रचित 'पृथ्वी किसलिए घूमती रही' से ली गई हैं।

प्रसंग - इन पंक्तियों में नारियों की अभावमयता, धार्मिक-अंधविश्वासग्रस्तता असमर्थता तथा पराश्रितता का वर्णन है। वे जीवन-यापन के लिए पुरुष या भगवान पर निर्भर हैं।

व्याख्या - समाज ने नारियों को व्यक्तित्व विकास की सुविधाओं से दूर रखा, इसलिए उनका बौद्धिक विकास नहीं हो सका। वे आर्थिक रूप से असमर्थ बन जाती हैं। उनका जीवन अभावग्रस्त और पराश्रित हो जाता है। वे अपनी छोटी-छोटी इच्छाओं के लिए पुरुष और ईश्वर पर निर्भर होती हैं। उनमें संघर्ष के लिए आत्मबल नहीं रहता। कवि नारियों को पृथ्वी की तरह न बनने का सुझाव देता है। पृथ्वी सूर्य को महान मानकर उसके चारों तरफ घूमती रही और उसे कुछ नहीं मिला। नारियाँ भगवान का भरोशा छोड़कर जीवन को समृद्ध बनाने के लिए खुद संघर्ष करें।

विशेष - (१) नारियों की अभावमयता को लेकर सामाजिक व्यवस्था पर व्यंग्य किया गया है।

(२) बौद्धिक विकास न होने से वे अंधविश्वासग्रस्त हो जाती हैं।

(३) नारियों को जागृत करने का संदेश व्यक्त हुआ है।

९.३.४ बोध प्रश्न –

(१) 'पृथ्वी किसलिए घूमती रही' में नारियों की दयनीय स्थिति का कैसा चित्रण हुआ है?

(२) अरुण कमल ने नारियों को सुखी-संपन्न बनने केलिए क्या सुझाव दिया है?

(३) 'पृथ्वी किसलिए घूमती रही' कविता का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

९.३.५ वस्तुनिष्ठ/लघुत्तरी प्रश्न –

(१) दो जून का भोजन किसे नहीं मिला?

उत्तर - औरतों को दो जून का भोजन नहीं मिला।

(२) औरतें गीत में क्या माँगती हैं?

उत्तर - औरतें गीत में छप्पन व्यंजन और पढ़े-लिखे दामाद माँगती हैं।

(३) सूर्य के चारों ओर जीवन भर कौन घूमती रही?

उत्तर - पृथ्वी जीवन भर सूर्य के चारों ओर घूमती रही।

(४) औरतों की सबसे बड़ी इच्छा क्या है?

उत्तर - औरतों की सबसे बड़ी इच्छा भरपेट भोजन प्राप्त करना है।

९.४ मंगलेश डबराल

कवि मंगलेश डबराल का जन्म टिहरी गढ़वाल जिले के काफलपानी गाँव में हुआ। डबराल जी पत्रकारिता और संपादन से जुड़े रहे हैं। उन्होंने 'अमृत प्रभात' और दैनिक 'जनसत्ता' के संपादकीय विभाग में कार्य किया है। उनके चार कविता संग्रह - पहाड़ पर लालटेन, घर का रास्ता, हम जो देखते हैं और आवाज भी एक जगह है - प्रकाशित हो चुके हैं। इनकी कविताओं का कई विदेशी भाषाओं में अनुवाद प्रकाशित हुआ है। 'हम जो देखते हैं' के लिए उन्हें साहित्य अकादमी का पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

९.४.१ प्रस्तावना –

'पहाड़ पर लालटेन' कविता में पहाड़ और जंगल के लोगों के दुख, शोषण, आक्रोश आदि का वर्णन है। असुविधाओं और शोषण में पिसते हुए वहाँ के लोग अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए संघर्ष करते हैं, लेकिन अपने परंपरागत जीवन और संस्कृति की रक्षा कर पाने में असमर्थ हैं। अपने शोषित और अभावपूर्ण विगत जीवन को लेकर उनमें आक्रोश है।

९.४.२ भावार्थ/कथ्य पहाड़ पर लालटेन –

इस कविता में पहाड़ और जंगल के शोषित, दयनीय जीवन पर कवि की चिंता व्यक्त हुई है। वहाँ के लागों का जीवन असुविधाओं से भरा है। वे जीविका के लिए कठिन संघर्ष करते हैं, फिर भी असफल रहते हैं। जंगल में औरतें लकड़ियों के बोझ जुटाने में मरती हैं। लड़के कुपोषण में असमय मृत्यु को प्राप्त होते हैं। नंगे पैर चलते हुए बूढ़े भूखे होने से मौत के मुँह में समा जाते हैं। पहाड़ पर जीविका जुटाने में लोगों का जीवन मिट जाता है। तपती हुई पहाड़ियों में भूख की पीड़ा के साथ वे जीने के लिए अभिशप्त है। व्यवस्था की उपेक्षा सहते हुए भी उनमें संस्कृति और परंपरा के प्रति मोह है। वे शोषण को लेकर सतर्क हो रहे हैं। वे शोषित विगत जीवन के बारे में सोचते हैं। उनकी निःस्वप्न आँखों में सैकड़ों वर्षों का दुख बर्फ की तरह जमा है। शोषण से उत्पन्न अभावग्रस्त जीवन अब शब्दों में व्यक्त होता है। शोषण के विरुद्ध उनमें संघर्ष-चेतना जागृत होती है। वे गिरवी रखे खेत, स्त्रियों के बिके गहने, भूख-बाढ़-महामाणी से मरे हुए लोगों के बारे में सोचकर व्यवस्था-परिवर्तन के लिए प्रस्तुत होते हैं। कवि उन्हें व्यवस्था के विरुद्ध संघर्ष के लिए प्रेरित करता है।

९.४.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण –

देखो भूख से बाढ़ से महामारी से मरे हुए

सारे लोग उभर आए हैं चट्टानों से

दोनों हाथों से बेशुमार बर्फ झाड़कर

अपनी भूख को देखो

जो एक मुस्तैद पंजे में बदल रही है

जंगल से लगातार एक दहाड़ आ रही है

और इच्छाएँ दाँत पैने कर रही हैं

पत्थरों पर।

संदर्भ - प्रस्तुत अवतरण 'पहाड़ पर लालटेन' से उद्धृत है। इसके रचयिता कवि मंगलेश डबराल हैं।

प्रसंग - इसमें कवि ने पहाड़ के शोषित जीवन का वर्णन किया है। व्यवस्था से उपेक्षित उनका जीवन दुख-भरा है। वे अस्तित्व रक्षा के लिए असफल प्रयास करते हैं। अब उनका अधिकार बोध जागृत हुआ है। उनका आक्रोश क्रांति के लिए प्रस्तुत होता है।

व्याख्या - व्यवस्था से उपेक्षित पहाड़ के लोगों का जीवन कठिन है। वे लोग अभावग्रस्त जीवन व्यतीत करते हैं। उन पर शोषण और प्रकृति की मार पड़ती है। जब अभाव और शोषण चरम पर पहुँचता है, वे अपने विगत जीवन के बारे में सोचने के लिए विवश होते हैं। शोषण और व्यवस्था की उपेक्षा के चलते उनके खेत गिरवी रखे गये, स्त्रियों के शरीर से गहने बिक गए। भूख और महामारी से लोग मारे गये। विगत दुख भरे जीवन को याद कर उनका मन आक्रोश से भर जाता है। अब वे भूख और शोषण से मुक्ति, अधिकार प्राप्ति और अतृप्त इच्छाएँ पूरी करने हेतु संघर्ष के लिए प्रस्तुत हो रहे हैं।

विशेष - (१) पहाड़ के शोषित जीवन के प्रति सहानुभूति व्यक्त हुई है।

(२) कविता में कवि की सामाजिक प्रतिबद्धता चित्रित है।

(३) इसमें विषमता पर आधारित व्यवस्था के परिवर्तन का संदेश व्यक्त हुआ है।

९.४.४ बोध प्रश्न –

(१) 'पहाड़ पर लालटेन' कविता के आधार पर पहाड़ के लोगों की संघर्ष भावना पर प्रकाश डालिए।

(२) 'पहाड़ पर लालटेन' में पहाड़ी लोगों के दुखों का कैसा वर्णन हुआ है?

९.५ वस्तुनिष्ठ/लघुत्तरी प्रश्न

(१) जंगल में लकड़ियों के गट्ठर के नीचे कौन बेहोश है?

उत्तर - लकड़ियों के गट्ठर के नीचे औरतें बेहोश हैं।

(२) जंगल में असमय कौन दफनाए जाते हैं?

उत्तर - जंगल में असमय बच्चे दफनाए जाते हैं।

(३) जंगल में नंगे पैर कौन चलते हैं?

उत्तर - जंगल में नंगे पैर बूढ़े चलते हैं।

(४) जंगल में लगातार क्या चल रही हैं?

उत्तर - जंगल में लगातार कुल्हाड़ियाँ चल रही हैं।

(५) जंगल में रातोंरात कौन नंगे होते हैं?

उत्तर - अगले मौसम तक पहुँचते पेड़ रातोंरात नंगे होते हैं।

(६) एक विशाल चक्के की तरह क्या घूमता है?

उत्तर - आसमान एक विशाल चक्के की तरह घूमता है।

(७) बर्फ की तरह कौन जमती जाती हैं?

उत्तर - सारे वर्ष, सारी सदियाँ बर्फ की तरह जमती जाती हैं।

(८) अकाल के दिनों की तरह क्या बिखरे हैं?

उत्तर - लाचार शब्द अकाल के दानों की तरह बिखरे हैं।

(९) पहाड़ पर लालटेन किस तरह जलती है?

उत्तर - पहाड़ पर लालटेन एक तेज आँख की तरह जलती है।

(१०) पहाड़ के लोगों की भूख किसमें बदल रही है?

उत्तर - पहाड़ के लोगों भूख मुस्तैद पंजे में बदल रही है।

■■■■■

१०

काव्य गौरव

कवि : १. चंद्रकांत देवताले २. ओमप्रकाश वाल्मीकि

३. अनामिका ४. कात्यायनी

इकाई की रूपरेखा :

१०.० उद्देश्य

१०.१ चंद्रकांत देवताले

१०.१.१ प्रस्तावना

१०.१.२ भावार्थ/कथ्य

१०.१.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण

१०.१.४ बोध प्रश्न

१०.१.५ वस्तुनिष्ठ/लघुत्तरी प्रश्न

१०.२ ओमप्रकाश वाल्मीकि

१०.२.१ प्रस्तावना

१०.२.२ भावार्थ/कथ्य

१०.२.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण

१०.२.४ बोध प्रश्न

१०.२.५ वस्तुनिष्ठ/लघुत्तरी प्रश्न

१०.३ अनामिका

१०.३.१ प्रस्तावना

१०.३.२ भावार्थ/कथ्य

१०.३.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण

१०.३.४ बोध प्रश्न

१०.३.५ वस्तुनिष्ठ/लघुत्तरी प्रश्न

१०.४ कात्यायनी

१०.४.१ प्रस्तावना

१०.४.२ भावार्थ/कथ्य

१०.४.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण

१०.४.४ बोध प्रश्न

१०.४.५ वस्तुनिष्ठ/लघुत्तरी प्रश्न

१०.० उद्देश्य

इस इकाई में चार कविताओं-क्षमाप्रार्थी हों कविगण, लेखा-जोखा, स्त्रियाँ और खेलती लड़कियाँ -

- की विवेचना की गई है। इससे आप
- चारों कविताओं का भावार्थ समझ सकेंगे।
- कविता से चुने अंश की व्याख्या कर सकेंगे।
- कविता से संबंधित बोध प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे।
- वस्तुनिष्ठ/लघुत्तरी प्रश्नों के उत्तर दे सकेंगे।

१०.१ चंद्रकांत देवताले

परिचय - कवि देवताले जी का जन्म ७ नवंबर १९३६ को जौलखेड़ा, मध्यप्रदेश में हुआ। उन्होंने एम.ए., पी.एच.डी. तक शिक्षा प्राप्त की। उनकी प्रमुख रचनाएँ - दीवारों पर खून से, लकड़बग्घा हँस रहा है, भूखंड तप रहा है, आग हर चीज में बताई गई थी - आदि हैं। मुक्ति बोध : कविता और जीवन विवेक उनकी समीक्षा-पुस्तक है। समकालीन साहित्य के बारे में अनेक लेख, शोध-पत्र तथा टिप्पणियाँ प्रकाशित हैं। उनकी कविताओं का अनुवाद भारतीय और विदेशी भाषाओं में हुआ है। वे 'मुक्तिबोध फैलोशिप' तथा 'माखनलाल चतुर्वेदी कविता पुरस्कार' से सम्मानित हुए हैं।

१०.१.१ प्रस्तावना -

'क्षमाप्रार्थी हों कविगण' में मनुष्य की स्वार्थी प्रवृत्ति पर प्रहार किया गया है। स्वार्थ को पूरा करने के लिए मनुष्य खुशामद, धूर्तता, कपट, हिंसा आदि का सहारा लेता है। इस कार्य में उसका चरित्र अत्यंत पतित बन जाता है। इस कविता में अमानवीय प्रवृत्ति का व्यंग्यात्मक चित्रण मिलता है।

१०.१.२ भावार्थ/कथ्य -

क्षमाप्रार्थी हों कविगण

मनुष्य भौतिक क्षेत्र में बहुत आगे बढ़ना चाहता है। सुख-सुविधा के सभी भौतिक साधन वह प्राप्त करना चाहता है। भौतिक साधनों को जुटाने के लिए उसने मानव-मूल्यों को छोड़ दिया है। मानव-मूल्यों की उपेक्षा करने में उसका चरित्र जानवरों से अधिक गिर गया है। ऐसे मूल्यहीन मनुष्यों के चरित्र को कविता में व्यक्त करना बहुत कठिन कार्य है। भौतिक सुविधाओं को जुटाने में मनुष्य खुशामदी, धूर्त, लालची, कपटी और हिंसक बना है। कवि और पुरानी पीढ़ी के लोग मनुष्य के चरित्र को सुंदर ढंग से व्यक्त करने के लिए उसकी तुलना पशुओं से की है। लेकिन मनुष्य में स्वार्थ आदि दुर्गुण पशुओं से अधिक है। इन दुर्गुणों को लेकर अपनी तुलना मनुष्यों से किये जाने पर पशु भी शर्मिंदा हैं।

अपने स्वार्थ-पूर्ति के लिए मनुष्य अपनों के साथ घात करता है, इसके लिए दृढ़ रहता है। यह दुर्गुण उसने स्वयं सीखा। कोई भेड़िया उसे शिक्षा देने नहीं आया। सियार ने मनुष्य को गूँगे और कायर बनने का प्रशिक्षण नहीं दिया। लाभ के लिए रंग बदलने में मनुष्य ने गिरगिट को पराजित किया। विरोधों से दूर भागने में उसे केंचुए से प्रशिक्षण नहीं मिला। उल्टी गंगा बह रही है। इन दुर्गुणों में आज के मनुष्य ने जीव-जंतुओं को मात कर दिया है। अपनी तुलना मनुष्यों से किये जाने पर पशु शर्मिंदा हैं, वे मूल्य-रहित मनुष्य-आचरण को धिक्कारते हैं। तुलना करके पशु-चरित्र का अवमूल्यन करने के लिए कविगण को क्षमाप्रार्थी होना चाहिए।

१०.१.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण –

धरती का रस निचोड़ने में

खुशामदी लालची धूर्त कपटी और हिंसक

चरित्र को उजागर करने

कवियों और पुरखों ने मदद ली

जीव-जंतुओां के गुण-धर्मों से

छोटे-मोटों की क्या बिसात

हाथी-घोड़ों तक का कद छोटा हुआ ।

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ 'क्षमाप्रार्थी हों कविगण' से ली गई हैं। इसके रचयिता कवि चंद्रकांत देवताले हैं।

प्रसंग - स्वार्थ-पूर्ति के लिए मनुष्य का आचरण पतित हुआ है। इसके लिए उसने मूल्यों को छोड़ दिया है। यहाँ मनुष्य की स्वार्थ-प्रवृत्ति पर व्यंग्य किया गया है।

व्याख्या - भौतिक-क्षेत्र में आज मनुष्य अंधा हो गया है। भौतिक समृद्धि के लिए उसने मूल्यों को खो दिया है। भौतिक सुविधाओं को जुटाने के लिए वह दूसरों की चापलूसी करता है। लाभ के लिए वह धूर्त, कपटी और हिंसक आचरण करता है। मनुष्य के दुर्गुणों को स्पष्ट करने के लिए प्राचीन कवि और पुरखे पशुओं के गुण-धर्मों से सहायता लेते थे। लेकिन आज व्यक्ति भौतिक-समृद्धि के लिए पशु से भी अधिक मूल्य-रहित हो गया है। खुशामद, लालच, कपट, धूर्तता और हिंसा के क्षेत्र में उसने पशुओं को पीछे छोड़ दिया है। आदमी के गुण-धर्म की तुलना के लिए हाथी-घोड़ों का कद छोटा पड़ता है।

विशेष - (१) इसमें भौतिक-समृद्धि के मूल्यरहित आचरण पर व्यंग्य किया गया है।

(२) मानव-मूल्यों की उपेक्षा पर कवि की चिंता व्यक्त हुई है।

(३) कवि की दृष्टि में वास्तविक प्रगति के लिए मूल्यों की रक्षा आवश्यक है।

१०.१.४ बोध प्रश्न –

(१) कविगण को क्षमाप्रार्थी क्यों होना चाहिए?

(२) 'क्षमाप्रार्थी हों कविगण' का व्यंग्य स्पष्ट कीजिए।

(३) मानवमूल्यों की उपेक्षा पर कवि की चिंता पर प्रकाश डालिए।

१०.१.५ वस्तुनिष्ठ/लघुत्तरी प्रश्न –

(१) रंग बदलने को लेकर मनुष्य की तुलना किससे की जाती है?

उत्तर - रंग बदलने को लेकर मनुष्य की तुलना गिरगिट से की जाती है।

(२) कौन पशु अपनों पर ही घात करता है?

उत्तर - भेड़िया अपनों पर घात करता है।

(३) जीव-जंतु जगत किसके आचरण पर लानत भेजते हैं?

उत्तर - जीव-जंतु जगत मनुष्य के आचरण पर लानत भेजते हैं।

(४) मनुष्य से तुलना किये गये जाने पर कौन शर्मिंदगी महसूस करते हैं?

उत्तर - जीव-जंतु शर्मिंदगी महसूस करते हैं।

१०.२ ओमप्रकाश वाल्मीकि

परिचय - कवि ओमप्रकाश वाल्मीकि का जन्म ३० जून, १९५० को बरला, जिला-मुजफ्फर नगर में हुआ। उन्होंने एम.ए. (हिंदी) तक शिक्षा प्राप्त की है। सदियों का संताप, बस्स! बहुत हो चुका - कवितासंग्रह प्रकाशित हैं। उनकी आत्मकथा 'जूठन' का कई देशी-विदेशी भाषाओं में अनुवाद हुआ है। वे 'डॉ. अंबेडकर राष्ट्रीय पुरस्कार' से सम्मानित हुए हैं।

१०.२.१ प्रस्तावना –

'लेखा-जोखा' में व्यवस्था-विरोध का स्वर व्यक्त हुआ है। व्यवस्था के अंतर्गत दलित उपेक्षित जीवन जीने को विवश हुए हैं। उन्हें सुख-सुविधाओं से वंचित रखा गया है। इसमें दलितों के उपेक्षित, दयनीय जीवन को लेकर कवि की पीड़ा अभिव्यक्त हुई है।

१०.२.२ भावार्थ/कथ्य –

'लेखा-जोखा' इस कविता में आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक व्यवस्था के अंतर्गत दलितों के उपेक्षित जीवन का मार्मिक वर्णन हुआ है। व्यवस्था के अंतर्गत उनके साथ षड्यंत्र हुआ है। जाति-व्यवस्था के चलते उनका अमानवीय शोषण किया गया है। उन्हें जीविका के आर्थिक-आधार से वंचित रखा गया। उत्पादन में उनका सर्वाधिक योगदान होने के बावजूद उन्हें उपभोग से दूर रखा गया। उनके परिश्रम का उचित मूल्य उन्हें नहीं मिला। वे पसीना बहाकर फसलें उगाते थे, पेड़ लगाते थे लेकिन उसके उपभोग से वे दूर रखे जाते थे वे नहर के रेत मिश्रित गंदे पानी से प्यास बुझाने के लिए विवश थे। अपनी स्थिति में परिवर्तन के लिए उन्होंने मंदिर से बाहर खड़े रहकर भगवान से प्रार्थना की। इसके लिए उन्होंने ब्राह्मणों की दुत्कार सही। उनके लिए मंदिर का दरवाजा नहीं खुला, देवता से न्याय नहीं मिल सका।

कवि का बचपन बीता, बड़ा हुआ, मतदान का अधिकारी बना, मतदाता सूची में नाम लिखाया। उसने मतदान करके लोक तांत्रिक व्यसस्था से न्याय और अधिकार की उम्मीद की, लेकिन राजनीतिक व्यवस्था से भी उन्हें न्याय नहीं मिला। उनके साथ षड्यंत्र किया गया। सत्ता

प्राप्त किए हुए लोग अपने स्वार्थ पूरा करने में व्यस्त हो गये। राजनीतिक लोकतांत्रिक व्यवस्था में दलितों में स्थिति परिवर्तन का विश्वास नहीं जगा। राजनीतिक व्यवस्था ने भी उनके साथ छल किया।

१०.२.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण –

शिवालय के दरवाजे से दूर

खड़े होकर माँगी मन्नतें

सही दुत्कार बामन की

यह सोचकर –

कभी तो खुलेगा दरवाजा

अपने लिए भी

भीतर सोया देवता

जागेगा किसी रोज

पी जाएगा समूचा विष

बाहर आकर ।

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ कवि ओमप्रकाश वाल्मीकि द्वारा रचित 'लेखा-जोखा' से ली गई हैं।

व्याख्या - सामाजिक व्यवस्था में दलितों का बहुत शोषण हुआ है। उत्पादन में उनका महत्वपूर्ण योगदान होने के बावजूद वे हाशिये पर फेंक दिये गए थे। समाज के उच्च-वर्ण के लोग उन्हें छूना भी पसंद नहीं करते थे धार्मिक स्थानों पर उन्हें प्रवेश नहीं मिलता था। समाज उनके साथ अमानवीय व्यवहार करता था। उन्हीं दलितों में कवि की भी अनुभूति शामिल है। अपनी स्थिति में परिवर्तन लाने की इच्छा से कवि भगवान से प्रार्थना है। इसके लिए वह शिवालय के दरवाजे से दूर खड़ा होता है। मंदिर का ब्राह्मण उसे दुत्कारता है। वह इस आशा में प्रार्थना करता है कि मंदिर का दरवाजा खुलेगा, देवता बाहर आकर उसे न्याय, सम्मान और अधिकार देगा। उसे मिल रहे सामाजिक अपमान का जहर पी जाएगा। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। उसे अपमान से मुक्ति नहीं मिली। इसके साथ ही दलित का आर्थिक और राजनीतिक शोषण हुआ। उनके साथ छल किया गया।

१०.२.४ बोध प्रश्न –

(१) 'लेखा-जोखा' कविता के आधार पर दलितों के शोषित जीवन पर प्रकाश डालिए।

(२) 'लेखा-जोखा' में दलितों के साथ किस तरह के षड्यंत्र का वर्णन हुआ है?

१०.२.५ वस्तुनिष्ठ/लघुत्तरी प्रश्न –

(१) कवि ने फसलें किस तरह उगाई?

उत्तर - कवि ने पसीना मिश्रित जल से सींचकर फसलें उगाई।

(२) कवि ने अपनी प्यास कैसे बुझाई?

उत्तर - कविने रजबाहे की नालियों के गंगाजल से प्यास बुझाई।

(३) कवि ने कहाँ खड़े होकर मन्नतें माँगी?

उत्तर - शिवालय के दरवाजे से, दूर खड़े होकर कवि ने मन्नतें माँगी।

(४) कवि ने मतदाता-सूची में कब नाम लिखाया?

उत्तर - बालिग होने पर कवि ने मतदाता-सूची में नाम लिखाया।

(५) 'लेखा-जोखा' में कौन अधमरा है?

उत्तर - 'लेखा-जोखा' में लोकतंत्र अधमरा है।

१०.३ अनामिका

परिचय - अनामिका जी का जन्म १७ अगस्त १९६१ को मुजफ्फरपुर, बिहार में हुआ। उन्होंने अंग्रेजी विषय में एम.ए., पीएच.डी. उपाधि प्राप्त की। गलत पते की चिट्ठी, बीजाक्षर, खुरदुरी हथेलियाँ, कविता में औरत--उनके प्रमुख कविता संग्रह हैं। अवांतर कथा, दस द्वारे का पिंजरा और तिनका तिनके पास–उनके प्रकाशित उप्यास हैं। उन्होंने निबंध और समीक्षा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण कार्य किया है। वे राष्ट्रभाषा परिषद पुरस्कार, भारतभूषण अग्रवाल पुरस्कार, गिरिजकुमार माथुर पुरस्कार प्राप्त कर चुकी है।

१०.३.१ प्रस्तावना –

'स्त्रियाँ' कविता में नारियों के उपेक्षित जीवन का वर्णन हुआ है। परिवार और समाज ने नारियों को व्यक्तित्व विकास का अवसर नहीं दिया। उन्हें अवांछित वस्तु के समान नापसंद किया गया। उनकी इच्छा है कि सामाजिक व्यवस्था और सोच में परिवर्तन हो, स्थितियाँ उनके अनुकूल बनें। उन्हें आगे बढ़ने का अवसर मिले। स्त्रियों की इस स्वाभाविक इच्छा पर उनके चरित्र और प्रतिभा पर संदेह व्यक्त किया जाता है।

१०.३.२ भावार्थ/कथ्य –

'स्त्रियाँ' कविता में नारियाँ अपनी दयनीय स्थिति पर असंतोष प्रकट करती हैं। पारिवारिक-सामाजिक व्यवस्थाएँ उनके प्रतिकूल रही हैं। इससे उनका व्यक्तित्व विकास बाधित हुआ। बौद्धिक विकास न होने से उनकी आर्थिक स्थिति दयनीय बनी । जीवन-यावन के लिए वे पुरुषों पर आश्रित हुईं। वे उपेक्षित जीवन बिताने के लिए अभिशप्त हैं। स्त्रियों की प्रगति और सुख-समृद्धि पर परिवार ध्यान नहीं देता है। उनका जीवन बच्चों की फटी कॉपियों के कागज की तरह व्यर्थ समझा गया, जिससे चनाजोर गरम का लिफाफा बनाया जाता है। परिवार ने स्त्रियों को, नींद में बाधक अलार्म की आवाज के बाद कलाई घड़ी के समान देखा। परिवार लड़कियों की बात ध्यान से नहीं सुनता है। भरी बस में सस्ते कैसेटों पर जिस तरह फिल्मी गीत सुने जाते हैं, वैसे ही स्त्रियों की बातें सुनी जाती हैं। उनके दुख और पीड़ा से परिवार अप्रभावित रहता है, जैसे वे दूरके रिश्तेदार हैं।

स्त्रयाँ अपनी दयनीय स्थिति को लेकर असंतोष प्रकट करती हैं। उनकी इच्छा है कि लोग उन्हें इंसान मानें। उनकी सुख-सुविधा पर ध्यान दें। उन्हें महत्व दें, जिस तरह नौकरी के विज्ञापन को महत्व देते हैं समाज के लिए स्त्रियाँ उसी तरह महत्वपूर्ण होती हैं, जिस तरह ठंड से परेशान व्यक्ति के लिए दूर जलती हुई आग होती है। उनकी बातें ध्यानपूर्वक अनहद नाद की तरह सुनी जाएँ। स्त्रियाँ चाहती हैं कि नई सीखी हुई भाषा की तरह उनके जीवन को समझा जाए। स्त्रियों की इन स्वाभाविक इच्छाओं पर समाज में अफवाहें फैलती हैं कि वे दुरचरित्र हैं। पुरुष-समाज में यह मत बना है कि सुखी-समृद्ध और आवारा महिलाओं की ही आदत कविता-कहानी लिखना है। यह भी अफवाह फैलाई जाती है कि यह साहित्य उनका नहीं, किसी पुरुष का लिखा हुआ है। इस कविता में अपनी स्थिति को लेकर नारी का असंतोष व्यक्त हुआ है।

१०.३.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण –

खाती-पीती, सुख से ऊबी

और बेकार बेचैन, आवारा महिलाओं का ही

शगल हैं ये कहानियाँ और कविताएँ.....

फिर ये उन्होंने थोड़े ही लिखी हैं

(कनखियाँ, इशारे, फिर कनखी) .....

बाकी कहानी बस कनखी है ।

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ 'काव्य गौरव' में संकलित 'स्त्रियाँ' कविता से ली गई हैं। इस कविता की रचयिता अनामिका जी हैं। यह संकलन डॉ. रामदरश मिश्र द्वारा संपादित है।

व्याख्या - परिवार और समाज में स्त्रियों को बौद्धिक विकास से वंचित रखा जाता है, उन्हें प्रतिभा संपन्न बनने का अवसर ही नहीं मिलता है। यदि वे अपनी प्रतिभा का प्रकाशन करती हैं, न्याय-अधिकार और समानता की माँग करती हैं, समाज उनके चरित्र पर संदेह करता है, उन्हें चरित्र भ्रष्ट कहता है। समाज का मानना है कि सुखी-समृद्ध और आवारा महिलाओं का शौक है - कविता और कहानी लिखना। उनके लिए लिखना समय के बोझ से उबरने का एक साधन है। वे किसी पुरुष की कृपा प्राप्त कर के प्रतिभा वान बनी हैं। उसी पुरुष द्वारा रचित कविताएँ और कहानियाँ वे अपने नाम पर प्रकाशित करती हैं। समाज में ऐसी स्त्रियों के चरित्रभ्रष्ट होने की अफवाह फैलाई जाती है। यहाँ स्त्रियों को पीड़ा यह है कि समाज को उनकी प्रतिभा पर विश्वास नहीं है।

विशेष – (१) यहाँ स्त्रियों के शोषित जीवन पर चिंता व्यक्त की गई है।

(२) यह विश्वास व्यक्त किया गया है कि स्त्री पुरुष के समान ही प्रतिभा-संपन्न होती है।

१०.३.४ बोध प्रश्न –

(१) 'स्त्रियाँ' कविता में स्त्रियों के उपेक्षित जीवन का किस तरह वर्णन हुआ है ?

(२) 'स्त्रियाँ' कविता में स्त्रियों की क्या पीड़ा व्यक्त हुई है ?

(३) 'स्त्रियाँ कविता का केंद्रीय भाव स्पष्ट कीजिए ।

१०.३.५ वस्तुनिष्ठ/लघुत्तरी प्रश्न –

(१) स्त्रियों को किस तरह पढ़ा गया?

उत्तर - स्त्रियों को बच्चों की फटी कॉपियों के कागज की तरह पढ़ा गया।

(२) स्त्रियों को किस तरह देखा गया?

उत्तर - स्त्रियों को अलार्म बजने के बाद उनीद की स्थिति में कलाई घड़ी की तरह देखा गया।

(३) स्त्रियों को किस तरह सुना गया?

उत्तर - भरी बस में सस्ते कैसेटों पर फिल्मी गाने की तरह स्त्रियों को सुनाया गया।

(४) स्त्रियों की इच्छा किस तरह पढ़े जाने की है ?

उत्तर - स्त्रियों की इच्छा नौकरी के पहले विज्ञापन की तरह पढ़े जाने की है।

(५) स्त्रियाँ किस तरह सुनी जाना पसंद करती हैं?

उत्तर - स्त्रियाँ अनहद की तरह सुनी जाना पसंद करती हैं।

(६) कविताएँ और कहानियाँ किसका शगल हैं?

उत्तर - कहानियाँ और कविताएँ खाती-पीती, आवारा महिलाओं का शगल हैं।

(७) स्त्रियाँ किससे कहती हैं – अब हमें बख्शों।

उत्तर - स्त्रियाँ परम पुरुषों से कहती हैं - अब हमें बख्शो।

१०.४ कात्यायनी

परिचय - कात्यायनी का जन्म ९ मई १९५९ को गोरखपुर में हुआ। उनका संबंध पत्रकारिता से भी रहा है। वे सांस्कृतिक और नारी मोर्चों पर सक्रिय रही हैं। 'सात भाइयों के बीच चंपा' उनका प्रसिद्ध कविता-संग्रह है। उनके अन्य काव्य-संकलन-इस पौरुषपूर्ण समय में' तथा 'चेहरों पर आँच' हैं। उनकी कविताओं के अंग्रेजी, पंजाबी और मराठी में अनुवाद प्रकाशित हैं। 'दुर्ग द्वार पर दस्तक' नारी-प्रश्नविषयक लेखों का संकलन है।

१०.४.१ प्रस्तावना –

'हाकी खेलती लड़कियाँ' कविता में चारदीवारी में बंद लड़कियों की घुटन का वर्णन हुआ है। उन पर लगे हुए पारिवारिक-सामाजिक प्रतिबंध उनके शारीरिक, मानसिक विकास तथा स्वतंत्रता में बाधक सिद्ध हुए हैं। वे प्रतिबंधों से मुक्त, स्वतंत्र जीवन की कामना करती हैं। वे अपने विकास में परिवार और समाज से सहयोग चाहती हैं।

१०.४.२ भावार्थ/कथ्य –

'हाकी खेलती लड़कियाँ'

लड़कियाँ प्रतिबंधों में घुटती रहती हैं। वे प्रतिबंधों की अवहेलना करके स्वतंत्र होना

चाहती हैं, जिससे वे अपना शारीरिक-मानसिक विकास कर सकें। इस कार्य में वे परिवार-समाज का सहयोग चाहती हैं। लड़कियों का हाकी खेलना प्रतिबंधों से मुक्त होना है। वे हाकी खेलते हुए स्वतंत्रता का अनुभव करती हैं। वे प्रतिबंधों को भूल जाती हैं। वे हाथ में स्टिक लेकर हरी घास के मैदान पर बॉल के पीछे दौड़ती हैं। आज वे चूल्हे चक्की से दूर हैं। यह स्थिति देर तक नहीं रहती। घर पर वर पक्ष के लोग उन्हें देखने आए हैं। माताएँ उनके विवाह करके जिम्मेदारियों के बोझ से मुक्त होना चाहती हैं। बाबूजी दफ्तर से जल्दी घर आकर पकौड़ी और चाय से मेहमानों का स्वागत करते हुए बेटी की प्रतीक्षा कर रहे हैं। भाई अपनी बहनों को सुरक्षित घर ले आने के लिए चौराहे पर प्रतीक्षा करता है। चौराहे पर लड़कियों को मुहल्ले के लंपट लड़कों से खतरा है। लड़कियाँ इन प्रतिबंधों को भूलकर हॉकी खेलती हैं, वे गोल करने की खुशी में एक दूसरे के गले लगती हैं, चिल्लाती और चूमती हैं। वे परस्पर लिपट कर मैदान में गिरती हैं। लड़कियों के फाउल खेलने पर रेफरी उन्हें चेतावनी देता है। वे हँसते हुए चेतावनी की उपेक्षा करती हैं यहाँ पर तात्पर्य है कि लड़कियाँ प्रतिबंधों की अवहेलना करती हैं । वे हरी घास पर फिसलते हुए अपनी खुशी प्रकट करती हैं। वे मैदान में एक छोर से दूसरे छोर तक भागती हैं। लड़कियों की पुष्ट टांगे नृत्य करती हैं। उन्हें प्रतिबंध की चिंता नहीं है। वे इस बात की चिंता नहीं करतीं कि सास उनके बारे में क्या सोचेगी? वे खेलते हुए निडर, निर्द्वंद्व हैं। परंतु शाम होते ही उनकी सारी स्वतंत्रता समाप्त हो जाती है। खेल खत्म होने पर वे घर लौटती हैं। घर पर उन्हें प्रतिबंधों की भीषण से लड़ना होता है । यदि इस अवसर पर वेघर न लौटें तो समाज में तूफान आएगा। वरपक्ष के लोग नाराज होकर चले जाएंगे, बाबूजी मैदान में आकर लड़कियों के आचरण पर क्रोध प्रकट करेंगे, भाई झोंटा पकड़ कर उन्हें घर पर घसीट ले जायेगा। अम्मा उसे कुलच्छनी कहकर कोसेंगी। बाबूजी माँपर आरोप लगाएंगे कि लड़की को तुमने बिगाड़ा है। इस पर लड़कियों का जीवन फिर निराशा के अंधेरे में डूब जाएगा। लड़कियाँ सोचती हैं कि उनकी स्वतंत्रता में माँ सहयोग देगी। माँ सहानुभूतिपूर्वक उनके सिर सहलाएगी। वे सो जाएंगी और सपने में हाकी खेलते हुए स्वतंत्रता की अनुभूति करेंगी। कविता के अंत में संकेत है कि लड़कियों के लिए ऐसी स्वतंत्रता अभी सपना ही है। अथवा वे सोते-जागते और सपने में अपनी स्वतंत्रता की कामना करती हैं।

१०.४.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण –

घर पर बैठे
देखने आए वर पक्ष के लोग
पैर पटकते चले जाएंगे
बाबूजी घुस आएंगे गरजते हुए मैदान में
भाई दौड़ता हुआ आएगा।
और झोंटा पकड़कर
घसीट ले जाएगा
अम्मा कोसेगी –
'किस घड़ी में पैदा किया था
ऐसी कुलच्छनी बेटी!'

संदर्भ – प्रस्तुत पंक्तियाँ 'काव्य गौरव' में संकलित 'हाकी खेलती लड़कियाँ' से ली गई हैं। इस कविता की रचयिता कवयित्री कात्यायनी जी हैं।

यह संकलन डॉ. राम दरश मिश्र द्वारा संपादित है।

प्रसंग – इन पंक्तियों में कवयित्री कात्यायनी ने लड़कियों पर लगे प्रतिबंधों पर गहरी चिंता व्यक्त की है। इन प्रतिबंधों से उनके जीवन का विकास बाधित हुआ है। उनमें प्रतिबंधों की गुलामी से मुक्त होकर जीने की बड़ी इच्छा है।

व्याख्या – लड़कियों का जीवन पारिवारिक-सामाजिक प्रतिबंधों में बीतता है। वे चारदीवारी में घुटती रहती हैं। वे प्रतिबंधों से मुक्ति चाहती हैं। हाकी खेलने में उन्हें स्वतंत्रता का सुख मिलता है। वे हाथ में स्टिक लेकर मैदान में बॉल के पीछे निश्चिंत दौड़ती हैं। शाम होते ही वे घर लौटती हैं। घर पर उन्हें प्रतिबंधों की जंग से निपटना है। घर पर वर पक्ष के लोग उन्हें देखने आए हैं। इस वक्त वे घर न लौटे तो परिवार-समाज में तूफान आ जाएगा। वर पक्ष के लोग नाराज होकर चले जाएंगे, बाबू क्रोध कर के मैदान में घुस आएंगे। भाई झोंटा पकड़ कर उन्हें घसीट ले जाएगा। माँ अपनी बेटी को कुलच्छनी कहकर कोसेगी। लड़की को जन्म देने पर पश्चाताप करेगी। लड़कियों को बचपन में माता-पिता के प्रतिबंधों में रहना होता है। विवाह के बाद उन्हें ससुराल वालों की दासता में जीना पड़ता है। लड़कियों की इच्छा है कि वे स्वतंत्र विकास करें, अपनी प्रतिभा प्रकट करें, लड़कों की तरह वे भी स्वतंत्रता का सुख प्राप्त करें।

विशेष - यहाँ लड़कियों के प्रतिबंधित और बाधित जीवन को लेकर कवयित्री की चिंता व्यक्त हुई है। लड़कियों की बहुत इच्छा है कि उन्हें विकास का अवसर मिले। इनमें लड़कियों के शोषित, उपेक्षित जीवन की मार्मिक चर्चा की गई है।

१०.४.४ बोध प्रश्न –

१) 'हाकी खिलती लड़कियाँ' कविता के आधार पर लड़कियों के शोषित जीवन पर प्रकाश डालिए।

२) 'हाकी खेलती लड़कियाँ' में नारी-विषयक किस समस्या का चित्रण हुआ है?

३) 'हाकी खेलती लड़कियाँ' कविता का केंद्रीय भाव स्पष्ट कीजिए।

१०.४.५ वस्तुनिष्ठ/लघुत्तरी प्रश्न –

१) हाकी खेलती लड़कियाँ दौड़ती हुई किससे दूर आ जाती हैं?

उत्तर - लड़कियँ दौड़ती हुई चूल्हे की आँच से और मूसल की धमक से दूर आ जाती हैं।

२) लड़कियों को देखने के लिए कौन लोग आए हैं?

उत्तर - लड़कियों को देखने वर पक्ष के लोग आए हैं।

३) अम्मा बेटियों को किसकी कथा सुनाना चाहती हैं?

उत्तर - अम्मा बेटियों को संतोषी माता की कथा सुनाना चाहती हैं।

४) मुहल्ले के शोहदे कहाँ पर खड़े हैं?

उत्तर - मुहल्ले के शोहदे चौराहे पर खड़े हैं।

५) फाउल खेलने पर किनको चेतावनी दी जा रही है?

उत्तर - फाउल खेलने पर लड़कियों को चेतावनी दी जा रही है।

६) लड़कियाँ भीषण जंग से निपटने के लिए कहाँ लौटेंगी?

उत्तर - भीषण जंग से निपटने के लिए लड़कियाँ घर लौटेंगी।

७) लड़कियों के न लौटने पर कौन लोग पैर पटकते हुए चले जाएंगे?

उत्तर - लड़कियों के न लौटने पर वर पक्ष के लोग पैर पटकते चले जाएंगे।

८) झोंटा पकड़ कर लड़कियों को कौन घसीट ले जाएगा?

उत्तर - भाई झोंटा पकड़कर लड़कियों को घसीट ले जाएगा।

९) अम्मा लड़कियों को क्या कहकर कोसेंगी?

उत्तर - अम्मा लड़कियों को कुलच्छनी कहकर कोसेंगी।

१०) लड़कियाँ किसका इंतजार करते हुए सो जाएंगी?

उत्तर - लड़कियाँ अम्मा के द्वारा सिर सहलाने का इंतजार करते हुए सो जाएंगी।

■■■■■

११

प्रतिनिधि कविताएँ - केदारनाथ अग्रवाल

१. पैत्रिक संपत्ति २. चंद्रगहना से लौटती बेर

– डॉ. सतीश पांडेय

इकाई की रूपरेखा –

११.० उद्देश्य

११.१ केदारनाथ अग्रवाल : संक्षिप्त परिचय

११.१.१ प्रस्तावना

११.१.२ रचनाएँ

११.१.३ काव्य प्रवृत्तियाँ

११.२ पैत्रिक संपत्ति

११.२.१ प्रस्तावना

११.२.२ भावार्थ/कथ्य

११.२.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण

११.२.४ बोध प्रश्न

११.२.५ वस्तुनिष्ठ/लघूत्तरी प्रश्न

११.३ चंद्रगहना से लौटती बेर

११.३.१ प्रस्तावना

११.३.२ भावार्थ/कथ्य

११.३.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण

११.४ बोध प्रश्न

११.५ वस्तुनिष्ठ/लघुत्तरी प्रश्न

११.० उद्देश्य

- इस इकाई द्वारा कवि केदारनाथ अग्रवाल के व्यक्तित्व, उसकी रचनाओं तथा काव्य-प्रवृत्तियों का परिचय प्राप्त हो सकेगा ।
- इसी इकाई मे पैत्रिक संपत्ति और चन्द्रगहना से लौटती बे कविताओं का भावार्थ स्पष्ट हो सकेगा ।
- दोनों कविताओं से संदर्भ सहित स्पष्टीकरण एवं बोध प्रश्नों की जानकारी भी हो सकेगी।
- इनसे संबंधित लघूत्तरी प्रश्न भी दिये गए हैं ।

११.१ केदारनाथ अग्रवाल : संक्षिप्त परिचय

११.१.१ व्यक्ति परिचय –

केदारनाथ अग्रवाल का जन्म १ अप्रैल १९११ को बांदा जिले के कमासिन गाँव में हुआ था । इनकी माँ का नाम घसिट्टो देवी और पिता का हनुमान प्रसाद था । पिता भी कला-प्रेमी और कवि-हृदय थे । इनकी आरंभिक शिक्षा ग्रामीण माहौल में हुई । कक्षा तीन के बाद ये रायबरेली चले गए । वहाँ से पिता का स्थानांतरण कटनी हो जाने के कारण कक्षा छह तक की पढ़ाई कटनी में हुई । इसके बाद ये जबलपुर और इलाहाबाद रह कर पढ़ाई करते रहे । इलाहाबाद से इन्होंने बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की । उसके बाद कानून की पढ़ाई करने कानपुर चले गये । १९३८ में कानून की डिग्री लेकर बाँदा लौटे और वकालत करने लगे ।

केदार जी का विवाह छोटी उम्र में ही हो गया था । उस समय वे सातवीं कक्षा में पढ़ रहे थे । उनके घर के लोग धार्मिक परंपराओं और रूढ़ियों आदि का पालन भरपूर करते थे । इनके गाँव में हिंदू-मुसलमान दोनों संप्रदायों के लोग एक दूसरे के त्योहारों में शामिल होते थे । गाँव के पास ही ढाक का जंगल था। ये जंगल में हिरनों का चौकड़ी भरना देर तक देखते रहते। गाँव के अधिकांश लोग गरीब थे। 'इस पूरे माहौल का प्रभाव केदार जी के व्यक्तित्व पर पड़ा। डॉ. अजय तिवारी के अनुसार - इस परिचय का उनके बालपन पर ऐसा अमिट प्रभाव पड़ा कि बाद को जब उनका कवि रूप प्रकट हुआ तब यह दुख-दर्द और संघर्ष, हाड़तोड़ मेहनत, अमीरी की ओढ़ी हुई ठसक की तुलना में गरीबी की सहजता, निर्मलता आदि उनकी कविता से हजार-हजार कंठ से फूट पड़ी।'

केदार के पिता स्वयं कवि थे । बचपन से ही केदार ने भी कविता लिखनी शुरू कर दी थी। जबलपुर में इनके पिता से मिलने अनेक साहित्यकार आते थे । वहाँ इन्हें साहित्यिक माहौल मिला । जब ये इलाहाबाद आये तो अनेक साहित्यकारों से परिचय हुआ । फिर कानपुर में इन्होंने मजदूरों के जीवन को निकट से देखा । मार्क्सवादी विचारधारा और मजदूर वर्ग से इनका परिचय यहाँ ही हुआ । वकालत के दौरान अदालती जीवन के कटु यथार्थ से भी इनका गहरा परिचय हुआ । साथ ही आदमी के स्वभाव के सच्चे-झूठे पक्षों से भी ये परिचित हुए । इन सब बातों का प्रभाव इनकी कविताओं में देखा जा सकता हैं । २२ जून २००० को इनका देहावसान हो गया ।

११.१.२ रचनाएँ –

केदारनाथ अग्रवाल का पहला काव्य संग्रह १९४७ में 'युग की गंगा' नाम से प्रकाशित हुआ था। तब से अनेक कविता संग्रह इनके प्रकाशित हुए हैं जिनमें प्रमुख हैं - नींद के बादल, फूल नहीं रंग बोलते हैं, आग का आइना, गुलमेंहदी, पंख और पतवार, हे मेरी तुम, केदार, खरी-खरी, जमुन जल तुम, अपूर्वा, जो शिलाएँ तोड़ते हैं, आत्मगंध, खुली आँखें कहें खुले डैने, वसंत में प्रसन्न हुई पृथ्वी और कुहुकी कोयल, खड़े पेड़ की देह ।

इन्होंने कुछ कविताओं के अनुवाद भी किये हैं । इनके तीन निबंध संग्रह भी हैं - समय-समय पर, विचार-बोध और विवेक-विवेचन। 'पतिया' नामक उपन्यास भी इन्होंने लिखा है । बस्ती खिले गुलाबों की नाम से यात्रा-वृत्तांत भी छपा हैं, जिसमें इन यात्रा के अपने अनुभव इन्होंने लिखे हैं ।

इन्हें अनेक पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया है जिनमें सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार, उ.प्र. हिन्दी संस्थान का विशिष्ट पुरस्कार; अपूर्वा पर साहित्य अकादमी पुरस्कार तथा म.प्र. साहित्य परिषद का तुलसी सम्मान एवं मैथिली शरण गुप्त सम्मान प्रमुख हैं।

इन्हें हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग द्वारा साहित्य वाचस्पति तथा बुंदेलखंड विश्व विद्यालय द्वारा डी. लिट्. की उपाधि भी दी गयी थी ।

११.१.३ काव्य प्रवृत्तियाँ –

कवि केदारनाथ अग्रवाल प्रगतिशील चेनता के वरिष्ठ हिंदी कवि हैं । पेशे से वकील होते हुए भी किसानो-मजदूरों से इनका गहरा लगाव रहा। इसी लिए इनकी रचनाओं में आम आदमी के सुख-दुख, उनका शोषण तथा इस शोषण को दूर करने की चिंता प्रमुख रूप में व्यक्त हुई है। प्रगतिशील चेतना के कवि होने के नाते मार्क्सवादी विचारधारा इनकी जीवन-दृष्टि के केन्द्र में रही है लेकिन मार्क्सवादी चिंतन का विवेचन-विश्लेषण भी इन्होंने अपने विवेक के आधार पर किया है। इनकी कविताओं में जहाँ एक तरफ राजनीतिक अंतर्विरोधों पर तीखी टिप्पणियाँ मिलती हैं, वहीं किसान-मजदूर और शोषित वर्ग की जीवन स्थितियाँ, सामाजिक विषमता, इन वर्गों के जीवनगत अंतर्विरोध, संघर्ष और जिजीविषा भी इनकी कविताओं में प्रमुखता से प्रकट हुई है। इन्होंने प्रेम और प्रकृति पर भी ढेरों कविताएँ लिखी हैं, किंतु वहाँ भी इनकी प्रगतिशील चेतना साफ उजागर होती है। जैसे 'हे मेरी तुम' श्रृंखला की प्रेम कविताओं में स्वस्थ दांपत्य प्रेम अधिक प्रखरता से प्रकट हुआ है । इसके अलावा इन्होंने श्रमिकों-मजदूरों और किसानों पर बहुत अधिक लिखा है। वास्तव में वे गहरी जीवनासक्ति के कवि हैं । मानवीय समानता के पक्षधर होने के कारण इन्होंने जहाँ भी सामाजिक विषमता देखी, अपनी लेखनी से उसका विरोध प्रकट किया है ।

११.२ पौत्रिक संपत्ति

११.२.१ प्रस्तावना –

कवि केदारनाथ अग्रवाल ग्रामीण चेतना के प्रगतिशील कवि हैं । अत: उन्होंने किसान-जीवन का यथार्थ चित्रण अपनी कविताओं में किया है । आजादी मिलने के बाद भी भारतीय किसानों का जीवन बहुत अधिक बदला नहीं था। उन्हें उसी तरह शोषण और अभाव के बीच जीवन-यापन करना पड़ रहा था। कवि ने इस विडंबना को बखूबी अनुभव किया। 'पैत्रिक संपत्ति' कविता आजाद देश के ऐसे ही एक किसान के बेटे की दुखद कथा की मार्मिक अभिव्यक्ति है जो अभाव और कर्ज में डूबी जिंदगी जीने के लिए विवश है ।

११.२.२ भावार्थ/कथ्य –

केदारनाथ अग्रवाल सामान्यजन जीवन और प्रकृति से गहराई से जुड़े रचनाकार हैं। इसी लिए उनकी कविताओं में जहाँ प्रकृति और लोकजीवन का आपसी जुड़ाव व्यक्त हुआ है, वहीं वे लोकजीवन का यथार्थ चित्र भी प्रस्तुत करते हैं। 'पैत्रिक संपत्ति' इनकी ऐसी कविता है, जिसमें एक तरफ बड़ी ही सरलता से वर्तमान समय में महाजनों के कर्ज में आकंठ डूबे किसान की अभावग्रस्त जिंदगी का खाका खींचा गया है, वहीं आजादी की असलियत भी व्यंग्यात्मक लहजे में प्रस्तुत की गयी हैं।

आजादी के पहले का किसान-जीवन महाजनी शोषण के कारण अभावग्रस्त था । आजादी मिलने के बाद भी किसानों के जीवन में कोई बदलाव नहीं आया । आजाद भारत के किसान-पुत्र को पैत्रिक संपत्ति के रूप में जो कुछ मिला, वह इसी शोषण और अभावग्रस्त जीवन की ओर संकेत करता है । पिता की मृत्यु के बाद भूखे किसान के बेटे को टूटे हुए घर का मलवा मिला । खाट मिली, वह भी टूटी हुई। पैत्रिक संपत्ति के रूप में कुछ जमीन मिली किंतु वह भी परती थी जिसमें फसल नहीं उगायी जाती थी। घर में चमड़े का जूता भी साबित नहीं मिला। सिर्फ उसका तल्ला ही हाथ आया। छोटी और पुरानी औंगी (बैल हाँकनेवाली छड़ी) भी मिली तो टूटी हुई। अंगीठी मिली लेकिन उसमें भी दरारें पड़ी हुई थीं। हुक्का भी टूटा-फूटा ही मिला, जिसमें से पानी बह रहा था। लोहे की पतली पट्टी का एक चिमटा मिला।

इतना ही नहीं, अमीरों के पास जमा धन-दौलत रूपी सुमेरु पर्वत की तुलना में इस किसान के बेटे को दरवाजे पर जमा कचरे का पर्वत मिला। साथ में उसे बनिया के यहाँ से लिया गया रुपयों का कर्ज मिला जो बार-बार चुकाने पर भी नहीं चुकता। ऐसी अभावग्रस्त और तंगहाल जिंदगी में इस किसान के बेटे को दीमक, मच्छर, गोजर और माटा (लाल चींटा) जैसे कीड़े-मकोड़ों का ही साथ मिला। उसे जो भूख मिली, वह भी अपने पिता से सौगुनी अधिक मिली। ऐसे अभावों के बीच रहने वाला किसान का बेटा भूखे पेट सिकोड़े और मुँह खोले इधर से उधर घूमता-फिरता है। उसे कहीं से भी कोई उम्मीद नहीं दीखती। उसे नहीं मालूम कि भारत की आजादी का क्या अर्थ है और आजाद देश में कौन सी सुविधाएँ दी जाती हैं। आजादी मिलने के बाद भी उसके जीवन में कोई परिवर्तन नहीं आया हैं। इस तरह 'पैत्रिक संपत्ति' कविता में स्वतंत्र भारत के अभाव ग्रस्त किसान जीवन का यथार्थ चित्रण किया गया है।

११.२.३ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण –

अब पेट खलाये फिरता है।

चौड़ा मुँह बाये फिरता है ।

वह क्या जाने आजादी क्या ?

आजाद देश की बातें क्या ।

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ अशोक त्रिपाठी द्वारा संपादित 'प्रतिनिधि कविताएँ : केदारनाथ अग्रवाल' में संकलित 'पैत्रिक संपत्ति' नामक कविता से ली गयी हैं। इसके रचयिता केदारनाथ अग्रवाल हैं।

प्रसंग – केदारनाथ अग्रवाल प्रगतिशील काव्यधारा के उन कवियों में से हैं जिन्होंने लोकजीवन को बड़ी ही गहराई से अनुभव किया है। इसी कारण किसान और मजदूर वर्ग की यथार्थ जिंदगी को उन्होंने बार-बार अपनी कविता का विषय बनाया है। कवि के अनुसार किसान–वर्ग यद्यपि जी-तोड़ मेहनत करके अन्न उपजाता है किंतु उसकी आर्थिक स्थिती ऐसी नहीं हो पाती कि वह सुख से रह सके। वह जमींदारों-महाजनों के शोषण तले पिसता रहता हैं।

व्याख्या - कवि कहता है कि किसान-पुत्र को अपनी पैत्रिक संपत्ति के रूप में गिरा-पड़ा घर और उसका मलवा, टूटी खाट और परती पड़ी जमीन मिली। सुविधा के नाम पर चमरौधे जूते का तल्ला मिला। हल हाँकने के लिए छोटी-टूटी औंगी (पैना या डंडा) मिली। अंगीठी और हुक्का मिला तो वह भी टूटा-फूटा। महाजन का कर्ज भी विरासत में मिला जो कितना भी चुकाएँ, चुकता ही नहीं। इस तरह इस भूखे किसान के बेटे को भूख अपने पिता से

भी सौगुनी अधिक मिली इतने अभावों मे जीनेवाला किसान भूखे पेट अपना पेट खलाये और मुँह बाये घूमता है। उसकी स्थिति इतनी दयनीय है कि खाने के लिए भी कुछ नहीं है। यद्‌पि देश को आजादी मिली और सरकारी घोषणाओं के अनुसार हर व्यक्ति को रोटी, कपड़ा और मकान मिलना चाहिए लेकिन इन बुनियादी आवश्यकताओं से भी यह किसान वंचित है। इसी लिए कवि कहता है कि वह नहीं जानता कि आजादी क्या होती है और आजाद देश के लोगों का जीवन कैसा होता है।

विशेष - यहाँ कवि ने न सिर्फ किसान-जीवन की विडंबनाएँ और उसके अभावग्रस्त जीवन को स्पष्ट किया है बल्कि आजादी पर भी व्यंग्यात्मक प्रहार किया है कि सामान्य किसानों-मजदूरों के जीवन में आजादी मिलने से कोई परिवर्तन नहीं आया है ।

संदर्भ सहित व्याख्या के लिए अन्य अवतरण :

कंचन सुमेरु का प्रतियोगी
द्वारे का पर्वत घूरे का
बनिया के रुपयों का कर्जा
जो नहीं चुकाने पर चुकता

११.२.४ बोध प्रश्न –

१. पैत्रिक संपत्ति में किसान-जीवन का यथार्थ-चित्रण किस तरह किया गया है?

२. पैत्रिक संपत्ति में भूखे किसान के अभाव और शोषण का चित्रण किस तरह किया गया है ?

११.२.५ वस्तुनिष्ठ/लघूत्तरी प्रश्न –

१. किसान के बेटे को पैत्रिक संपत्ति के रूप में मिली भूमि कैसी थी?

उत्तर : किसान के बेटे को पैत्रिक संपत्ति के रूप मे मिली भूमि परती थी।

२. किसान के बेटे के पास कंचन सुमेरु का प्रतियोगी क्या था?

उत्तर : किसान के बेटे के पास कंचन सुमेरु का प्रतियोगी द्वार पर स्थित घूरे का पर्वत था।

३. किसान के बेटे द्वारा चुकाये जाने पर भी क्या नहीं चुकता था?

उत्तर : किसान के बेटे द्वारा बनिया के रुपयों का कर्जा चुकाये जाने पर भी नहीं चुकता था।

४. किसान के बेटे को कौन-सी चीज बाप से सौगुनी अधिक मिली थी?

उत्तर : किसान के बेटे को बाप से सौगुनी अधिक भूख मिली थी।

५. आजादी और आजाद देश की बातें कौन नहीं जानता ?

उत्तर : भूखा किसान का बेटा आजादी और आजाद देश की बातें नहीं जानता।

११.३ चंद्रगहना से लौटती बेट

११.३.१ प्रस्तावना –

प्रकृति के साथ मनुष्य का रागात्मक संबंध होता है क्योंकि मनुष्य अपने जीवन-यापन के तमाम साधन प्राकृतिक तत्त्वों के आधार पर ही जुटाता है । विशेष रूप से किसान का जीवन तो प्रकृति पर ही आधारित होता है। केदारनाथ अग्रवाल मूलतः किसान-मन के कवि हैं। अतः किसान से जुड़ी प्रकृति के सभी रंग, रूप, ध्वनियाँ एवं गंध उनकी कविताओं में सहज ही व्यक्त हुए हैं। प्रकृति के बड़े ही आत्मीय बिंब तथा तमाम प्राकृतिक गतिविधियों की सूक्ष्म पकड़ इनकी कविताओं में जिस तरह दिखायी देती है, वैसा अन्य कवियों में मिलना कठिन है। 'चंद्रगहना से लौटती बेर' में प्रकृति के मोहक दृश्यों के साथ-साथ प्रेम की अनुभूतियाँ भी व्यक्त हुई हैं।

११.३.२ भावार्थ/कथ्य –

कवि केदारनाथ अग्रवाल मूलतः किसान-जीवन एवं ग्रामीण चेतना के कवि हैं। अतः उनकी अनेक कविताओं में ग्रामीण प्रकृति के आकर्षक चित्र मिलते हैं। इन प्राकृतिक चित्रों के साथ मनुष्य के लगाव को भी कवि ने प्रकट किया है। ग्रामीण प्रकृति और खेतों-फसलों का मनोहारी रूप पूरी काव्यात्मक संवेदना के साथ इस कविता में साकार हुआ है। साथ ही प्राकृतिक परिवेश में पल रही एक प्रेम कहानी की सुगबुगाहट भी हमें इस कविता में दिखायी देती है। प्रकृति के मानवीकरण का ऐसा सुंदर दृश्य अन्यत्र दुर्लभ है।

चंद्रगहना से लौटते हुए कवि खेत के मेड़ पर बैठकर वहाँ का सुंदर, मनोहारी प्राकृतिक दृश्य देखता है। एक बीते के बराबर छोटे आकार का हरा चना सिर पर छोटे गुलाबी फूल की पगड़ी बाधे सज-धज कर खड़ा है। उसी के पास बीच में हठीली अलसी उगी है । उसकी देह पतली एवं लचीली है। उसके भी शीश पर नीला फूल खिला हुआ है। जैसे वह अपने सिर पर इस नीले फूल को रखकर चुनौती दे रही है कि जो इस नीले फूल को छू लेगा, उसे ही मैं अपना ह्रदय दूँगी।

सरसों में भी पीले फूल खिले हुए हैं। उसे देखकर कवि व्याह कहता है कि सरसों सबसे सयानी हो गयी है। उसने अपने हाथ पीले कर लिए हैं और जैसे व्याह के मंडप में आयी हुई है। इस पूरे दृश्य को देखकर लगता है कि फाल्गुन का महीना आज जैसे होली के गीत गाता हुआ यहाँ आ पहुँचा है।

यह पूरा दृश्य देखकर ऐसा लग रहा है कि यहाँ स्वयंवर हो रहा है। संपूर्ण प्रकृति का प्रेम भरा आँचल हिल रहा है। व्यापारिक नगर-क्षेत्र से दूर इस ग्रामीण एकांत जगह में प्रेम की भूमि अधिक उपजाऊ हो गयी है। कवि का तात्पर्य है कि नगरों में भाग-दौड़ की व्यस्त जिंदगी में प्रेम की भावना उत्पन्न होने के लिए पर्याप्त समय और अनुकूल अवसर नहीं मिल पाता। वहाँ अन्य अनेक कलुषित भावनाएँ अधिक पनपती हैं लेकिन शहरी माहौल से दूर इस विजन (एकांत) क्षेत्र में प्रेम की भावनाएँ उत्पन्न होने का अवसर अधिक है। इसी लिए ये प्राकृतिक तत्व भी जैसे प्रेम और विवाह की गतिविधियों में व्यस्त हैं।

इस खेत के बगल में ही एक पोखरा है। उसका सौंदर्य भी कवि को मोहित करता है। पोखरे के जल में छोटी-छोटी लहरें उठ रही हैं। उसके साफ नीले जल के भीतर तल में भूरे रंग की घास उगी है। वह घास भी पानी की लहरों के साथ हिलते हुए लहरा रही है। पानी में चंद्रमा का प्रतिबिंब चाँदी के बड़े गोल खंभे की तरह ऑखों को चमका रहा है। किनारे पर कई पत्थर पड़े हैं। उन्हें देखकर ऐसा लग रहा है कि वे पोखरे के जल के किनारे चुपचाप पानी पी रहे हैं। वे लम्बे समय से वहीं पड़े हैं। अत: कवि कल्पना करता है कि पता नहीं कब उनकी प्यास बुझेगी।

पानी में वहीं एक बगुला चुपचाप ध्यान लगाये खड़ा है। जैसे ही वह एक मछली को देखता है, उसकी ध्यान-निद्रा टूट जाती है। वह चट से उस छोटी मछली को अपनी चोंच में दबा लेता है और गले के नीचे उतार लेता है। कवि को यहीं काले माथे वाली एक चतुर चिड़िया भी उड़ती हुई दिखायी देती है। वह अचानक अपने सफेद पंखों के झपाटे मार कर गोताखोरों की तरह पानी के ह्रदय पर टूट पड़ती है और एक छोटी चंचल मछली को अपनी पीली चोंच में दबाकर आसमान में उड़ जाती है। इस तरह प्रकृति के तत्त्वों की हलचलें कवि बड़ी बारीकी से देखता और उन्हें काव्यमय अभिव्यक्ति देता है।

कवि इस प्राकृतिक छटा के बीच स्वच्छंद रूप से विचरण कर रहा है। उसे कहीं जाने की जल्दी नहीं है। इसीलिए खेतों में और पोखरे के आस-पास की घटनाओं को सूक्ष्मता से वह अनुभव करता है। उसे चित्रकूट की अनगढ़ चौड़ी एवं कम ऊँचाई वाली पहाड़ियाँ भी दूर-दूर तक फैली हुई दिखायी देती हैं। इन पहाड़ियों की बंजर धरती पर रींवा के काँटे दार एवं बदसूरत से लगने वाले पेड़ खड़े दिखायी देते हैं। किंतु उसे यहीं पर तोते का टें टें टें टें करता मधुर रस टपकाने वाला स्वर भी सुनायी देता है। साथ ही, पूरी वनस्पती के ह्रदय को चीरता हुआ सारस का टिरटों टिरटों का उठता-गिरता मोहक स्वर भी सुनायी देता है। कवि के अनुसार उसका मन भी यही करता है कि वह सारस के साथ पंख फैलाकर इन उजाड़ पहाड़ियों से दूर उस हरे खेत में पहुँच जाए जहाँ सारस की युगल जोड़ी रहती है और वहाँ पहुँच कर चुपके-चुपके सारस-युगल की प्रेम कहानी सुने।

इस तरह कवि केदारनाथ अग्रवाल ने इस कविता में जहाँ खेतों में ठिगने चने, अलसी और सरसों के चित्रों द्वारा प्रकृति में चल रहे प्रेम व्यापार का मोहक चित्रण किया है, वहीं पोखरे के आस-पास की प्राकृतिक गतिविधियों को भी प्रस्तुत किया है। तोते और सारस की आकर्षक ध्वनियों का बिंब प्रस्तुत करते हुए वह उस प्राकृतिक छटा में पहुँचना चाहता है जहाँ निष्कलुष प्रेम और वह उस प्रेम कहानी को चुपके-चुपके सुनना चाहता है जिससे उसमें कोई खलल न पहुंचे।

११.३.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण –

१. देखता हूँ मैं स्वयंवर हो रहा है,

प्रकृति का अनुराग अंचल हिल रहा है

इस बिजन में

दूर व्यापारिक नगर से

प्रेम की प्रिय भूमि उपजाऊ अधिक है।

संदर्भ –प्रस्तुत पांक्तियाँ प्रगतिवादी चेतना के वरिष्ठ कवि केदारनाथ अग्रवाल की प्रसिद्ध रचना 'चंद्रगहना से लौटती बेर' से ली गयी हैं जो अशोक त्रिपाठी द्वारा संपादित हमारी पाठ्य पुस्तक प्रतिनिधि कविताएँ : केदारनाथ अग्रवाल में संकलित है।

प्रसंग – केदारनाथ अग्रवाल मूलतः ग्रामीण चेतना और प्रकृति से गहरी संपृक्तता रखने वाले कवि हैं। उनकी कविताओं में एक ओर जहाँ किसान-मजदूर के श्रम को महत्व दिया गया है, वहीं ग्रामीण परिवेश और वहाँ की प्रकृति का सूक्ष्म चित्रण भी मिलता है। इस कविता में जहाँ चने और अलसी के सौंदर्य का बिंबात्मक चित्रण कवि ने किया है, वहीं सरसों के हाथ पीले करने एवं ब्याह-मंडप में पधारने का संकेत भी दिया है। इस रूप में उसने प्रकृति चित्रण द्वारा प्रेम भावना को उजागर किया है।

व्याख्या – कवि के अनुसार चंद्रगहना से लौटती बेर उसने खेत के मेड़ पर खड़े होकर वहाँ का अनुपम सौंदर्य देखा। एक बीते के बराबर ऊँचाई वाला ठिंगना चना अपने छोटे गुलाबी फूलों का सिर पर मुरैठा बाँधे सज-धजकर खड़ा है। उसके पास ही हठीली अलसी भी उगी है। पतली देह और लचीली कमर वाली अलसी सिर पर नीले फूल धारण किए हुए जैसे चुनौती दे रही है कि जोइस फूल को छुएगा, उसे ही अपने ह्रदय का दान दूँगी । सबसे सयानी सरसों है। उसने अपने हाथ पीले कर लिए हैं और जैसे ब्याह के मंडप में आयी है। फाल्गुन का महीना भी जैसे फाग गाता हुआ वहाँ आ गया है।

इस तरह समूचा परिवेश प्रेममय हो गया है। कवि कहता है कि व्यापारिक नगर की भाग दौड़ भरी जिंदगी से दूर इस एकांत जगह में जैसे स्वयंवर हो रहा है और प्रकृति का प्रेम-भरा आँचल सक्रिय है। यहाँ प्रेम के सात्विक स्वरूप के विकसित होने की अपार संभावनाएँ हैं। यहाँ की भूमि प्रेम-भावना के विकास के लिए बहुत ही उपजाऊ है। इस तरह कवि ने प्राकृतिक दृश्यों के चित्रण द्वारा प्रेम की अनुभूतियों को चित्रित किया है।

विशेष – इन पंक्तियों द्वारा कवि ने प्रकृति के माध्यम से निष्कलुष प्रेम की अनुभूतियों को विकसित होते हुए दर्शाया है। उसका यह संकेत भी है कि व्यापारिक नगर की भाग-दौड़ भरी जिंदगी में प्रेम की अनुभूतियाँ उस तरह सहज विकसित नहीं हो पातीं, जिस तरह ग्रामीण प्रकृति के बीच।

२) मन होता है -
उड़ जाऊँ मैं
पर फैलाए सारस के संग
जहाँ जुगल जोड़ी रहती है
हरे खेत में,
सच्ची प्रेम कहानी सुन लूँ
चुप्पे-चुप्पे

संदर्भ - केदारनाथ अग्रवाल प्रगतिवादी काव्यधारा के उन कवियों में से हैं जिन्होंने अपनी प्रगतिशील दृष्टि के तहत प्रकृति और प्रेम का चित्रण भी अत्यंत मानवीय धरातल पर किया है। 'चन्द्र गहना से लौटती बेर' उनकी ऐसी ही एक कविता है, जिसमें उन्होंने ग्रामीण प्रकृति का बिंबात्मक दृश्य प्रस्तुत करते हुए उस सुरम्य परिवेश में प्रेम की कोमल भावनाओं को उभरते हुए दर्शाया है। प्रस्तुत पंक्तियाँ इसी कविता से ली गयी हैं।

प्रसंग - खेत की मेड़ पर बैठकर कवि चने, अलसी और सरसों की फसलों का सौंदर्य तो निरखता ही है, वहीं वह तालाब के किनारे पड़े पत्थरों, ध्यान मग्न बगुला तथा काले माथेवाली चतुर चिड़िया का झपट्टा मारकर चंचल मछली को अपनी चोंच में दबा लेने का दृश्य बिंब भी प्रस्तुत करता है। चित्रकूट की पहाड़ियों पर खड़े रीवाँ के काँटेदार पेड़ों के बीच उसे तोते और सारस का स्वर भी सुनाई देता है। उसका मन उस खेत की ओर उड़ जाना चाहता है जहाँ सारस युगल की प्रेम कथा चलती रहती है।

व्याख्या - कवि केदारनाथ अग्रवाल के अनुसार खेत में खड़े चने अलसी और सरसों के सौदर्य के अतिरिक्त पोखरे के जल में उठ रही लहरों के साथ-साथ उसके तल में उगी भूरी घास भी लहरा रही है। किनारे पड़े पत्थर चुपचाप जैसे पानी पी रहे हैं। पानी में खड़ा बगुला अचानक मछली देखकर अपनी ध्यान-निद्रा त्याग देता है और उसे चट से चोंच में दबाकर निगल जाता है। इसी तरह काले माथेवाली सफेद चिड़िया भी झपट्टा मारकर एक चंचल चिड़िया को अपने पीले चोंच में दबाकर आकाश में उड़ जाती है । चित्रकूट की कम ऊँची पहाडियाँ यही से शुरू होती हैं, जिनपर रींवा के पेड खड़े हैं। ऐसे ही प्राकृतिक परिवेश में सुग्गे (तोते) की 'टें टें टें टें' और सारस का टिरटों-टिरटों करता मधुर स्वर सुनायी देता है। कवि कहता है किं उसका भी मन यही होता है कि सारस के साथ पंख फैलाकर उड़ जाए और उन हरे-भरे खेतों तक पहुँच जाए, जहाँ सारस-युगल रहता है तथा उनकी प्रेम कहानी चुपके-चुपके सुने।

विशेष - यहाँ कवि ने संकेत किया है कि प्रेम की निःस्वार्थ भावना इन प्राकृतिक दृश्यों में ही देखने को मिलती है। यहाँ कवि का प्रकृति के प्रति लगाव भी व्यक्त हुआ है।

११.३.५ वस्तुनिष्ठ/लघुत्तरी –

१) 'चंद्रगहना से लौटती बेर' मे कवि ने प्रकृति-सौदर्य का वर्णन किस तरह किया है?

२) चंद्रगहना से लौटकर कवि कौन-सा दृश्य देखता है?

११.३.४ बोध प्रश्न –

१) हरा ठिंगना चना अपने शीश पर किसका मुरैठा बाँधे खड़ा था?

उत्तर : हरा ठिंगना चना अपने शीश पर छोटे गुलाबी फूल का मुरैठा बाँधे खड़ा था।

२) कवि ने किसको हठीली, देह की पतली और लचीली कहा है?

उत्तर : कवि ने अलसी को हठीली, देह की पतली और लचीली कहा है।

३) अलसी अपना ह्रदय किसे दान देना चाहती है?

उत्तर : जो उसके सिर पर चढ़े नीले फूल छू लेगा, उसे ही अलसी अपना ह्रदय दान देना चाहती है।

४) केदारनाथ अग्रवाल के अनुसार हाथ पीले किसने कर लिए थे?

उत्तर : केदारनाथ अग्रवाल के अनुसार सयानी सरसों ने हाथ पीले कर लिए थे।

५) प्रेम की भूमि अधिक उपजाऊ कहाँ लगती है।

उत्तर : व्यापारिक नगर से दूर विजन में खेतों में प्रेम की भूमि उपजाऊ लगती है।

६) पोखरे के किनारे पत्थर क्या कर रहे थे?

उत्तर : पोखरे के किनारे पत्थर चुपचाप पानी पी रहे थे।

७) बगुला अपनी ध्यान-निद्रा कब त्यागता है?

उत्तर : बगुला अपनी ध्यान-निद्रा मछली को देखकर तयागता है।

८) चटुल मछली को चोंच में दबाकर आकाश में कौन उड़ जाती है?

उत्तर : काले माथवाली चतुर चिड़िया चटुल मछली को चोंच में दबाकर आकाश में उड़ जाती है।

९) रींवा के पेड़ किस तरह के हैं?

उत्तर : रींवा के पेड़ काँटेदार और कुरूप हैं।

१०) कवि-मन सारस के संग उड़कर कहाँ जाना चाहता है?

उत्तर : कवि-मन सारस के संग उड़कर उन खेतों में जाना चाहता है जहाँ सारस की जुगुल जोड़ी रहती है।

११) कवि चुप्पे-चुप्पे क्या सुनना चाहता है?

उत्तर : कवि चुप्पे-चुप्पे सच्ची प्रेम कहानी सुनना चाहता है।

▪▪▪▪▪

१२

प्रतिनिधि कविताएँ - केदारनाथ अग्रवाल

१) कमकर २) जो शिलाएँ तोड़ते हैं ३) जिंदगी

इकाई की रूपरेखा –

१२.० कमकर

१२.१.१ प्रस्तावना

१२.१.२ भावार्थ/कथ्य

१२.१.३ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण

१२.१.४ बोध प्रश्न

१२.१.५ वस्तुनिष्ठ/लघूत्तरी प्रश्न

१२.२ जो शिलाएँ तोड़ते हैं

१२.२.१ प्रस्तावना

१२.२.२ भावार्थ/कथ्य

१२.२.३ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण

१२.२.४ बोध प्रश्न

१२.२.५ वस्तुनिष्ठ/लघूत्तरी प्रश्न

१२.३ जिंदगी

१२.३.१ प्रस्तावना

१२.३.२ भावार्थ/कथ्य

१२.३.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण

१२.३.४ बोध प्रश्न

१२.३.५ वस्तुनिष्ठ/लघुत्तरी प्रश्न

१२.० कमकर

- इस इकाई के माध्यम से विवेच्य कविताओं को सही सामाजिक - आर्थिक संदर्भों में समझा जा सकेगा।
- इससे संदर्भ सहित स्पष्टीकरण लिखने में आसानी होगी।
- कविताओं संबंधी दीर्घोत्तरी एवं वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का उत्तर लिखना आसान हो सकेगा।

१२.१.१ प्रस्तावना –

कवि केदारनाथ अग्रवाल प्रगतिवादी काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि हैं। अत: उनकी कविताओं में जहाँ श्रमिकों-मजदूरों के प्रति सहज संवेदना व्यक्त हुई है, वहीं पूजीपतियों के शोषक स्वरूप पर उन्होंने कुठाराघात भी किया है। शोषकों और शोषितों के इस संघर्ष में कवि शोषित -श्रमिक वर्ग का पक्षधर है। अत: वह उनमें शोषण-विरोधी चेतना विकसित होने का संकेत भी देता है।

१२.१.२ भावार्थ/कथ्य –

कवि केदारनाथ अग्रवाल ने अपनी प्रगतिवादी विचारधारा के अनुकूल कमकर-मजदूरों और शोषक पूँजीपतियों की जीवन शैली का अंतर स्पष्ट करते हुए लिखा है कि कमकर अपनी श्रमशक्ति पर विश्वास करते हैं। अत: वे किसी के सामने रो धो कर या हाथ जोड़कर अथवा पाँव पूजकर अपनी रोटी नहीं कमाते। वे किसी के सामने दया की भीख भी नही माँगते । वे दिन भर मेहनत करते हैं। पत्थर-लोहे से लड़ते हैं। लड़ते-लड़ते जीवन घिस जाता है और एक दिन जीवन का अंत भी हो जाता है। इतना कठोर श्रम करने के बाद भी उन्हें भूख मिटाने को रोटी, तन ढँकने को कपड़ा और रहने के लिए दड़बे जैसा मकान मुश्किल मिलता है।

मालिकों पूँजीपतियों की जिंदगी ठीक इसके विपरीत होती है। वे इन मजदूरों को शोषण करते हुए उनकी मेहनत की पूँजी अपने बैंकों में जमा करते हैं। वे इन मजदूरों-कमकरों की पौरुष-प्रतिभा का इतना दोहन करते हैं कि वे मजदूर मुरदा जैसा बन जाते हैं जब कि उन्हीं का शोषण करके पूँजीपति मोटे होते जाते हैं और अपनी धन-दौलत पर इतराते रहते हैं ।

कवि यह संकेत करता है कि अब युग बदल रहा है। इन शोषित कमकरों में भी लड़ने की शक्ति आ गयी है। वे शोषण के विरुद्ध संघर्ष करते हैं और अपने संघर्षशील स्वभाव के कारण कई बार पूँजीपतियों को पराजित करते हुए अपनी माँगें स्वीकार करने के लिए विवश कर देते हैं। अब इन कर्मकरों में भी चेतना शक्ति आ गयी है। वे साम्यवादी अर्थनीति को भी जान गये हैं और उसी अर्थनीति के आधार पर राजनीति में भी सफलता हासिल कर रहे हैं।

इस तरह इस कविता में जहाँ शोषित कर्मकरों में श्रमशक्ति पर विश्वास जताया गया है, वहीं शोषक-पूँजीपतियों पर प्रहार करते हुए उनके शोषण के विरुद्ध कमकरों में संघर्ष की चेतना विकसित होते हुए भी दर्शाया गया हैं। अपनी साम्यवादी नीतियों के प्रति सजगता के कारण वे राजनीति के क्षेत्र में भी सफलता हासिल कर रहे हैं।

१२.१.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण –

अब युग ने पलटा खाया
उनमें बल लड़ने का आया
वह शोषण से युद्ध ठानते
थैलीशाहों को पछाड़ते
माँगों को स्वीकार कराते।

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रसिद्ध प्रगतिवादी कवि केदारनाथ अग्रवाल द्वारा लिखित कविता 'कमकर' से ली गयी है जो हमारी पाठ्य पुस्तक प्रतिनिधि कविताएँ : केदारनाथ अग्रवाल में संकलित है। इसके संपादक अशोक त्रिपाठी जी हैं।

प्रसंग - कवि केदारनाथ अग्रवाल मूलत: प्रातिशील चेतना के कवि हैं। अत: उन्होंने जहाँ कमकरों द्वारा अपनी श्रम शक्त पर विश्वास प्रकट करते हुए दिखाया है, वहीं पूँजीपतियों के शोषक रूप को भी उजागर किया है। कमकरों में अपने शोषण के प्रति जागरूकता भी उत्पन्न हो गयी है। अत: वे साम्यवादी नीतियों के आधार पर राजनीति में भी सफलता हासिल करने लगे हैं । इन्हीं संदर्भों में कवि ने उपर्युक्त पंक्तियाँ कही हैं।

व्याख्या - कवि के अनुसार अब कमकर-मजदूर वर्ग किसी के सामने हाथ जोड़कर या रो-गिड़गिड़ाकर दया की भीख नहीं माँगता। वह अपनी मेहनत पर विश्वास करते हुए लोहे से लड़ता है और अपने लिए रोटी, कपड़ा तथा मकान जैसी बुनियादी सुविधाएँ इकट्ठा करता है। इसके विपरीत पूँजपति वर्ग उनके श्रम का शोषण कर बैंकों में पूँजी जमा करता है। वह कमकरों की मेहनत की पूँजी से मोटा होकर इतराता फिरता है और कमकर शोषण का शिकार बनकर मुरदा जैसा बनता जाता है। किंतु अब युग बदल गया है। कमकरों में भी नई चेतना आ गयी है। शोषण के विरुद्ध लड़ने की शक्ति उनमें भी आ गयी है। अपनी इस चेतना एवं संघर्ष शक्ति के आधार पर ही वे पूँजीपति-थैलीशाहों को पछाड़ते हैं और अपनी माँगे स्वीकार करने के लिए उन्हें विवश कर देते हैं।

विशेष - यहाँ कवि ने युग के बदलने और मजदूर वर्ग में नई चेतना विकसित होने का संकेत दिया है, जिसके बल पर वे लड़कर अपनी माँग स्वीकार करवा लेते हैं।

१२.३.४ बोध प्रश्न –

१) कमकरों में शोषण के विरुद्ध संघर्ष की चेतना किस तरह प्रकट हुई है।

२) कमकरों और पूँजीपतियों की जीवन शैली का अंतर स्पष्ट कीजिए।

१२.३.५ वस्तुनिष्ठ/लघूत्तरी प्रश्न –

१) कौन दया-भीख से अपनी रोटी नहीं कमाते?

उत्तर : कमकर दया-भीख से अपनी रोटी नहीं कमाते।

२) कमकरों के शोषक कौन है?

उत्तर : पूँजीपति कमकरों के शोषक हैं।

३) कमकरों की मेहनत की पूँजी अपने बैंकों में कौन धरते हैं ?

उत्तर : कमकरों की मेहनत की पूँजी पूँजीपति अपने बैंकों में धरते हैं।

४) मोटे होकर कौन इतराते हैं?

उत्तर : पूँजीपति मोटे होकर इतराते हैं।

५) कमकरों में कौन सा बल आया?

उत्तर : कमकरों में लड़ने का बल आया।

६) थैलीशाहों को कौन पछाड़ता हैं?

उत्तर : कमकर थैलीशाहों को पछाड़ता हैं।

७) कमकर राजनीति को किस नीति से जीतते है?

उत्तर : कमकर साम्यवाद की अर्थनीति से राजनीति को जीत रहे हैं।

१२.२.१ जो शिलाएँ तोड़ते हैं

केदारनाथ अग्रवाल की प्रगतिशील चेतना में सामाजिक विकास और मानवता के उद्धार का दृष्टिकोण प्रमुख रूप से निहित है। इस दृष्टि से उन्होंने समूचे समाज के पीड़ित-शोषित वर्ग का पक्ष लेते हुए अपनी कविताओं के माध्यम से उनमें प्रेरणा भरने की कोशिश की है। इसी लिए उन्होंने समाज के विभिन्न वर्गों के मजदूरों के श्रम के प्रति अटूट आस्था प्रकट की है। प्रस्तुत कविता जो शिलाएँ तोड़ते है, में समाज और जीवन को बेहतर बनानेवाली शक्तियों को श्रेष्ठतम मानने का कवि का यही विश्वास प्रकट हुआ है।

१२.२.२ भावार्थ/कथ्य –

कवि केदारनाथ अग्रवाल प्रगतिशील चेतना के कवि हैं। उन्होंने जीवन को बेहतर बनाने की प्रक्रिया से जुड़े लोगों के महत्त्व को अपनी अनेक कविताओं में प्रतिपादित किया है। विवेच्य कविता भी इसी विचार को आगे बढ़ाती है। कवि का विश्वास है कि समाज को बदला जा सकता है। यह कार्य करने वालों को कविने मानव का श्रेष्ठतम रूप माना है उनके अनुसार श्रमशक्ति ही श्रेष्ठतम होती है। अत: सभी क्षेत्रों के श्रमिकों के योगदान को अंकित करते हुए उन्होंने उनमें अटूट आस्था भरी है और यह विश्वास प्रकट किया है कि नए समाज और जिंदगी को वे ही बेहतर बनाएँगे।

कवि का विश्वास है कि जो पत्थरों को तोड़ने की शक्ति रखते हैं, वे ही नई जिंदगी को गढ़ सकते हैं। जिनमें भगीरथ की गंगा की धारा को मोड़ने की शक्त हैं, उन श्रमिकों की श्रमशक्ति के यज्ञ को ही संसार में श्रेष्ठतम माना जा सकता है ।

कवि की मान्यता है कि जो लोग खदानें खोदते हैं और लोहे के भीतर सोये असुर को कर्म करने की ओर मोड़ देते हैं, अर्थात विनाशकारी शक्तियों को कर्मठता की ओर प्रवृत्त कर देते हैं, वे ही जिंदगी का सुंदर रूप बना सकते हैं। ऐसे श्रमिकों की श्रमशक्ति रुपती यज्ञ को कवि श्रेष्ठतम मानता है। उसके अनुसार जो आँधी-तूफान की दिशाएँ मोड़ने की शक्ति रखते हैं, वे ही जिंदगी का निर्माण कर सकेंगे। ये लोग शूर वीरों के चरणों की रक्त-रेखा का अंदाज लगा लेते हैं। आंधियों के रुख बदलने वाले इन श्रमिकों के श्रम-यज्ञ को ही कवि श्रेष्ठतम मानता है।

कवि के अनुसार जिंदगी को वे लोग ही गढ़ते हैं, जिनमें प्रलय के प्रवाह को रोकने की शक्ति होती है। ये ऐसे लोग होते हैं जो रक्त से डूबी धरती पर भी शांति का रास्ता खोज लेते हैं। ऐसे शांति के पुजारी श्रमिकों की श्रम-शक्ति को ही कवि श्रेष्ठतम मानता है। अंत में कवि इन सबके प्रति अपना विश्वास प्रकट करता है और इस युग के नये इन्सान की प्रतिबद्धता भी व्यक्त करता है कि इस श्रम शक्ति के यज्ञ में नये युग का इन्सान भी अपना सहयोग देगा और इससे जो नई जिंदगी निर्मित होगी, उसका वह पूरा-पूरा आनंद उठाएगा।

इस तरह इस कविता के माध्यम से श्रम करने वालों के प्रति कवि की अटूट आस्था व्यक्त हुई है। कवि उन सभी लोगों के श्रम की श्रेष्ठता सिद्ध करता है जो लोग जीवन और जगत को सुंदर बनाने के प्रयास में निरंतर लगे हुए हैं। उनके श्रम को कवि एक यज्ञ मानता है और यह विश्वास प्रकट करता है कि ये श्रमिक ही मानवता के श्रेष्ठ पुजारी हैं।

१२.२.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण –

जिंदगी को वह गढ़ेंगे जो प्रलय को रोकते हैं,

रक्त से रंजित धरा पर शांति का पथ खोजते हैं।

यज्ञ को इस श्रम-शक्ति के

श्रेष्ठतम मैं मानता हूँ।

संदर्भ - केदारनाथ अग्रवाल प्रगतिवादी काव्यधारा के प्रमुख कवि हैं। उन्होंने जीवन को बेहतर बनानेवाली शक्तियों को महत्त्व प्रदान करते हुए अनेक कविताएँ लिखी हैं। 'जो शिलाएँ तोड़ते हैं' ऐसी ही एक कविता है, जो हमारी पाठ्य पुस्तक 'प्रतिनिधि कविताएँ : केदारनाथ अग्रवाल' में संकलित की गई है ।

प्रसंग - इस कविता में कवि ने श्रमशक्ति को मानवता की बेहतरी के लिए निरंतर चल रहे यज्ञ के समान माना है। उसका विश्वास है कि जो लोग अपने श्रम से किसी भी रूप में जीवन को सुंदर बनाने का प्रयास करते हैं, उनकी श्रम-शक्ति श्रेष्ठतम है।

व्याख्या - कवि के अनुसार जो शिलाएँ तोड़कर गंगा की धारा को मोड़ने की शक्ति रखते हैं, वे ही असल में जीवन का निर्माण करते हैं। जो लोग खदानें खोद कर लोहे के भीतर छिपी आसुरी शक्ति को कर्मशीलता की ओर मोड़ देते हैं, वे ही जीवन को सुंदर बनाने में अपना योगदान देते हैं। इसी तरह जिनमें आँधियो का रुख मोड़ने की ताकत होती है,वे ही वीरों का अनुगमन करते हुए जीवन को बेहतर बनाने में अपना योगदान देते हैं। इसी क्रम में कवि यह मानता है कि जिंदगी को वे ही लोग गढ़ेंगे जो प्रलय की विनाशकारी ताकतों को रोक कर जीवन को सुरक्षित रखते हैं। ये वे लोग होते हैं जो रक्त में डूबी रणभूमि अर्थात हिंसा और युद्ध के बीच से शांति का मार्ग खोज निकालते हैं और धरती पर अमन-चैन स्थापित करते हैं। शांति के प्रयास में लगे इन मानवता के पुजारियों का योगदान भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं माना जा सकता। कवि इनकी इस श्रम शक्ति को भी श्रेष्ठतम मानता है।

विशेष - प्रस्तुत पाक्तियों मे श्रम शक्ति के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए निरंतर हिंसा और युद्ध में डूबी धरती पर शांति लाने का प्रयास करनेवाले शांति-दूतों के श्रम को कवि ने जीवन सुखमय और सुंदर बनाने में उतना ही महत्त्वपूर्ण माना है, जितना अन्य क्षेत्रों में किए जाने वाले श्रम को।

१२.२.४ बोध प्रश्न –

१) कवि ने श्रमशक्ति की श्रेष्ठता किस तरह सिद्ध की है?

२) केदारनाथ अग्रवाल ने जीवन को सुंदर बनाने में श्रम के महत्त्व को किस तरह प्रतिपादित किया है?

१२.२.५ वस्तुनिष्ठ/लघुत्तरी प्रश्न –

१) भगीरथ-नीर की निर्भय शिराएँ कौन मोड़ते हैं?

उत्तर : जो शिलाएँ तोड़ते हैं, वे ही भगीरथ नीर की निर्भय शिलाएँ मोड़ते हैं।

२) खदानें खोदने वाले कर्मरथ में किसे जोतते हें?

उत्तर : खदानें खोदने वाले लौह के सोये असुर को कर्म-रथ में जोतते हैं।

३) प्रभंजन हाँकने वाले रक्त-रेखा कहाँ से आँकते हें?

उत्तर : प्रलय को रोकने वाले क्या करते हैं?

४) प्रभंजन हाँकने वाले शूर-वीरोंके चरणों से रक्त-रेखा आँकते ।

उत्तर : प्रलय को रोकने वाले रक्त से रंजित धरा पर शांति का पथ खोजते हैं।

५) शक्ति-श्रम के यज्ञ में सहयोग कौन देना चाहता है?

उत्तर : नये युग का इन्सान शक्ति-श्रम के यज्ञ में सहयोग देना चाहता है।

१२.३ जिंदगी

१२.३.१ प्रस्तावना –

केदारनाथ अग्रवाल जनचेतना के कवि हैं। अतः उन्होंने अपनी कविताओं में सामान्य जन जीवन को प्रभावित करने वाली सभी संस्थाओं की गहरी पड़ताल की है। राजनीति वर्तमान जीवन को सर्वाधिक प्रभावित करने वाला तत्त्व है। अतः कवि केदार ने राजनीति से जुड़े लोगों के छल-छद्म और दोहरे आचरणों को बखूबी चित्रित किया है। जिंदगी कविता ऐसी ही है। राजनैतिक जीवन से जुड़े लोगों के सिद्धांत और आचरण के अंतर को उघाड़ने में यह कविता पूरी तरह सफल हुई है।

१२.३.२ भावार्थ/कथ्य –

जिंदगी कविता देश के आजाद होने के तीन वर्ष बाद पंद्रह अगस्त १९५० को लिखी गयी थी लेकिन इतने ही दिनों में कवि को लोगों के तमाम आचरणों में अंतर्विरोध दिखायी देने लगे थे। उसने जिंदगी में जो कुछ घटित होते हुए देखा, उससे लगा कि देश के भले लोगों की छाती दरकने लगी है। इस तरह इस कविता में कवि ने राजनैतिक-सामाजिक जीवन में लोगों के आचरण और सिद्धांत के विरोधाभासों और अंतर्विरोधों को उजागार किया है। इस प्रयास में उसने जनमानस में रची बसी पौराणिक कथाओं और चरित्रों को प्रतीकात्मक रूप में वर्तमान जीवन की जटिलताओं को उघाड़ने के लिए प्रयुक्त किया है।

देश को आजादी मिली लेकिन आजादी के नये माहौल में मनुष्य-मनुष्य के संबंधों में वह सुखद परिवर्तन नहीं आया जिस की उम्मीद आजादी के पहले की जा रही थी। इसके विपरीत जिन लोगों ने सत्ता अपने हाथ में ली, वे भी अंग्रेजों जैसा ही आचरण करने लगे। 'जिंदगी' की इन स्थितियों और परिवर्तनों को कवि ने ग्यारह दृश्यों में प्रस्तुत करके यह संकेत दिया है कि ये दृश्य देखकर देश की छाती दरक जाती है। अंत में वह स्वयं क्रातिकारी तूफान बनकर इस नरक से जिंदगी को मुक्त कराने का संकल्प लेता है।

कवि देखता है कि जो खादी त्याग, सादगी और देश सेवा का प्रतीक था, उसे पहनने वाले स्वार्थी हो गए हैं तथा अपनी ही पेट पूजा में जुटे हुए हैं। सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलने वाले गांधीजी के कांग्रेसी अनुयायी लंदन के अंग्रेज शासकों की लीक पर ही चलने लगे

हैं। आजाद देश का शासक वर्ग डॉलर के साम्राज्यवादी मौत-घर में आँख मूँद कर नृत्य करते हुए मगन है और अमेरिकी शासन के इशारे पर ही नाच रहा है। यह सब देखकर देश की छाती दरक जाती है, ह्रदय फट पड़ता है।

कवि कहता है कि जो अहिंसा के पुजारी निहत्थे हाथी की तरह थे, वे अब पीठ पर बम लादे हुए हैं। अहिंसा की भावना को उन्होंने ताक पर रख दिया है। जो देवकुल के किन्नर थे, राज परिवारों से जुड़े थे,वे ही अब मंत्री वेश में देश की जनता का खून पीते, शोषण करते और क्रांति का गीत गाते दिखायी देते हैं। यह देखकर भी छाती दरक जाती है।

देश की राजनीति में जो धर्मराज युधिष्ठिर की भाँति धर्म और नीति का आचरण करने वाले थे, वे ही अब राजनीति के जुए में द्रौपदी को दाँव पर लगाने से नहीं हिचक रहे। जो ज्ञान के सूर्य हैं, वे सब बुद्धिजीवी अर्थ-पिशाच बने शोषक पूँजीपतियों से स्वयं रोशनी माँग रहे हैं। जिन्हें दूसरों को ज्ञान की रोशनी बाँटनी थी, वे स्वयं धनिकों से पैसे माँगने में जुटे हैं। जिनके ऊपर योजनाओं के निर्माण का दायित्व है, वे शिखंड़ी की तरह नपुंसक बनकर अपनी कृपाण तोड़ रहे है। यह देखकर देश की छाती दरक उठती है।

कवि देखता है कि देश का खाद्यमंत्री लोगों के लिए अन्न उपजाने वाली फसलों के बदले शूल बोता है। वह एक तरफ भुखमरी को जन्म देता है और दूसरी ओर खुद वन-महोत्सव का आनंद लेता है। जो कभी लौह -नर मारने जाते थे, उनके वृद्ध शरीर से दंड के दानव निकलते दिखायी देते हैं और व्यक्ति की स्वाधीनता खत्म होती जाती है। युवा पीढ़ी रूपी अभिमन्यु को कैद कर लिया जाता है। यह अन्याय देखकर देश की छाती दरक उठती है।

स्वतंत्रता मिलने के बाद भी जन-सुरक्षा के बहाने लोगों की आजादी पर तरह-तरह की रोक लगायी जाती है। चीन की दीवार की तरह प्रतिबंधों के घेरे खड़े किये जाते हैं। जो लेखक इस सरकारी अत्याचार का विरोध करते हैं, उन्हें जेल भेज दिया जाता है। अभिव्यक्ति की आजादी भी नहीं रह जाती। इस तरह स्वतंत्र भारत में क्रांति की लपलपाती आग के भी ओठ सिल दिये जाते हैं। विरोध की आग दबा दी जाती है।

देश में कागजी प्रगति दिखाकर अच्छी छवि बनाने की कोशिश की जाती है। छवि निर्मित करने वाले इस कागजी जहाज को पानी में बहते देखकर किनारे बैठे असली मल्लाहों को हँसी आती है। पंचवर्षीय योजनाओं के नाम पर आकाश के तमाम फरिश्ते धरती पर आते हैं और यहाँ गोबर की ढेर पर आनंद पूर्वक बैठकर चुपचाप बंशी बजाते, गीत गाते कल्पना-कामिनी से प्यार करते दिखायी देते हैं। ये हवाई योजनाएँ बनाने वाले व्यर्थ के खोखले शब्दों की हवाई यात्रा बड़ी-बड़ी बातों के रूप में करते हैं। लेकिन यथार्थ में कोई कार्य नहीं होता। यह देखकर देश की छाती दरक उठती है।

एक दृश्य यह भी दिखायी देता है कि कसाइयों के न्यायालय में जनतंत्र के करोड़ों राम और सीता जैसे आदर्शवादी गूँगे पशुओं की तरह बलि चढ़ जाते हैं। यानी सीधे-सादे लोगों को न्याय नहीं मिल पाता। अलग तेलंगाना राज्य की माँग करने वाले भारतीयों पर मृत्यु का चाबुक चला दिया जाता है। इस तरह अलग राज्य और अपने लोकतांत्रिक अधिकारों की माँग करने वाले क्रांतिकारियों पर घात होते देखा जाता है। इन वीरों की माताएँ वीराने में रोती-विलपती रहती हैं लेकिन उनकी कोई नहीं सुनता ।

साधु-सन्यासियों के आचरण भी संदिग्ध हो गए हैं। जो त्यागी हैं, वे भी अलौकिक वस्त्र पहने मौत की घंटी बजा रहे हैं। वे भी सांसारिक वस्तुओं के लिए मृत्यु के कारण बन रहे हैं। वे स्वर्णमुद्राओं का चढ़ावा भेंट लेते हैं। ये राजगुरु बनकर मुनाफाखोर व्यापारियों-धनिकों को आशीष देते हैं और जो मेहनतकश आम आदमी है, उसे दुष्ट कहकर शाप देते और उनके प्राण हरण कर लेने में भी संकोच नहीं करते है। यह देखकर छाती दरक उठती है।

संसद एवं विधानमंडलों में कौंसिल में जो लोग जाते हैं, वे कठपुतली की तरह दूसरों के इशारों पर तरह-तरह की राजनीतिक चालें चलते हैं। वे ऐसे कानून बनाते हैं जो रेत के रस्से की तरह निरर्थक होते हैं। वे वायुयानो की तेज और लंबी उड़ानों की तरह लंबे-लंबे भाषण देते हैं और उन भाषणों में झूठ का इतिहास गढ़ते हैं। वे गाय के पैरों के निशान से बने गड्ढे में सागर का जल भरने की कोशिश करते हैं। वे वस्तुतः देशद्रोही रावण होते हैं लेकिन राम नाम का भजन करते हुए वे सबसे बड़े देशभक्त बन कर लोगों को धोखे में रखते हैं।

जो विनाश के जादूगर हैं वे संविधान सम्मत शासन की सभा में दंड़ की डौंडी पीटकर अपने विनाशकारी कृत्य को भी संविधान-सम्मत दंड घोषित करा देते हैं । कंस जैसे अत्याचारी अपने अत्याचार की मुंड माला बनाते रहते हैं। काल भैरव के सगे भाई रक्त की धारा बहाते रहते हैं । इन अत्याचारियों को कोई कुछ नहीं कह पाता। इनके विपरीत परिस्थितियाँ इतनी विकट हो गयी हैं कि व्यास मुनि जैसा बुद्धिमान-तेजस्वी और रचनाकार धूप में रिक्शा चलाते दिखाया देता है। भीम और अर्जुन जैसे वीर-ओजस्वी गधे की तरह बोझ ढोते दिखायी देते हैं । सत्यवादी हरिश्चंद्र अन्याय से भरे घर में झूठ की गवाही देते फिरते हैं। द्रौपदी, शैव्या और शची जैसी पतिव्रता स्त्रियाँ रुप की दूकान खोलकर अपनी लज्जा दो-दो टके में बेचती नजर आती हैं। इन विकट परिस्थितियों को देखकर देश की छाती दरक उठती है, ह्रदय फट जाता है। इन स्थितियों को देखकर कवि बहुत ही उत्तप्त हो उठता है। उसके क्रोध और विक्षोभ का ठिकाना नहीं रहता। वह भीम की शक्ति और अर्जुन की धोर प्रतिज्ञा से प्रेरित होकर क्रांतिकारी शक्तियों का तूफान बनकर, शूरवीरों की शहादत का हथौड़ा हाथ में लेकर बार-बार चोट करता है और उन तमाम बंधनों को तोड़कर जिंदगी को इन अन्यायियों-अत्याचारियों एवं पाखंडी आचरण करने वालों के अंतर्विरोधों से मुक्त कराने की चेष्टा करता हूँ।

इस तरह कवि केदारनाथ अग्रवाल ने आजादी के बाद सामाजिक-राजनीतिक जीवन में आये व्यावहारिक अंतर्विरोधों का चित्रण करते हुए लोगों को इन तमाम बंधनों से छुटकारा दिलाने को संकल्प व्यक्त किया है। जिंदगी को नरक से निकालकर उन्होंने उसे खुशहाल बनाने का प्रयास किया है।

१२.३.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण –

राजनीतिक धर्मराजों को जुए में
द्रौपदी को हारते में देखा हूँ ।
ज्ञान के सब सूरजों को
अर्थ के पैशाचिकों से
रोशनी को माँगते मैं देखता हूँ ।
योजनाओं के शिखंडी सूरमों को
तेग अपनी तोड़ते मैं देखता हूँ ।

संदर्भ - प्रगतिवादी चेतना-संपन्न वरिष्ठ कवि केदारनाथ अग्रवाल ने अपने समय और समाज के तमाम अंतर्विरोधों को अपनी अनेक कविताओं में बड़ी शिद्दत के साथ व्यक्त किया है। 'जिंदगी' कविता भी इन्हीं में से एक है। प्रस्तुत पंक्तियाँ इसी कविता से ली गयी हैं।

प्रसंग - आजादी मिलने पर लोगों को एक उम्मीद थी कि आजादी के बाद अंग्रेजी शासन-काल में हो रहे शोषण और अत्याचारों से मुक्ति मिलेगी । अंग्रेजों के बाद जिन लोगों को शासन चलाने का दायित्व सौंपा गया था, उनसे अपेक्षा की जा रही थी कि वे न्याय और समता के आदर्श पर चलते हुए आम आदमी के जीवन को सुखमय बनाने का प्रयास करेंगे लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं हुआ। नेताओं-शासकों के व्यवहार में तमाम तरह के अंतर्विरोध दिखायी देने लगे। प्रस्तुत पंक्तियों में कुछ ऐसे ही अंतर्विरोधों को दिखाने का प्रयास करते हुए कवि ने वर्तमान जीवन का यथार्थ रुप प्रस्तुत किया है ।

स्पष्टीकरण - विषमतापूर्ण राजनीतिक परिस्थितियों के कारण देश के हालात बदतर होते जा रहे हैं। ऐसे में आम आदमी का जीवन कठिन होता जा रहा है। इन विषम परिस्थितियों में कवि देशवासियों का ह्रदय फटते हुए देखता है। आज परिस्थितियाँ ऐसी हैं कि नेतागण सामान्यजन को दाँव पर लगाने से नहीं चूकते। जो राजनीति में धर्मराज की तरह न्याय-धर्म पर चलने का दावा करने वाले हैं, वे ही स्वार्थवश जनसामान्य रूपी द्रौपदी को जुए में हार जाते हैं। इसी तरह ज्ञानी रूपी सूरज का कार्य लोगों में रोशनी बाँटना है। लेकिन वे अर्थ पिशाचों से अपने लिए रोशनी माँगते दिखायी देते हैं। उन्होंने ज्ञान का प्रकाश खो दिया है और उन्हें लगता है कि जीवन में उजाला पूँजीपतियों की शरण में जाकर ही मिलेगा । इसी तरह पंचवर्षीय योजनाएँ भी लोगों के हित के लिए बनायी जाती हैं लेकिन इन योजनाओं का लाभ सामान्य जनता को नहीं मिल पाता। अतः योजनाएँ बनानेवाले शिखंडी सूरमा अपनी तलवार तोड़ते दिखायी देते हैं।

विशेष - इस तरह कवि ने राजनीतिक विषमताओं का चित्रण करते हुए यह संकेत किया है कि राजनीतिक तौर पर जिनसे अपेक्षाएं की जा रही थीं, वे उसे पूरा नहीं कर पा रहे हैं। कवि ने यहाँ द्रौपदी, शिखंडी, धर्मराज आदि के उल्लेख द्वारा प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति दी है।

व्यास मुनि को धूप में रिक्शा चलाते,
भीम, अर्जुन को गधे का बोझ ढोते देखता हूँ
सत्य के हरिचंद को अन्याय घर में
झूठ की देते गवाही देखता हूँ
द्रौपदी को और शैव्या को, शची को
रूप की दूकान खोले
लाज को दो-दो टक्के में बेचते में देखता हूँ।

संदर्भ - (पहले अवतरण की व्याख्यावाले संदर्भ की तरह ही)

प्रसंग - प्रस्तुत कविता में आजादी के बाद देश भर में फैले छल-छदम और राजनीतिक प्रपंच को गंभीरता से चित्रित किया गया है। कवि देखता है, कि अहिंसा के पुजारी बम का बोझ लादे हुए फिर रहे हैं। बुद्धिजीवी वर्ग धन-पिशाचों की शरण में हैं। खाद्यमंत्री भूख को जन्म देता है। इस कसाई व्यवस्था में राम-सीता जैसे साधे लोग मूक पशुओं की तरह बलि चढ़ जाते हैं। राजगुरु स्वर्ण-मुद्राओं का चढ़ावा लेते हैं। लंबे-लंबे भाषण देने वाले नेता लोग झूठ का लंबा इतिहास गढ़ते हैं। इस प्रकार सब तरफ विरोधाभाषी स्थितियाँ हैं।

स्पष्टीकरण - कवि तमाम मिथकीय चरित्रों के माध्यम से वर्तमान जीवन की विडंबनाओं को व्यक्त करता है । वह देश की छाती फटते हुए उस समय अनुभव करता है जब उसे दिखायी देता है कि व्यास मुनि जैसा ज्ञानी और भविष्य द्रष्टा धूप में रिक्शा चला रहा है तथा भीम और अर्जुन जैसे वीर पुरुष गधे की तरह बोझ ढो रहे हैं, वहीं सत्य हरिश्चंद्र अन्याय-घर में झूठी गवाही दे रहे हैं। यहाँ तक कि द्रौपदी, शैव्या तथा राची जो पतिव्रता होने के लिए मशहूर हैं, रूप की दूकान खोले बैठी हैं तथा दो-दो टके में लज्जा बेच रही हैं। इस तरह कवि संकेत करता है कि समाज में हर तरफ अंतर्विरोधी एवं विरोधाभासी व्यवहार व्याप्त हैं ।

१२.३.४ बोध प्रश्न –

१) 'जिंदगी' कविता में सामान्यजन की यथार्थ स्थितियों का चित्रण किस तरह किया गया है?

२) 'जिंदगी' कविता में स्वातंत्र्योत्तर जीवन-स्थितियों की विडंबनाएँ किस तरह व्यक्त की गई हैं?

३) कवि केदारनाथ अग्रवाल किन कारणों से देश की छाती दरकते अनुभव करते हैं?

टिप्पणी –

१) 'जिंदगी' कविता में देश की कानून व्यवस्था।

२) 'जिंदगी' कविता में व्यक्त स्वातंत्र्योत्तर अराजक स्थिति।

३) 'जिंदगी' कविता में चित्रित राजनेता।

१२.३.५ वस्तुनिष्ठ/लघूत्तरी प्रश्न –

१) खद्दरधारी लोग किस कमाई में जुट गये हैं?

उत्तर : खद्दरधारी लोग पेटपूजा की कमाई में जुट गये हैं

२) लंदनी गौरांग प्रभुओं की लीक पर कौन चलता हुआ दिखायी देता है?

उत्तर : लंदनी गौरांग प्रभुओं की लीक पर चलते हुए सत्य के जारज पुत्र दिखायी देते हैं।

३) अहिंसा के निहत्थे हाथी पीठ पर क्या लादे दिखायी देते हैं?

उत्तर : अहिंसा के निहत्थे हाथी पीठ पर बम का बोझ लादे दिखायी देते हैं।

४) राजनीतिक धर्मराज जुए में किसे हारते हैं?

उत्तर : राजनीतिक धर्मराज जुए में द्रौपदी को हारते हैं।

५) ज्ञान के सूरज किससे रोशनी माँगते हैं?

उत्तर : ज्ञान के सूरज अर्थ के पैशाचिकों से रोशनी माँगते हैं।

६) भुखमरी को कौन जन्म देता है?

उत्तर : खाद्यमंत्री भुखमरी को जन्म देते हैं।

७) दंड के दानव कहाँ से निकलते दिखायी देते हैं?

उत्तर : दंड के दानव लौह-नर के वृद्ध शरीर से निकलते दिखायी देते हैं।

८) मुक्त लहरों पर किसके बहाने रोक लगती है?

उत्तर : मुक्त लहरों पर जन सुरक्षा के बहाने रोक लगती है।

९) शून्य शब्दों के हवाई सैर करते कौन दिखायी देते हैं।

उत्तर : योजनाओं के फरिश्ते शून्य शब्दों के हवाई सैर करते दिखायी देते हैं।

१०) मूक पशुओं की तरह राम-सीता कहाँ बलिदान होते दिखायी देते हैं।

उत्तर : मूक पशुओं की तरह राम-सीता बूचड़ों के न्यायघर में बलिदान होते दिखाई देते हैं।

११) मृत्यु का चाबुक किस पर चटकते हुए कवि देखता है?

उत्तर : मृत्यु का चाबुक वीर तेलंगानवों पर चटकते हुए कवि देखता है।

१२) राजगुरु किसे आशीष और किसे शाप देते हैं?

उत्तर : राजगुरु मुनाफाखोरों को आशीष और कमकरों को दुष्ट कहकर शाप देते हैं।

१३) कवि गोखुरों में सिंधु भरते किसे देखता हैं?

उत्तर : कौंसिलों में कठपुतली बनकर रहने वाले नेताओं को कवि गोखुरों में सिंधु भरते देखता है।

१४) झूठ का लंबा इतिहास कौन गढ़ते हैं?

उत्तर : कौंसिलों में कठपुतली बने नेतागण झूठ का लंबा इतिहास गढ़ते हैं।

१५) मुंडमालाएँ बनाते कौन दिखायी देता है?

उत्तर : कंस की प्रतिमूर्तियां मुंड मालाएँ बनाते दिखायी देती हैं।

१६) काल भैरव के सहोदर किसकी धारा बहाते हैं?

उत्तर : काल भैरव के सहोदर रक्त की धारा बहाते हैं।

१७) व्यास मुनि क्या चलाते दिखायी देते हैं?

उत्तर : व्यास मुनि धूप में रिक्शा चलाते दिखायी देते हैं।

१८) अन्याय-घर में झूठ की गवाही कौन देता है?

उत्तर : अन्याय-घर में हरिश्चन्द्र झूठ की गवाही देते हैं।

१९) रूप की दूकान किसने खोल रखी है?

उत्तर : दौपदी, शैव्या और शची ने रूप की दूकान खोल रखी है।

२०) कवि किसे नरक से मुक्त करता है?

उत्तर : कवि जिंदगी को नरक से मुक्त करता है।

■■■■■

१३

प्रतिनिधि कविताएँ - केदारनाथ अग्रवाल

१) अभिशाप जग का २) मजदूर का जन्म ३) हथौड़े का गीत

इकाई की रूपरेखा –

१३.० उद्देश्य

१३.१ अभिशाप जग का

१३.१.१ प्रस्तावना

१३.१.२ भावार्थ/कथ्य

१३.१.३ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण

१३.१.४ बोध प्रश्न

१३.१.५ वस्तुनिष्ठ/लघूत्तरी प्रश्न

१३.२ मजदूर का जन्म

१३.२.१ प्रस्तावना

१३.२.२ भावार्थ/कथ्य

१३.२.३ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण

१३.२.४ बोध प्रश्न

१३.२.५ वस्तुनिष्ठ/लघूत्तरी प्रश्न

१३.३ हथौड़े का गीत

१३.३.१ प्रस्तावना

१३.३.२ भावार्थ/कथ्य

१३.३.३ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण

१३.३.४ बोध प्रश्न

१३.३.५ वस्तुनिष्ठ/लघूत्तरी प्रश्न

१३.० उद्देश्य

– इस इकाई उद्देश्य सामाजिक विषमताओं को दूर करने के प्रति कवि की प्रतिबद्धता को रेखांकित करना है ।

- इसके द्वारा विवेच्य कविताओं का कथ्य और संदर्भ सहित स्पष्टिकरण संबंधी उत्तर लिखा जा सकेगे । साथ ही वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर भी दिये जा सकेंगे ।

१३.१ अभिशाप जग का

१३.१.१ प्रस्तावना –

अपनी प्रगतिशील विचारधारा के कारण कवि केदारनाथ अग्रवाल ने सामाजिक विषमताओं पर करारा प्रहार किया है। उनके अनुसार समाज में व्याप्त विषमाताएँ ईश्वर प्रदत्त नहीं बल्कि इस संसार के लोगों द्वारा है निर्मित अभिशाप हैं। कवि इन विषमताओं को दूर करने के लिए कल्प लेता है और इसके लिए जिम्मेदार तत्त्वों को दंडित कराना चाहता है।

१३.१.२ भावार्थ/कथ्य –

समाज में फैली विषमताओं को जग का अभिशाप मानते हुए कवि ने स्पष्ट रूप से दो वर्गों का उल्लेख किया है, जिसमें से एक वर्ग शोषित है तो दूसरा शोषक। एक अमीर और सुविधा-संपन्न है तो दूसरा गरीब और अभाव ग्रस्त। सदियों से यह क्रम चलता चला आ रहा है। कवि इस विषमता को ईश्वर का विधान नहीं मानता बल्कि उसके अनुसार यह इस संसार के लोगों की ही देन है।

कवि संकेत करता है कि किसान दिन-रात मेहनत करके खेतों को जोतता-बोता है। न जाने कितनी मुसीबतें उठाकर वह फसलें उगाता है किंतु जब फसल काटकर घर ले जाने का वक्त आता है तो कोई आधीरात में ही उसे काटकर अपना बना लेता है। इस तरह उसकी सारी मेहनत पर पानी फिर जाता है। कवि यहाँ संकेत करता है कि मेहनत कोई करता है और उसका फल कोई और खाता है। उसके अनुसार किसान के साथ यह अन्याय समाज के ही कुछ शक्तिशाली लोग करते हैं। अतः यह भगवान द्वारा किया जाने वाला अन्याय नहीं है बल्कि यह इसी संसार के लोगों द्वारा किया जाने वाला अन्याय है जो किसान के लिए अभिशाप बन जाता है।

इसी तरह अभावग्रस्त गरीब और सुविधा संपन्न व्यक्ति के बीच व्याप्त विषमता का उल्लेख करते हुए कवि कहता है कि एक तरफ वह गरीब है जो एक रोटी के लिए भी तड़पता है। दिनरात मेहनत करने के बाद भी उसे ठीक से दो वक्त का भोजन नसीब नहीं होता। वह आधा पेट खाकर किसी तरह जीवन-निर्वाह करता है। दूसरी तरफ वह सुविधा संपन्न वर्ग है जो गरीब का ही शोषण करके निरंतर संपन्न होता चला जाता है। वह धी-दूध और शक्कर का उपभोग करता है। उसका पेट हमेशा भरा रहता है। कवि के अनुसार अमीर और गरीब के बीच की यह विषमता ईश्वर द्वारा नहीं बल्कि इसी संसार के लोगों द्वारा निर्मित सामाजिक विषमता है जहाँ एक सुविधा संपन्न है तो दूसरा अभावग्रस्त। कवि इसे जग का अभिशाप मानता है।

कवि अमीर एवं गरीब घरों की स्त्रियों में अंतर बताते हुए भी सामाजिक विषमता की ओर संकेत करता है। कवि के अनुसार गरीब वर्ग की स्त्री एक वल्कल वस्त्र पहने अपनी लज्जा को छिपाने का प्रयत्न करती है किंतु वह वस्त्र उसकी लज्जा ढकने में असमर्थ होता है। दूसरी ओर सुविधा सम्पन्न वर्ग की महिलाएँ तरह-तरह के वस्त्र पहनकर भी अपने भीतर के अनेक प्रकार के दोषों को छिपाने का प्रयत्न करती है लेकिन छिपा नहीं पाती। उनकी अनेकों कमजोरियॉ अच्छे

वस्त्रों को पहनने के बाद भी उजागर हो उठती हैं। कवि इसे विधि का विधान नहीं बल्कि इसी जग का अभिशाप मानता है।

कवि सामाजिक विषमता के उस रूप पर भी व्यंग्य करता है जहाँ एक तरफ गरीब वर्ग का विद्यार्थी होता है जो पढ़ने के लिए व्याकुल होता है किंतु उसको पढ़ने के लिए पुस्तकें भी नहीं मिलतीं । दूसरी ओर वह अमीर वर्ग का लड़का होता है जो रुपए के बल पर विद्या अर्जित करता है और छल-कपट के माध्यम से अधिक से अधिक धन-दौलत और सोना-चाँदी कमाता है। इस तरह कवि ने शिक्षा जैसी बुनियादी सुविधा से भी वंचित रह जाने वाले गरीबों की ओर संकेत करते हुए अमीरों द्वारा पैसे के बल पर पढ़-लिख लेने और शिक्षा के बल पर छल-छद्म से पैसे कमाने पर व्यंग्य करके इसे इसी जगत का अभिशाप माना है।

अंत में कवि इस सामजिक विषमता को दूर करने के प्रति अपनी प्रतिबद्धता प्रकट करता है। उसके अनुसार वह नये समय का इन्सान है जिसमें नयी चेतना है। उसी चेतना के अनुसार वह वर्ग विहीन समाज बनाना चाहता है। अतः वह उस सामाजिक विषमता रूपी अभिशाप को खंडित करना चाहता है और जो लोग इस वर्ग-भेद का अभिशाप बनाये रखना चाहते है, उन्हें वह न्याय पूर्वक दंडित भी करना चाहता है।

१३.१.३ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण –

एक विद्या
के लिए व्याकुल रहे, पुस्तक न पाए,
दूसरी विद्या पढ़े, छल-छद्म से सोना कमाए,
मैं इसे विधि का नहीं, अभिशाप जग का जानता हूँ।

संदर्भ - कवि केदारनाथ अग्रवाल द्वारा लिखी गयी ये पंक्तियाँ 'जग का अभिशाप' कविता से ली गयी हैं। यह कविता हमारी पाठ्य पुस्तक 'प्रतिनिधि कविताएँ:केदारनाथ अग्रवाल मे ंसंकलित हैं जिसके संपादक अशोक त्रिपाठी हैं।

प्रसंग - केदारनाथ अग्रवाल प्रगतिशील विचारधारा के कवि हैं। अतः उन्होंने अपनी कविताओं में समाज में व्याप्त विषमताओं का प्रखर विरोध किया है। जग का अभिशाप कविता भी इसी सामाजिक विषमता को रेखांकित करती है। कवि ने इस कविता में अनेक स्तरों पर वर्गीय विषमता को रेखांकित करते हुए उसे ईश्वर का विधान नहीं बल्कि इसी संसार के लोगों द्वारा निर्मित माना है। अतः वह इस विषमता रूपी अभिशाप को खंडित कर के समता स्थापित करना चाहता है और विषमता बनाये रखने वालों को न्यायोचित ढंग से दंडित भी करना चाहता है।

व्याख्या - कवि सामाजिक विषमता के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए कहता है कि समाज में एक तरफ किसान है जो जी-तोड़ मेहनत करके खेतों को जोतता-बोता है और फसलें उगाता है किंतु कुछ सबल लोग आधीरात को ही उसकी फसल काट कर अपना बना लेते हैं। एक तरफ वह गरीब है जो एक रोटी के लिए भी तड़पता है और हमेशा आधे पेट खाकर ही गुजारा करता है । दूसरी तरफ अमीर वर्ग के लोग हैं जो दूध-धी और शक्कर भर पेट खाते हैं। एक तरफ गरीब स्त्री को अपनी लाज ढकने के लिए भी वस्त्र नहीं मिलते हैं तो दूसरी ओर अमीर महिलाएँ बहुत से वस्त्र पहनकर अपनी कमजोरियों को छिपा जाती हैं। इसी क्रम में कवि कहता है कि एक तरफ गरीब वर्ग है जो पढ़ने के लिए व्याकुल रहता है किंतु उसे पुस्तकें और अन्य सुविधाएँ नहीं

मिल पातीं । दूसरी ओर समाज के वे अमीर लोग हैं जो धन के बल पर विद्या अर्जित कर लेते हैं । तरह-तरह के छल-छद्म से अधिक से अधिक धन और सोना कमाते हैं। यह सामाजिक विषमता कोई विधि का विधान नहीं है, बल्कि इसी जगत के लोगों द्वारा निर्मित विडंबन है जिसे कवि जगत का अभिशाप मानता है।

विशेष - यहाँ कवि ने समाज में व्याप्त विषमता का उल्लेख करते हुए इस सामाजिक विडंबना पर प्रहार किया है कि जहाँ गरीब को पढ़ने की बुनियादी सुविधाएँ भी उपलब्ध नहीं हैं, वहीं अमीर वर्ग पढ़-लिखकर भी छल-कपट से सोना कमाता है।

१३.१.४ बोध प्रश्न –

१) केदारनाथ अग्रवाल ने सामाजिक विषमता को जग का अभिशाप क्यों माना है?

२) 'जग का अभिशाप' कविता में सामाजिक-विषमता रूपी अभिशाप को खंडित करने का संकल्प किस तरह प्रकट हुआ है?

३) 'जग का अभिशाप' कविता का व्यंग्य स्पष्ट कीजिए।

टिप्पणी :

१) 'जग का अभिशाप' कविता का कथ्य.

२) 'जग का अभिशाप' में व्यक्त सामाजिक विषमता.

३) 'जग का अभिशाप' का प्रतिपाद्य.

१३.१.५ वस्तुनिष्ठ/लघूत्तरी प्रश्न –

१) जोत-बो कर फसल कौन उगाता है?

उत्तर : जोत-बो कर फसल किसान उगाता है।

२) दूसरे द्वारा उगायी फसल आधीरात में काटकर अपना बनाने को कवि क्या मानता है?

उत्तर : दूसरे की उगायी फसल आधीरात में काटकर अपना बनाने को कवि जग का अभिशाप मानता है।

३) एक रोटी के लिए भी कौन तड़पता है?

उत्तर : गरीब वर्ग एक रोटी के लिए भी तड़पता है।

४) धी-दूध और शक्कर का भरपेट मजा कौन पाता है?

उत्तर : अमीर शोषक वर्ग धी-दूध और शक्कर का भरपेट मजा पाता है?

५) अपनी लाज कौन गँवाता है?

उत्तर : एक वल्कल वस्त्र पहने गरीब की औरत अपनी लाज गँवाती है।

६) अपने सौ छिद्र कौन छिपाता है?

उत्तर : बहुवस्त्र पहने अमीर घरों की औरतें अपने सौ छिद्र छिपाती हैं।

७) विद्या के लिए व्याकुल रहने वाला क्या नहीं पाता?

उत्तर : विद्या के लिए व्याकुल रहने वाला पुस्तक नहीं पाता।

८) छल-छंद से सोना कैसे कमाया जाता है?

उत्तर : विद्या का गलत प्रयोग कर छलछंद से सोना कमाया जाता है।

९) नया इन्सान अभिशाप को क्या करना चाहता है?

उत्तर : नया इन्सान अभिशाप को खंडित करना चाहता है।

१०) नया इन्सान शाप के प्रतिपालकों को किसके द्वारा दंडित करना चाहता है?

उत्तर : नया इन्सान शाप के प्रतिपालकों को न्याय द्वारा दंडित करना चाहता है।

१३.२ मजदूर का जन्म

- इस इकाई द्वारा मजदूर का जन्म कविता का केंद्रीय भाव और कथ्य स्पष्ट हो सकेगा।
- मजदूर वर्ग के प्रति कवि की पक्षधरता स्पष्ट हो सकेगी।
- इसके माध्यम से संदर्भ सहित स्पष्ठिकरण लिखना ज्ञात हो सकेगा।
- इस कविता से संबंधित बोध प्रश्नों एवं वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का उत्तर ज्ञात हो सकेगा।

१३.२.१प्रस्तावना –

'मजदूर का जन्म' कविता श्रमिक वर्ग की मानसिकता को उजागर करती है। एक मजदूर के यहाँ जब कोई बालक जन्म लेता है तो अलग-अलग लोगों की प्रतिक्रिया अलग-अलग होती है। कोई उसे हथौडे वाला मजदूर मानकर-हाथी की तरह बलवान मानता है तो कोई तरेरी आँखों वाला। माता के लिए वह अँधेरा हरनेवाला है तो दादा के लिए सबेरा करनेवाला। जनता के लिए वह सलामत लानेवाला है तो सरकार के लिए कयामत ढानेवाला है।

१३.२.२ भावार्थ/कथ्य –

'मजदूर का जन्म' कविता मजदूर वर्ग की दशा और मानसिकता को प्रतिबिंबित करती है। मजदूर के घर बच्चे के जन्म लेने पर अलग-अलग लोगों की अलग-अलग प्रतिक्रियाएँ होती हैं। इन प्रतिक्रियाओं में ही उनकी छिपी हुई इच्छाएँ प्रकट हुई हैं। कवि के अनुसार मजदूर के घर में एक हथौड़े वाला और हुआ है। तात्पर्य यह कि घर के अन्य लोग तो हथौड़ेवाले हैं ही, यह बच्चा भी भविष्य में हथौड़े को अपने रोजगार का साधन बनाने वाला है। कवि के अनुसार हथौड़ा उसे विरासत में मिला है। हथौड़े को अपने रोजगार का साधन बनाने के लिए हथौड़े चलाने वाले मजबूत हाथ चाहिए । अतः कवि का संकेत है कि मजदूर के घर जन्म लेने वाला यह बच्चा हाथी की तरह बलवान और जहाज की तरह शक्तिशाली भुजाओं वाला होगा। उसके हाथों में वह शक्ति होगी, जो जहाज के शक्तिशाली पंखों की तरह अपार होगी। यह मजदूर का बच्चा आगे चलकर सच्चा इन्सान बनेगा जो सूरज की तरह सबको समान भाव से रोशनी बाँटता फिरेगा। लोगों के जीवन का अंधेरा दूर कर वह आशा की किरणें बिखेरेगा। इसके साथ ही उसमें अन्याय-अत्याचार के खिलाफ आँखें तरेरने की क्षमता भी होगी। वह दीन-दुखी सामान्यजन के जीवन को रोशनी से भरने के साथ-साथ उनके जीवन में अँधेरे भरनेवालों के विरुद्ध संघर्ष भी करने वाला होगा।

इस हथौड़ेवाले के जन्म के बाद परिवार वालों के मन में तरह-तरह की इच्छाएँ और सपने बनने लगते हैं। बच्चे के जन्म के बाद माँ सोचती है कि उसके जीवन का अंधेरा दूर करने वाला आ गया है। अब उसके जीवन का हर अंधेरा, हर दुख और संकट खत्म हो जाएगा। घर में किसी भी चीज की कमी नहीं रहेगी। दादा भी उस बच्चे की ओर इस उम्मीद से भर कर

देखते हैं कि अब उनके जीवन में सवेरा करनेवाला आ गया है। दुर्दिन की रात अब बीत जाएगी। सामान्य जनता भी उसको देखकर यही पुकारती है कि उनकी सलामती लाने वाला इस जीवन में आ गया है क्योंकि यह अन्याय और दमन का प्रखर विरोधी है। व्यवस्था में जो भी विसंगतियाँ होंगी, उनको दूर करने का इसका प्रयास होगा। इसीलिए कवि कहता है कि यह मजदूर का बच्चा भी कयामत ढानेवाला होगा।

इस तरह कवि केदारनाथ अग्रवाल ने यह स्पष्ट किया है कि एक मजदूर के बच्चे का जन्म लेना बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। वह अपने परिवार, समाज और देश के अँधेरे को दूर कर सवेरा करता है। उसके हाथ जहाज के समान लंबे-चौड़े हैं। वह हाथी की तरह बलवान है। वह मानव-विरोधी सरकारों के लिए कयामत ढाने वाला तथा उनकी विकृत संस्कृति के साम्राज्य को संगठित होकर उखाड़ फेकनेवाला है। इस तरह वह जनता के जीवन को सुखकर बनाने वाला है। कवि यहाँ यह रेखांकित करता है कि सामान्य जनता की समस्याओं के समाधान के लिए मजदूरों की विचारधारा और उनके जैसी क्रियाशीलता आवश्यक होती है। संघर्षशीलता का पक्षधर होने के नाते कवि इस मजदूर के जन्म में अन्याय और शोषण के खिलाफ जनसंघर्ष की संभावना देखता है। उसके अनुसार यह मजदूर सरकारी तंत्र के खिलाफ कयामत लाकर जनता की सलामती स्थापित करेगा।

१३.२.३ संदर्भसहित स्पष्टीकरण –

जनता रही पुकार:
सलामत लाने वाला और हुआ!
सुन ले री सरकार !
कयामत ढाने वाला और हुआ!

संदर्भ - कवि केदारनाथ अग्रवाल प्रगतिशील काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि हैं। उनकी ही लिखी हुई कविता है 'मजदूर का जन्म' जो हमारी पाठ्यपुस्तक 'प्रतिनिधि कविताएँ : केदारनाथ अग्रवाल' में संकलित है। इसके संपादक अशोक त्रिपाठी जी हैं। प्रस्तुत पंक्तियाँ इसी कविता से ली गयी हैं।

प्रसंग - इस कविता में एक मजदूर के घर बच्चे के जन्म लेने पर अलग-अलग लोगों के मन में अलग-अलग उठने वाले विचारों को चित्रित किया गया है। कवि मजदूरों की संघर्षशीलता और कर्मठता का महत्त्व प्रतिपादित करते हुए कहता है कि एक मजदूर के बच्चे का जन्म माता-पिता और परिवार के लिए जहाँ अँधेरे को दूर करने वाला है, वहीं सरकार के लिए कयामत ढाने वाला है।

व्याख्या - कवि केदारनाथ अग्रवाल के अनुसार मजदूर के घर बच्चे का जन्म लेना अर्थात, एक हथौड़े वाले का इस दुनिया में और आना है। यह मजदूर का बच्चा हाथी जैसा बलवान और जहाज की तरह शक्तिशाली हाथों वाला हैं। वह सूरज की तरह इन्सानियत से भरा तथा अन्याय का विरोधी हैं। माता उसे अँधेरा दूर करनेवाला मानती है तो दादा सवेरा करनेवाला। इसी संदर्भ में कवि की मान्यता है कि यह बच्चा जहाँ अपने परिवार का दुख:दर्द और दुर्दिन का अँधेरा दूर करने वाला है वहीं अपने समाज और देश में फैले अन्याय-अत्याचार को दूर कर सामान्य जनता के जीवन में सलामती लाने वाला भी है। इसीलिए जनता उसे देखकर पुकार उठती है कि सलामत लाने वाला एक और बच्चा इस संसार में आ गया है। सरकारी व्यवस्था यदि आम आदमी के लिए अन्याय और दमन करने वाली है तो यह मजदूर का बच्चा संघर्ष और

विरोध से कयामत ला देने वाला है। इस तरह मजदूर के घर बच्चे का जन्म लेना आशा एवं संघर्ष का सवेरा लाने वाले का परिचायक है।

विशेष - यहाँ मजदूरों की श्रमशीलता एवं उनके द्वारा अन्याय-दमन का विरोध करने की क्षमता का परिचय दिया गया है, जिससे आम आदमी के जीवन में सलामती आ जाती है।

१३.२.४ बोध प्रश्न –

१) 'मजदूर का जन्म' कविता में संघर्षशीलता एवं आशावादी दृष्टिकोण किस तरह व्यक्त हुआ है?

२) मजदूर का जन्म होने पर अलग-अलग लोगों की अलग-अलग प्रतिक्रिया किस रूप में प्रकट की गयी है?

टिप्पणी -

१) मजदूर का जन्म कविता का कथ्य

२) 'मजदूर का जन्म' कविता में व्यक्त आशावादी विचार.

१३.२.५ वस्तुनिष्ठ/लघूत्तरी प्रश्न –

१) मजदूर का बच्चा किसकी तरह बलवान है?

उत्तर : मजदूर का बच्चा हाथी की तरह बलवान है

२) जहाजी हाथों वाला कौन है?

उत्तर : हथौडे वाला मजदूर का बच्चा जहाजी हाथों वाला है।

३) सूरज-सा इन्सान कैसी आँखों वाला है?

उत्तर : सूरज-सा इन्सान तरेरी आँखों वाला है।

४) मजदूर बच्चे के जन्म पर माता क्या विचारती है?

उत्तर : मजदूर बच्चे के जन्म पर माता विचारती है कि अँधेरा हरने वाला एक और हुआ।

५) मजदूर बच्चे को देखकर दादा क्या सोचते हैं?

उत्तर : मजदूर बच्चे को देखकर दादा सोचते है कि परिवार में सवेरा करने वाला और हुआ।

६) मजदूर बच्चे के जन्म के बाद जनता क्या पुकारती है?

उत्तर : मजदूर बच्चे के जन्म के बाद जनता पुकारती है कि सलामत लाने वाला एक और हुआ।

७) कवि सरकार को क्या सुनाना चाहता है?

उत्तर : कवि सरकार को सुनाना चाहता है कि कयामत ढानेवाला एक और आ गया है।

१३.३ हथौड़े की गीत

- इसके माध्यम से मजदूर वर्ग की विशेषता ओं का पता चल सकेगा।
- मजदूर वर्ग के परिश्रम और शक्ति के प्रति कवि की संवेदना व्यक्त हुई है।

- इस कविता का प्रतिपाद्य और संदर्भ सहित स्पष्टीकरण संबंधी उत्तर दिय जा सकेंगे।
- कवि की विचारधारा और प्रतिबद्धता स्पष्ट हो सकेगी ।

१३१.३.१ प्रस्तावना –

'हथौड़े का गीत' मजदूर वर्ग की जीवन-स्थितियों का चित्रण करने वाली कविता है। हथौड़ा मजदूर वर्ग का प्रतीक है। यह वर्ग दिन-रात कठिन परिश्रम करके अपनी रोजी-रोटी कमाता है, फिर भी उसेतमाम कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। मजदूर वर्ग अपने श्रम और मेहनत के बल पर ही कई बार अनेक बंधनोंको तोड़ने में भी सफल होता है।

१३.३.२ भावार्थ/कथ्य –

'हथौड़े का गीत' में कवि केदारनाथ अग्रवाल ने मजदूर वर्ग को उद्‌बाधित करते हुए उन्हें व्यवस्था में परिवर्तन लाने की प्रेरणा दी है। इस संसार में मजदूर वर्ग सबसे अधिक शक्तिशाली होता है। उसके भीतर इतनी शक्ति होती है कि वह लोहे को भी जैसा चाहे, वैसा मोड़ सकता है। उसे नया आकार दे सकता है। उसकी श्रम शक्ति के बिना कुछ नहीं होसकता लेकिन उसकी स्थिति बहुत अच्छी नहीं है। वह पूंजीपति वर्ग द्वारा निरंतर शोषित-पीड़ित होता रहता है। कवि उसे प्रेरणा देता है कि शोषण-दमन की इस प्रक्रिया को तोड़ने के लिए हथौड़े के प्रहार की जरूरत है। उसकी स्थिति में सुधार लाने के लिए प्राचीन परंपरा और सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन लाना आवश्यक है। यह परिवर्तन हथौड़े के प्रहार से ही संभव है।

कवि संकेत करता है कि बार-बार हथौड़ा मारकर चोट करनी होगी तभी लाल हुए काले लोहे को जैसा चाहें वैसा मोड़ सकते हैं। यह काला लोहा कठोर शोषक वर्ग का प्रतीक है जो मजदूरों के संघर्ष के ताप में तप कर अब लाल हो चुका है। यही उचित समय है जब प्रहार करके इस व्यवस्था में परिवर्तन लाया जा सकता है। परिवर्तन लाने के लिए मजदूर वर्ग में एकता और संगठन होना आवश्यक है। हथौड़े के प्रहार से ही उनमें वह शक्ति आ सकेगी कि अनेक फौलादी नर-सिंह बनाये जा सकेंगे अर्थात करोड़ों मजदूर एक-साथ संगठित होकर अपनी शक्ति और एकता दिखा सकेंगे।

कवि केदारनाथ अग्रवाल इस ओर भी संकेत करते हैं कि कठोर परिश्रम के बाद भी मजदूर वर्ग को उपेक्षा, शोषण-दमन और यातना ही प्राप्त होती है। मजदूरों के श्रम से उत्पादित वस्तुओं के बल पर ही पूंजीपति वर्ग अपनी तिजोरी भरता है और बदले में मजदूर को मिलता है अभावग्रस्त जीवन। यह प्रक्रिया सदियों से चली आ रही है। सामाजिक-आर्थिक धरातल पर बह अनेक बंधनों में बँधा होता है। कवि के अनुसार अपनी श्रम-शक्ति से लोहू और पसीना बहाकर इन तमाम बंधनों की दीवारें तोड़ सकता है।

कवि का यह भी मानना है कि मजदूर विरोधी शक्तियों से लड़ने के लिए संगठित होना जरूरी है। मजदूर-वर्ग अपने शोषण के विरोध में एकत्रित होकर ही संघर्ष कर सकता है। अतः उसे अपनी शक्ति का एहसास पूरी दुनिया को कराना होगा और अपनी संगठित शक्ति की छवि से नाता जोड़ना होगा।

इस तरह 'हथौड़े का गीत' कविता जहाँ मजदूर वर्ग को संगठित होने की प्रेरणा देती है, वहीं इसके माध्यम से शोषक सत्ता के विरुद्ध प्रहार करने और व्यवस्था को परिवर्तित करने का संकेत भी दिया गया है।

१३.३.३ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण –

मार हथौड़ा
कर-कर चोट
लाल हुए काले लोहे को
जैसा चाहे वैसा मोड़

संदर्भ - केदारनाथ अग्रवाल ने अपनी कविताओं में जहाँ किसान-वर्ग की स्थितियों का यथार्थ चित्रण किया है, वहीं मजदूर वर्ग की शक्ति और श्रमशीलता का परिचय कराया है। 'हथौड़े के गीत' मजदूर वर्ग को संबोधित एक ऐसी ही कविता है जो हमारी पाठ्य पुस्तक 'प्रतिनिधि कविताएँ : केदारनाथ अग्रवाल' में संकलित है। इसके संपादक अशोक त्रिपाठी जी हैं। प्रस्तु पंक्तियाँ इसी कविता से ली गयी हैं।

प्रसंग - इस कविता द्वारा कवि ने मजदूर वर्ग की श्रम-शक्ति के महत्त्व को रेखांकित करते हुए शोषक व्यवस्था में परिवर्तन लाने की प्रेरणा दी है। उसके अनुसार इस संसार मे मजदूर वर्ग बहुत ही शक्ति है किंतु उेअपनी शक्ति की एहसास ठीक से नहीं हो पाता। इसी लिए अनेक मजदूर-विरोधी शक्तियाँ उस का शोषण-दमन करती रहती हैं और वह उसे स्वीकार कर लेता है। कवि इसे उचित नहीं मानता है। इसी लिए वह श्रमिक वर्ग को संबोधित होते हुए इस शोषक व्यवस्था पर चाट करने एवं उसे बदलने की प्रेरणा दी है।

स्पष्टीकरण - कवि के अनुसार मजदूर वर्ग को इस शोषक व्यवस्था पर बार-बार हथौड़े से प्रहार करना होगा। हथौड़ा मजदूर वर्ग की शक्ति का प्रतीक है। अत: वह मजदूर से कहता है कि बार-बार हथौड़े का प्रहार करो और काले लोहे को अपनी इच्छा के अनुसार जैसा चाहो, वैसा तोड़-मोड़कर आकार प्रदान करो। यह काला लोहा क्रूर-कठोर पूँजीपति वर्ग का प्रतीक है जो मजदूर वर्ग के निरंतर संघर्ष के ताप से लाल हो चुका है। इस लोहे को अपने हथौड़े के प्रहार से अपनी इच्छा के अनुरूप आकार देने का यही उचित अवसर है।

विशेष - इस तरह कवि ने यहाँ यह संकेत किया है कि मजदूर वर्ग अपनी शक्ति का प्रयोग करते हुए बार-बार हथौड़े का प्रहार करे तो शोषक व्यवस्था में परिवर्तन किया जा सकता है किंतु इसके लिए मजदूर वर्ग को संगठित होकर अपनी शक्ति दिखानी होगी तथा उचित समय आने पर शोषक-वर्ग पर बार-बार प्रहार करना होगा।

१३.३.४ बोध प्रश्न –

१) 'हथौड़े का गीत' कविता में कवि ने कौन सी प्रेरणा दी है?

२) 'हथौड़े का गीत' में परिवर्तन की प्रेरणा किस तरह दी गई है?

३) 'हथौड़े का गीत' कविता में कवि मजदूर वर्ग को संबोधित करते हुए क्या कहता है?

४) 'हथौड़े का गीत' कविता का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

१३.३.५ वस्तुनिष्ठ/लघूत्तरी प्रश्न –

१) कवि किससे चोट करने की प्रेरणा देता है?

उत्तर : कवि हथौड़े के प्रहार से चोट करने की प्रेरणा देता है।

२) कवि किसे मोड़ने के लिए कहता है?

उत्तर : कवि लाल हुए काले लोहे को मोड़ने के लिए कहता है।

३) कवि हथौड़े की चोट करके किसको गढ़ने के लिए कहता है?

उत्तर : कवि हथौड़े की चोट करके फौलादी नरसिंहों को गढ़ने के लिए कहता है।

४) कवि बंधन की दीवारें किसके माध्यम से तोड़ने के लिए कहता है?

उत्तर : कवि लोहू और पसीने बहाकर बंधन की दीवारें तोड़ने के लिए कहता है।

५) कवि के अनुसार दुनिया के समक्ष अपनी छवि सुधारने के लिए मजदूरों को क्या करना चाहिए?

उत्तर : कवि के अनुसार दुनिया के समक्ष अपनी छवि सुधारने के लिए मजदूरों को अपनी संगठित शक्ति प्रदर्शित करनी चाहिए।

■■■■■

१४

प्रतिनिधि कविताएँ - केदारनाथ अग्रवाल

१) छोटे हाथ २) पूँजीपति और श्रमजीवी

इकाई की रूपरेखा –

१४.० उद्देश्य

१४.१ १४.१.१ प्रस्तावना

१४.१.२ भावार्थ/कथ्य

१४.१.३ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण

१४.१.४ बोध प्रश्न

१४.१.५ वस्तुनिष्ठ/लघूत्तरी प्रश्न

१४.२ पूँजपति और श्रमजीवी

१४.२.१ प्रस्तावना

१४.२.२ भावार्थ/कथ्य

१४.२.३ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण

१४.२.४ बोध प्रश्न

१४.२.५ वस्तुनिष्ठ/लघूत्तरी प्रश्न

१४.० उद्देश्य

- इस इकाई द्वारा सामान्य वर्ग के लोगों की कर्मठता का परिचय मिल सकेगा।
- 'छोटे हाथ' कविता से संबंधित जीवन के विभिन्न पहलुओं का परिचय हो सकेगा।
- वस्तुनिष्ठ प्रश्न एवं संदर्भ सहित स्पष्टीकरण संबंधी उत्तर लिख सकेंगे।

१४.१ प्रस्तावना

छोटे हाथ से तात्पर्य सामान्य वर्ग के लोगों के हाथ से है। आम आदमी के इन हाथों की विशेषताएँ बताते हुए कवि कहता है कि छोटे हाथ कुछ न कुछ करते रहने को निरंतर उत्सुक रहते हैं। वे कभी भी चुपचाप बैठना पसंद नहीं करते हैं। सवेरा होते ही वे लाल कमल की तरह कुछ न कुछ नया करने के लिए तैयार हो जाते हैं। वे न तो कभी रुकते हैं और न ही

कभी धीरज धारण करते हैं । वे निरंतर सक्रिय रहते हुए जड़ को चेतन, पानी को दूध और मिट्टी को सोना बनाने की कोशिश में जुटे रहते हैं। इसी तरह छोटे हाथ किसानी करते हैं, मधुमक्खियों की तरह ईंट पर ईंट रखते हुए घर बनाते हैं; जीवन-स्थितियों का मंथन करते हुए मोती की तरह मक्खन निकालते हैं। वे निडरता पूर्वक सारे संकटों से सबको बचाते हुए नए एवं मौलिक ग्रंथों की रचना करके मानव की सुंदरतम कृतियों को मनुष्य को अर्पित करते हैं। इस तरह छोटे हाथों की सक्रियता, कर्मठता, निडरता एवं सृजनशीलता आदि का बखान इस कविता में बखूबी किया गया है।

१४.१.२ भावार्थ/कथ्य –

कवि केदारनाथ अग्रवाल ने 'छोटे हाथ' कविता के माध्यम से आम आदमी की कर्मठता का महत्त्व बताया है। उनके अनुसार छोटे हाथ निरंतर निर्माण कार्य में जुटे रहते हैं। वे सबेरा होते ही लाल कमल की तरह खिले मन से कुछ न कुछ करने के लिए उत्सुक हो उठते हैं। उन्हें बैठना अच्छा नहीं लगता। अतः कहीं रुकते नहीं हैं। उन्हें काम करने, कुछ नया रचने की इतनी उत्सुकता होती है कि वे रुकने का धैर्य नहीं रख पाते। वे जड़ को चेतन बना देते हैं। उनकी हर रचना सजीव हो उठती है। इसी तरह वे पानी को भी दूध सा मूल्यवान तथा मिट्टी को भी सोना बनाने के लिए निरंतर सक्रिय रहते हैं। इतने श्रमशील लोगों के कारण ही मिट्टी भी सोना बन जाती है। इस प्रकार छोटे हाथों की सक्रियता और कर्मठता को कवि ने रेखांकित किया है।

इन छोटे हाथों में ही किसान वर्ग भी शामिल है। यद्यपि किसानों का जीवन तमाम अभावों से भरा होता है किंतु किसान कभी निराश होकर खेतों में काम करने से पीछे नहीं हटता है। चाहे कितनी भी विकट परिस्थितियाँ क्यों न हों, वह खेतों में जी-तोड़ मेहनत करता है। वह बिना थके, बिना रुके, हर साल नये-नये बीज खेतों में बोता है। फसल उगने पर उसकी देख-रेख वह जी-जान लगा कर करता है। जैसे-जैसे फसल उगती है और बढ़ने लगती है, किसान को अपने सुनहले भविष्य के दिन निकट आते प्रतीत होने लगते हैं। फसल को अपने हाथों में लेकर वह अपने वैभव और समृद्धि के दिनों को टटोला करता है। उसे लगता है कि उगी हुई फसल उसके भविष्य को बदल देगी । उसके वैभवशाली दिन आ जाएँगे। इसी उम्मीद में वह किसान दिन-रात खेतों में काम करता रहता है। वह डालों पर लगे फूलों के गुच्छों की हर कोशिश करके रक्षा करता है। वह हर पत्ते पर लगे हुए मकड़ी के जालों को साफ किया करता है जिससे कोई कीटाणु उन पत्तों को खा न लें। इस तरह पत्तों, फूलों और फलों की रक्षा करते हुए किसान फसल उगा कर अपने सुनहले भविष्य को सुरक्षित कर लेना चाहता है।

किसानों की तरह ही मजदूरों के श्रम का महत्त्व भी कवि ने बताया है। 'छोटे हाथ' के रूप में ही वह मजदूर-श्रमिक वर्ग भी निरंतर सक्रिय रहता है जो ईंटों पर ईंटें रखते हुए घर का निर्माण करता है। जिस तरह पूरी तन्ममता से मधुमख्खी एक-एक मधुकोष का निर्माण करती है, उसी तरह यह मजदूर भी घर की दीवार बनाते समय एक-एक ईंट करीने से रखते हुए घर का निर्माण करता है। हर घर के निर्माण से एक आशा जुड़ी होती है। लोगों के मन में अपने घर को लेकर तरह-तरह की कल्पनाएँ होती हैं। उनकी उम्मीदों और आशाओं की दीवारे ही घर का निर्माण करती हैं। उन घरों में नई पीढ़ी पलती है और उनकी खुशियाँ तथा मंगल कामनाएँ आकार ग्रहण करती हैं। उन घरों में नव जीवन और जागृति के बाजे निरंतर बजते रहते हैं।

ये छोटे हाथ ही दही मथकर मक्खन निकालते हैं। वे दही मथते-मथते कभी भी थकते

नहीं हैं। कभी थक भी गए तो मथना बंद नहीं करते। दही की तरह ही वे जीवन की विभिन्न स्थितियों का मंथन करते रहते हैं और जीवन की अच्छी-बुरी तमाम बातों में से जो मोती तरह उत्तम तत्त्व होते हैं, उन्हें ग्रहण करते हैं तथा जो अनुपयोगी एवं व्यर्थ बातें होती हैं, उन्हें छोड़ देते हैं। जीवन के मंथन के बाद मोती की भाँति प्राप्त होने वाले मक्खन को मिश्री के साथ मिलाकर उसे और अधिक मीठा बना देते हैं और उसे आने वाली पीढ़ी के मुख में रख देते हैं। इस तरह कवि का मानना है कि ये छोटे हाथ ग्वालों की भाँति जीवन रूपी दही का मंथन कर अनुभवों से प्राप्त मोती रुपी मक्खन को मिश्री के मेल से और भी मधुर बनाकर नई पीढ़ी को देते हैं जिससे वे जीवन में और अधिक खुशहाल हो सकें। आम आदमी की निडरता एवं संकट मोल लेकर भी सबके हितों के बारे में सोचने की प्रवृत्ति का बखान करते हुए कवि कहता है कि छोटे हाथ हमेशा निडर एवं साहसी होते हैं। वे खतरे के समय में भी अपने साहस एवं निडरता के कारण खतरों के बीच धूमते रहते हैं। ये नागों को नाथ लेते हैं। समाज में जो लोग नाग की तरह विषैले एवं घातक होते हैं, उन्हें भी ये अपने वश में कर लेते हैं। इसी तरह काँटो को भी ये चूम लेते हैं। अर्थात संकटों का भी सामना करने से हिचकते नहीं। बारूदी बंदूकों से पशुओं को मार गिराते हैं। पशु-प्रवृत्ति वाले लोगों के लिए काल बन जाते हैं। यहाँ तक कि संकटो के तूफान का सागर भी आ जाये तो ये लोगों को अपने साहस के बल पर तूफान के सागर से पार निकाल लाते हैं। उन संकटों से उबार लाते हैं। इस तरह ये छोटे हाथ अपने साहस के बल पर लोगों को हर तरह के संकट से उबारते हैं।

कवि के अनुसार आम आदमी ही अपने जीवनानुभवों के आधार पर गुणी-ज्ञानी की तरह ऐसे मौलिक ग्रंथों की रचना करता है जो जीवन को समझने में सहायक होते हैं। वह दूसरी भाषाओं के जीवन के साथी ग्रंथों का हिदी में रुपांतरण भी करता है। वह अपनी रचनाओं से भाषा को भी झंकृत करता है जिससे उस भाषा की ओर सबका ध्यान आकृष्ट होता है। उसकी रचनाओं में जीवन का यथार्थ चित्रित हो उठता है। इस तरह अपनी रचनाओं के रूप में मानव की सुंदरतम रचना संपूर्ण मानव समाज को अर्पित करता है।

इस तरह कवि ने छोटे हाथ कविता के माध्यम से आम आदमी की विशेषताओं की ओर संकेत किया है। उसके अनुसार आम आदमी निरंतर कर्मठ एवं परिश्रमी होता है, वह किसान और मजदूर की तरह फसलें उगाकर या मकान बनाकर मानवता को सुखमय बनाने का प्रयत्न करता है। वह जीवनानुभवों का मंथन करके अनुभव के मोती समाज को सौंपता है। अपनी निडरता और साहस के बल पर वह सभी लोगों को भयावह संकट से उबारता है तथा अपने ज्ञान और अनुभव-समृद्धि के आधार पर मानव जाति को साहित्यिक रचनाओं से भी समृद्ध करता है।

१४.१.३ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण –

छोटे हाथ
किसानी करते
बीज नये बोया करते हैं।
आनेवाले वैभव के दिन
उँगली से टोया करते हैं।
फूलों के गुच्छे के गुच्छे

डालों पर पाला करते हैं।

छोटे से छोटे पत्ते का

मकड़ी की जाला हरते हैं।

संदर्भ - कवि केदारनाथ अग्रवाल ने आम आदमी की श्रमशीलता एवं कर्मठता को अपनी अनेक कविताओं में व्यक्त किया है। 'छोटे हाथ' ऐसी ही एक कविता है जो हमारी पाठ्य पुस्तक प्रतिनिधि कविताएँ : केदारनाथ अग्रवाल में संकलित है। इसके संपादक अशोक त्रिपाठी जी हैं। प्रस्तुत पंक्तियाँ इसी कविता से ली गयी हैं।

प्रसंग - 'छोटे हाथ' कविता में कवि केदारनाथ अग्रवाल ने सामान्य व्यक्ति की कर्मठता एवं निरंतर क्रियाशीलता की ओर संकेत किया है। छोटे हाथों वाला आम आदमी कभी भी निष्क्रिय नहीं बैठता। वह प्रसन्न मन से मिट्टी को भी सोना बनाने के प्रयास में निरंतर कर्मशील बना रहता है।

व्याख्या - कवि छोटे हाथों की कर्मशीलता को किसानों के माध्यम से व्यक्त करता है। किसान अपने खेतों में निरंतर खून-पसीना बहाता रहता है। वह हर बार नये बीज बोता है और फसल के उगने के साथ ही अपने भविष्य के वैभवशाली दिनों को अपनी उँगलियों से टोया करता है। फसल के हर रूप की देख-भाल वह बड़ी ही आत्मीयता से करता है क्योंकि उसे पूर्ण विश्वास होता है कि फसल के पक जाने पर उसके जीवन में अनाज के रूप में वैभव-समृद्धि आ जायेगी और उसके अभाव के दिन बीत जाएँगे। इसी उम्मीद पर वह पौंधों में लगनेवाले हर फूल के गुच्छे को उसकी डालियों पर पाल-पोस कर सुरक्षित रखता है। यहाँ तक कि छोटे-छोटे पत्ते पर यदि उसे मकड़ी का जाला मिल जाय तो उस जाले को हटाता रहता है। इस प्रकार किसान बड़ी सावधानी से अपने खेतों की फसल की देख-रेख करता है। वह बिना थके कठिन से कठिन स्थितियों में निरंतर अपने खेतों में इस उम्मीद से काम करता रहता है कि फसल तैयार होने पर उसके अभाव के दिन खत्म हो जाएँगे और संपन्नता के दिन आएँगे ।

विशेष - इस तरह कवि ने न सिर्फ किसान की कर्मठता एवं परिश्रम का संकेत किया है बल्कि उसकी आशावादिता का भी उल्लेख किया है जिसके सहारे वह अपने खेतों में बड़े विश्वास के साथ निरंतर कार्य करता रहता है।

२. छोटे हाथ,

दही मथते है,

मथते-मथते कब थकते हैं

थकते भी हैं तो मथते हैं

हर दम जीवन को मथते हैं ।

जीवन के उत्तम तत्त्वों का

मोती सा मक्खन गहते हैं

मक्खन मिश्री साथ मिलाकर

बच्चों के मुख में रखते हैं।

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ कवि केदारनाथ अग्रवाल द्वारा लिखी गई कविता 'छोटे हाथ' से ली गयी हैं जो हमारी पाठ्य पुस्तक प्रतिनिधि कविताएँ : केदारनाथ अग्रवाल में संकलित है। इस पुस्तक के संपादक श्री अशोक त्रिपाठी जी हैं।

प्रसंग - 'छोटे हाथ' कविता सामान्य व्यक्ति की कर्मठता और क्रियाशीलता को रेखांकित करती है। कवि के अनुसार छोटे हाथ उस आम आदमी के हैं जो सुबह होते ही प्रसन्न मन से कभी खेतों में काम करने निकल पड़ता है तो कभी मधुमक्खी की तरह तन्मय होकर एक ईंट पर दूसरी ईंट रखते हुए उस घर के निर्माण में जुट जा है जिसमें तमाम आशाएँ पलती हैं। वह तमाम जोखिमों के बीच मनुष्य-विरोधी ताकतों से जूझ हुए लोगों को तूफान के सागर से बचाता रहता है। वह अपने अनुभंवों के आधार पर कभी मौलिक ग्रंथों की रचना करता है तो कभी पहले से ही लिखी गयी किंतु जीवन से जुड़ी रचनाओं का हिंदी में अनुवाद करता है। इस तरह यह आम आदमी निरंतर सक्रिय रहते हुए अपनी सृजनशीलता का परिचय देता है। प्रस्तुत पंक्तियाँ इसी संदर्भ में कही गयी हैं जिनमें जीवनानुभवों के मंथन करने की बात कही गयी है।

व्याख्या - कवि के अनुसार ये छोटे हाथ ग्वाले की तरह दही को मथते हैं और मथते हुए कभी थकते नहीं। थक भी जाते हैं तो मथना बंद नहीं करते। दही की भाँति ही वे कई बार जीवन में घटने वाली घटनाओं का भी मंथन करते हैं और उनमें से नवनीत की तरह जीवन के उत्तम तत्त्वों को मोती की तरह अलग निकालते हैं। ये उनके जीवन संबंधी अनुभवों का वह मक्खन होता है जो कठिण समय में काम आता हैं । इसी लिए इस मक्खन में थोड़ी मिश्री की मिठास भर कर वे बच्चों के मुख में खिला देते हैं। तात्पर्य यह है कि आम आदमी अपनी जीवन-स्थितियों का मंथन करके जो अनुभव रूपी मोती जैसा बहुमूल्य मक्खन निकालकर उसमें मिठास भरकर आने वाली पीढ़ी को सौंपता है जिससे उसके जीवन के अनुभवों से निकालता है सीख लेकर भावी पीढ़ी अपने जीवन में निरंतर आगे बढ़ती रहे।

विशेष - यहाँ कवि ने दही के मथने की प्रक्रिया द्वारा जीवन के अनुभवों को मथकर मोती जैसे उत्तम तत्त्वों को अपने लिए रखने और उसे भावी पीढ़ी को उपलब्ध कराने की बात बड़ी ही सहजता से व्यक्त की है।

१४.१.४ बोध प्रश्न –

१. छोटे हाथों की कवि ने कौनसी विशेषताएँ बतायी हैं?

२. छोटे हाथ कविता आम आदमी की सक्रियता और कर्मठता के साथ-साथ सृजनशीलता को व्यक्त करती है, स्पष्ट कीजिए।

३. छोटे हाथ कविता का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

टिप्पणी :

१. छोटे हाथों की कर्मठता

२. छोटे हाथों की श्रम के प्रति लगन

३. छोटे हाथों का मंथन और रचनाशीलता

४. छोटे हाथों का साहस

१४.१.५ वस्तुनिष्ठ/लघूत्तरी प्रश्न –

१. छोटे हाथ सवेरा होते ही किसकी तरह खिल उठते हैं?

उत्तर : छोटे हाथ सवेरा होते ही लाल कमल की तरह खिल उठते है ।

२. धीरज कौन नहीं धरता है?

उत्तर : छोटे हाथ अपनी क्रियाशीलता के कारण धीरज नहीं धरते हैं।

३. छोटे हाथ जड़ को क्या बना देते हैं?

उत्तर : छोटे हाथ जड़ को चेतन बना देते हैं।

४. छोटे हाथ पानी को क्या बना देते हैं?

उत्तर : छोटे हाथ पानी को पय (दूध) बना देते हैं।

५. छोटे हाथ मिट्टी को क्या बना देते हैं?

उत्तर : छोटे हाथ मिट्टी को सोना बना देते हैं ।

६. छोटे हाथ उँगली से क्या टोया करते हैं?

उत्तर : छोटे हाथ उँगली से आने वाले वैभव के दिन टोया करते हैं ।

७. छोटे से छोटे पत्ते पर से छोटे हाथ क्या हरते हैं?

उत्तर : छोटे से छोटे पत्ते पर से छोटे हाथ मकड़ी का जाला हरते हैं।

८. छोटे हाथ किसकी तरह तन्मय होकर घर रचते हैं?

उत्तर : छोटे हाथ मधुमक्खी की तरह तन्मय होकर घर रचते हैं।

९. छोटे हाथ क्या मथते हैं?

उत्तर : छोटे हाथ दही मथते हैं ।

१०. छोटे हाथ जीवन को मथकर क्या गहते हैं?

उत्तर : छोटे हाथ जीवन को मथकर उत्तम तत्त्वों का मोती सा मक्खन गहते हैं

११. छोटे हाथ बच्चों के मुख में क्या रखते हैं?

उत्तर : छोटे हाथ जीवन के उत्तम तत्त्वों रूपी मक्खन को मिश्री की मिठास के साथ बच्चों के मुख में रखते हैं।

१२. छोटे हाथ निडर होकर कब घूमा करते हैं?

उत्तर : छोटे हाथ निडर होकर जोखिम में धूमा करते हैं?

१३. नागों को कौन नाथते है?

उत्तर : छोटे हाथ नागों को नाथता है?

१४. काँटो को कौन चूमा करता है?

उत्तर : छोटे हाथ कॉटो को चूमा करते है?

१५. तूफानी सागर से सबको कौन तारते हैं?

उत्तर : तूफानी सागर से सबको छोटे हाथ तारते हैं?

१६. छोटे हाथ किस आधार पर सबको तूफानी सागर से तारते हैं?

उत्तर : छोटे हाथ अपने साहस के आधार पर सबको तूफानी सागर से तारते हैं?

१७. मौलिक ग्रंथों की रचना कौन करते हैं?

उत्तर : छोटे हाथ मौलिक ग्रंथों की रचना करते हैं?

१८. गुनी-ज्ञानी छोटे हाथ किसकी रचना करते हैं?

उत्तर : गुनी-ज्ञानी छोटे हाथ मौलिक ग्रंथों की रचना करते हैं?

१९. छोटे हाथ मानव की सुंदरतम कृतियाँ किसे अर्पित करते हैं?

उत्तर : छोटे हाथ मानव की सुंदरतम कृतियाँ मानव को अर्पित करते हैं?

१४.२ पूँजीपति और श्रमजीवी

- इसके माध्यम से पूँजीपति और श्रमजीवी मजदूर वर्ग की जीवन-दृष्टि का अंतर स्पष्ट हो सकेगा।
- इस कविता के कथ्य से परिचित हो सकेंगे।
- इससे संबंधित वस्तुनिष्ठ प्रश्नों एवं संदर्भसहित व्याख्या का उत्तर लिखने में समर्थ हो सकेंगे।

१४.२.१ प्रस्तावना –

'पूँजीपति और श्रमजीवी' कविता पूँजीपतियों एवं मजदूरों की जीवन शैली एवं उनके दृष्टिकोण को बखूबी उजागर करती है। पूँजीपति अपने बेटे को शुरू से ही शोषण करने वाला काला दिल प्रदान करता है। वह उसे बही-खाते की वह परंपरा सौंपता है जिसमें लोगों को ठगने और उनकी गरदन काटने वाली कलम चलाने की ही शिक्षा दी जाती है। वह आजीवन उसे शोषण करने के तरीके बताता है। इस तरह वह अपने बेटे को तमाम अवगुण सिखाकर स्वयं को, संसार को और खुद उस बेटे को भी धोखा देता है क्योंकि ये अवगुण सीखकर बेटा किसी का भी हित नहीं करता। इसके विपरीत श्रमजीवी मजदूर अपने बेटे को परोपकार करने वाला दिल देता है। वह अपने बेटे को विरासत में जीवन के अभाव भले ही देता हो किंतु श्रम द्वारा उत्पादन करने वाली बुद्धि भी वह उसे प्रदान करता है।

१४.२.२ भावार्थ –

- पूँजीपति और श्रमजीवी कविता में केदारनाथ अग्रवाल ने पूँजीपतियों एवं मजदूरों की जीवन शैली, उनके दृष्टिकोण और उनके संस्कारों का अंतर स्पष्ट करते हुए पूँजीपति वर्ग पर व्यंग्य भी किया है। पूँजीपति वर्ग स्वयं बिना कुछ किये अपनी पूँजी और शोषण के बल पर धन अर्जित करने का निरंतर प्रयत्न करता रहता है। यही वह अपने बेटे को भी सिखाता है। इस तरह जैसा काला दिल पूँजीपति का है, वैसा ही काला दिल वह अपने बेटे का भी बना देता है। बिना कोई श्रम किए पैसे कमाने की आदत होने के कारण पूँजीपति अपने बेटे को भी गद्दी पर बैठे रहने की परंपरा देता है जिससे बेटे की शरीर भी भारी-भरकम हो जाती है । पूँजीपति को परंपरा से बही-खले मिले होते हैं । वही वह अपने बेटे को भी सौपता है । बेटा बही-खाते को हमेशा सिरहाने रखकर ही सोता-जागता है। इस तरह वह दिन में ही पैसा ठग लेना सीख जाता है। पूँजीपति अपने बेटे को वह कलम भी देता है जिससे वह झूठ-सच बही-खाते में लिखकर लोगों की गरदन काटता रहता है। इस तरह इस कलम की काली स्याही काले कारनामे करती रहती है। वस्तुतः पूँजीपति जब तक जीवित रहता है तब तक अपने बेटे को तरह-तरह से लोगों का शोषण करने की शिक्षा देता रहता है। वह अपने बेटे को धन-दौलत देता है और रति को

भी शर्मिंदा कर देने वाली सुंदर पत्नी भी देता है। इससे पूँजीपति अपने बेटे को श्रम न करके विलासी जीवन की सारी सुविधाएँ उपलब्ध करा देतता है । इस कारण पूँजपति का बेटा जीवन जीने में सभी अवगुण सीख लेता है। इस तरह अवगुणों का भंडार बनकर वह बेटा न तो अपने जीवन में सही तरीके से जी पाता है और न वह समाज के लिए किसी तरह भी उपयोगी हो पाता है। अपनी शोषक प्रवृत्ति के कारण वह समाज-विरोधी एवं स्वार्थपूर्ण ढंग से ही जीवन यापन करता है। इस प्रवृत्ति के कारण वह अपने पिता का भी उचित ढंग से ध्यान नहीं रख पाता। इसीलिए कवि कहता है कि पूँजीपति अपने बेटे को शोषण-दमन और स्वार्थ के जिस रास्ते पर चलने की शिक्षा देता है, उससे न तो बेटे का भला होता है, न स्वयं पूँजीपति का और न समाज का। इसलिए वह इन तीनों के साथ धोखा करता है।

इसके विपरीत श्रमजीवी वर्ग का जीवन है। श्रमजीवी स्वयं भी परिश्रम करके जीवन-यापन करने में विश्वास करता है। अत: अपने बेटे को भी वह श्रम करने में विश्वास करने की प्रेरणा देता है। वह छल-कपट से कोसों दूर होता है। अत: उसका ह्रदय भी स्नेह-प्रेम एवं अन्य मानवीय भावनाओं से भरा रहता है। इसी कारण श्रमजीवी अपने बेटे को परोपकारी दिल देता है। वह लोगों का शोषण नहीं बल्कि उनकी सहायता करता है। श्रम करने के कारण उसकी शरीर पूँजीपति के बेटे की तरह भारी-भरकम नहीं होती। श्रमजीवी अपने बेटे को श्रम करने के लिए हाथों में हल देता है जिससे खेती की जा सके या लोहे का घन (हथौड़ा) देता है जिससे मजदूरी की जा सके। श्रमजीवी के बेटे की शरीर भी पुष्ट होती है। अत: उसके पैरों में हाथी की तरह शक्ति और विश्वास भरी चाल होती है। वह अपनी अविजित छाती और ऊँचे कंधों के बल पर किसी भी मुसीबत से लड़ जाने के लिए तैयार रहता है। उसमें इतनी गति और बल होता है कि वह हर कठिनाई का सामना करने में स्वयं को समर्थ पाता है। इस तरह श्रमजीवी अपने बेटे को यही प्रेरणा देता है कि ईमानदारी और सच्चाई के साथ श्रम करते हुए जीवन-यापन करना ही श्रेयस्कर होता है।

पूँजीपति की तरह श्रमजीवी के पास धन-दौलत नहीं होती। अत: वह विरासत में उसे अभाव भरी जिंदगी ही दे पाता है। श्रमजीवी के बेटे को टूटी हुई कुटी, टूटी हुई खाट और लोहे के तसले जैसा बर्तन मिलता है। साथ में कुछ फटे-पुराने कपड़े मिलते हैं। इस अभाव के बावजूद वह अपने बेटे को जीवन भर एक शिक्षा यह देता है कि अपने श्रम से उत्पादन करके बहुत कुछ कमाया जा सकता है। इसीलिए वह अपने बेटे को उत्पादन कर सकने वाली बुद्धि देता है। वह अपने बेटे को खेती करने लायक जमीन देता है जिसमें परिश्रम करके वह अपने भविष्य को सुखमय बना सकता है। साथ ही वह ऐसी सुशील एवं मेहनत पर विश्वास करने वाली गृहिणी पत्नी भी देता है जो पूरे घर का भार स्वयं उठा सकने में समर्थ हो। श्रमजीवी इस दुनिया से भले ही चला जाए लेकिन वह अपने बेटे को ऐसी जीवन-दृष्टि दे जाता है जिससे बेटे का जीवन सहज एवं आसान बन जाता है।

इस प्रकार यह कविता पूँजीपति और श्रमजीवी द्वारा अपनी भावी पीढ़ी को दी जाने वाली विरासत के माध्यम से उन संस्कारों की ओर संकेत करती है जो उनके भावी जीवन की दिशा तय करते हैं। इसके साथ-साथ इसमें पूँजीपतियों और श्रमजीवियों की जीवन शैली का अंतर स्पष्ट करते हुए शोषक एवं स्वार्थी प्रवृत्ति वाले पूँजीपतियों पर प्रहार भी किया गया है। कवि की प्रतिबद्धता श्रमजीवी-मजदूर वर्ग के प्रति है। अत: वह श्रम करते हुए मानवीय संवेदनाओं से युक्त एवं परोपकारी ह्रदय वाले श्रमजीवी की जीवन शैली को ही श्रेष्ठ मानता है।

१४.२.३ संदर्भ सहित व्याख्या –

जाने कितना अवगुन
पूँजीपति सुत को देता है
वह अपने को और जगत को
बेटे को धोखा देता है।

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ श्री अशोक त्रिपाठी द्वारा संपादित हमारी पाठ्यपुस्तक 'प्रतिनिधि कविताएँ : केदारनाथ अग्रवाल' में संकलित 'पूँजीपति और श्रमिक' कविता से ली गई हैं जिसके रचयिता वरिष्ठ प्रगतिशील कवि श्री केदारनाथ अग्रवाल जी हैं।

प्रसंग - 'पूँजीपति और श्रमजीवी' कविता इन दोनों वर्गों की जीवन शैली का अंतर स्पष्ट करते हुए पूँजीपति वर्ग के व्यवहार एवं संस्कारों पर प्रहार करती है।

इसमें जहाँ एक तरफ पूँजीपति वर्ग के शोषक एवं श्रमहीन विलासी जीवन को चित्रित किया गया है, वहीं श्रमजीवी वर्ग के परिश्रमी एवं परोपकारी तथा मानवीय गुणों से युक्त जीवन को भी रेखांकित किया गया है। प्रस्तुत पंक्तियों में पूँजीपति के संस्कारों एवं व्यवहार कपटपूर्ण को प्रकट किया गया है।

व्याख्या - कवि केदारनाथ अग्रवाल के अनुसार पूँजीपति अपने बेटे को धन-दौलत तो देता है, उसे बेहद काला दिल भी देता है। उसका ह्रदय स्वार्थ एवं शोषण जैसी दुर्भावनाओं से युक्त होता है, जिससें किसी को भी ठग लेने या बही खाते के हिसाब-किताब में गला काट लेने में हिचक नहीं होती। पूँजीपति अपने व्यवहार से अपने बेटे को भी दूसरों का शोषण करने की ही शिक्षा देता है। वह उसे रूपवती स्त्री भी देता है जो उसे विलासिता की ओर ही अग्रसर करती है। इस तरह पूँजीपति अपने बेटे को पता नहीं कितने अवगुणों से युक्त संस्कार देता। स्वार्थ पर आधारित इन संस्कारों को देकर पूँजीपति स्वयं अपने को अपने समाज को और अपने प्रिय बेटे को भी धोखा देता है। शोषक प्रवृत्ति की शिक्षा ग्रहण करने के कारण पूँजीपति का बेटा स्वार्थी एवं शोषक बन जाता है। अतः उसमें मानवीय भावनाएँ शेष नहीं रह जातीं। इसीलिए वह अपने समाज के हित की तो नहीं ही सोचता, समय आने पर अपने पिता के प्रति भी मानवीय संवेदना के आधार पर नहीं सोचता। ऐसा स्वार्थी इन्सान बनाने वाला पूँजीपति स्वयं अपने को भी धोखा देता है तथा उस बेटे और पूरे समाज को भी।

विशेष - इस तरह इन पंक्तियों में पूँजीपति के समूचे व्यवहार पर प्रश्नचिह्न लगाते हुए कवि ने उसके द्वारा अपने बेटे को दिए जाने वाले संस्कार और व्यवहार को अनुचित माना है।

श्रमजीवी अपने बेटे को
पर उपकारी दिल देता है,
मेहनत करने को जीने को
हाथों में हल, लोहे का घन,
पाँवों में हाथी की चालें
अविजित छाती, ऊँचे कंधे
हर आफत से लड़ जाने को
गति देता है, बल देता है।

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ केदारनाथ अग्रवाल द्वारा लिखी गई कविता 'पूँजीपति और श्रमजीवी' से ली गयी हैं। इसमें कवि ने पूँजीपति और श्रमजीवी की जीवनशैली, उसके व्यवहार और संस्कारों का अंतर स्पष्ट किया है।

प्रसंग - कवि ने पूँजीपति के व्यवहार को स्पष्ट करते हुए जहाँ उसे शोषक एवं स्वार्थी रूप में प्रस्तुत किया है, वहीं उसे काली करतूतें करने वाले ठग और गला काटने वाले के रूप में बताते हुए मानवीय संवेदनाओं से रहित काले दिल वाला भी घोषित किया है। इसकी तुलना में उसने श्रमजीवी के जीवन को अभावग्रस्त होते हुए भी साहसी, परिश्रमी एवं मानवीय संवेदनाओं से युक्त बताया है।

व्याख्या - कवि के अनुसार श्रमजीवी अपने बेटे को भी अपनी तरह ही परिश्रम करके जीवन-यापन करने वाले परोपकारी व्यक्ति का संस्कार देता है। अत: श्रमजीवी अपने बेटे को विरासत में वे चीजें देता है जिनसे मेहनत करके वह अपने जीवन में सफल हो सके। वह मेहनत करने के लिए अपने बेटे को हल और लोहे का घन देता है जिससे वह खेतों में काम कर सके या कारखानों में घन चलाकर मेहनत कर सके। वह पूँजीपति की तरह अपने बेटे को थुलथुल शरीर वाला विलासी न बना कर परिश्रमी और फौलादी बनाता है। इसी लिए उसके पैरों में हाथी की तरह दृढ़ चाल होती है। उसका अविजित सीना और ऊँचे कंधे अपनी शक्ति एवं दृढ़ता के आधार पर किसी भी आफत से लड़ जाने में समर्थ होते हैं। इस तरह श्रमजीवी अपने बेटे को हर मुसीबत का सामना करने की शक्ति और गतिशीलता प्रदान करता है।

विशेष - यहाँ श्रमजीवी द्वारा अपने बेटे को दिये जाने वाले संस्कारों और शक्ति का परिचय देते हुए उसे हर संकट का सामना करने में समर्थ बताया गया है। इस तरह उसकी श्रमशीलता और शक्ति के प्रति कवि का विश्वास प्रकट हुआ है।

१४.२.५ वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

१. पूँजीपति अपने बेटे को कैसा दिल देता है?

उत्तर - पूँजीपति अपने बेटे को बेहद काला दिल देता है।

२. पूँजीपति अपने बेटे को गद्दी पर बैठे रहने के लिए क्या देता है?

उत्तर - पूँजीपति अपने बेटे को गद्दी पर बैठे रहने के लिए भारी भरकम शरीर देता है।

३. पूँजीपति अपने बेटे को कैसी कलम देता है?

उत्तर - पूँजीपति अपने बेटे को गरदन काट कलम देता है।

४. पूँजीपति अपने बेटे को हमेशा किसकी शिक्षा देता है?

उत्तर - पूँजीपति अपने बेटे को हमेशा शोषण की शिक्षा देता है।

५. पूँजीपति किसे शरमाने वाली रूपवती औरत अपने बेटे को देता है?

उत्तर - पूँजीपति रति को शरमाने वाली रूपवती औरत अपने बेटे को देता है।

६. पूँजीपति अपने बेटे के लिए कैसी बहू लाता है?

उत्तर - पूँजीपति अपने बेटे के लिए रति को शरमाने वाली रूपवती बहू लाता है।

७. पूँजीपति अपने बेटे को सरहाने रख कर सोने के लिए क्या देता है?

उत्तर - पूँजीपति अपने बेटे की सिरहाने रखकर सोने के लिए बही-खाते देता है।

८. पूँजीपति अपने अवगुण किसे देता है?

उत्तर - पूँजीपति अपने अवगुण अपने बेटे को देता है।

९. पूँजीपति किसे-किसे धोखा देता है?

उत्तर - पूँजीपति स्वयं को, बेटे को और पूरे जगत को धोखा देता है।

१०. श्रमजीवी अपने बेटे को कैसा दिल देता है?

उत्तर - श्रमजीवी अपने बेटे को पर उपकारी दिल देता है।

११. श्रमजीवी अपने बेटे को हर आफत से लड़ जाने के लिए क्या देता है?

उत्तर - श्रमजीवी अपने बेटे को हर आफत से लड़ जाने के लिए गति और बल देता है।

१२. श्रमजीवी अपने बेटे को कैसी मति देता है?

उत्तर - श्रमजीवी अपने बेटे को उत्पादन की मति देता है।

१३. श्रमजीवी अपने बेटे को आशा की खेती करने के लिए क्या देता है?

उत्तर - श्रमजीवी अपने बेटे को आशा की खेती करने के लिए खेतों की धरती देता है।

१४. श्रमजीवी अपने बेटे को कैसी घरनी देता है?

उत्तर - श्रमजीवी अपने बेटे को पूरे घर का भार उठाने वाली श्रमजीवी घरनी देता है।

१४.२.४ बोध प्रश्न –

१. पूँजीपति अपने बेटे को विरासत में क्या देता है?

२. श्रमजीवी पिता अपने बेटे को कैसा संस्कार देता है?

३. 'पूँजीपति और श्रमजीवी' कविता में दोनों वर्गों का अंतर किस तरह व्यक्त हुआ है?

४. 'पूँजीपति और श्रमजीवी' कविता में दोनों वर्गों का संस्कार और व्यवहार किस तरह व्यक्त हुआ है?

टिप्पणी -

१. पूँजीपति पिता की पुत्र को देन

२. श्रमजीवी पिता द्वारा पुत्र को प्राप्त शिक्षा और संस्कार ।

□□□□□

१५

प्रतिनिधि कविताएँ - केदारनाथ अग्रवाल

१) लेखकों से २) चेतना मेरी जिलाये है तुम्हें

इकाई की रूपरेखा –

१५.१ लेखकों से

१५.१.१ उद्देश्य

१५.१.२ प्रस्तावना

१५.१.३ भावार्थ

१५.१.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण

१५.१.५ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

१५.१.६ बोध प्रश्न

१५.२ चेतना मेरी जिलाये है तुम्हें

१५.२.१ उद्देश्य

१५.२.२ प्रस्तावना

१५.२.३ भावार्थ

१५.२.४ संदर्भ सहित स्पष्टीकरण

१५.२.५ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

१५.२.६ बोध प्रश्न

१५.१ लेखकों से

१५.१.१ उद्देश्य –

- इस इकाई के माध्यम से लेखकों की शक्ति का परिचय प्राप्त हो सकेगा।
- इस कविता के कथ्य और संदर्भ सहित व्याख्या संबंधी प्रश्नों के उत्तर दिये जा सकेंगे।
- इस कविता पर आधारित वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर ज्ञात हो सकेंगे।

१५.१.२ प्रस्तावना –

'लेखकों से' कविता में कवि केदारनाथ अग्रवाल ने लेखकों को संबोधित करते हुए उन्हें लेखनी की ताकत का अनुभव कराया है। उनके अनुसार लेखकों के हाथ में लेखनी की तलवार है। अत: उन्हें डरने की आवश्यकता नहीं है। कवि इस बात पर अफसोस प्रकट करता है कि वर्तमान परिस्थितियों में लेखक अपनी भूमिका सही ढंग से निभा रहे हैं। उन में क्रांति की आग

है किंतु वे पायलों के संगीत में उलझे हैं। यह उनकी ही शक्ति है जो हर बार क्रांति लाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है लेकिन आज का कवि अपने कलम की धार खोता जा रहा है। कवि उसे उद्‌बोधित करते हुए उसकी सोई शक्ति जगाता है और आवाहन करता है कि उन्हें अपनी शक्ति का डंका बजाकर शांति का उल्लासमय सूरज उगाना है, लेखनी के लोक में आलोक लाना है।

५.१.३ भावार्थ / कथ्य –

'लेखकों से' कविता में कवि केदारनाथ अग्रवाल ने आज के लेखकों को अपनी कलम की शक्ति पहचानने तथा इस कठिन समय में अपनी लेखनी का सदुपयोग करने की प्रेरणा दी है। कवि का मानना है कि वर्तमान परिस्थितियाँ अत्यंत ही विषम हैं। ऐसे में लेखकों का दायित्व है कि वे लोगों में चेतना का निर्माण करके क्रांति की पृष्ठभूमि तैयार करें।

कवि लेखकों से कहता है कि आपके हाथों में लेखनी रूपी तलवार है फिर भी आप क्यों डर रहे हैं? आप के भीतर वह आग है जो ज्वालामुखी का रूप ले सकती है किंतु आप ओस की बूँदों को बो रहे हो और अपने भीतर की ज्वालामुखी को शांत कर रहे हैं। इस तरह कवि यह संकेत करता है कि लेखकों के भीतर क्रांति की आग पैदा करने की शक्ति है किंतु वे अपनी सामर्थ्य का उपयोग नहीं कर रहे हैं। इसी लिए वह आगे कहता है कि लेखकों में सूर्य की तरह शक्ति है जो सब तरफ उजाला करता है किंतु उन्होंने अपने भीतर के सूर्य को बादलों के पीछे छिपा लिया है। इस सूर्य को बादलों की ओट से निकलना होगा तभी चेतना का उजाला फैलेगा। लेखकों में क्रांति की शक्ति है लेकिन वह पायलों की झनकार के बीच खोया हुआ है।

कवि के अनुसार लेखकों की शक्ति सिंधु की तरह अपार है। जिस तरह सागर में तूफान लाने की शक्ति होती है, उसी तरह लेखक भी क्रांति का तूफान ला सकता है किंतु वह चाँद की मुस्कान में खोया हुआ है। लेखक तो उस तीर की तरह है जो बड़ी–बड़ी शिलाएँ तोड़कर उसके भीतर छिपे जल को बाहर निकाल सकता है। इसलिए वह लेखकों से अनुरोध करता है कि वे मूक मन होकर चुपचाप अपनी व्यथाओं का गान न करें। कवि की भावनाओं में बदलों की भयंकर गर्जना करने वाली शक्ति है किन्तु वह अंधेरी कामनाओं में मूर्छित पड़ा है। उसमें गान की शक्ति है किंतु वह चुपचाप रात के अंधेरे में डूब कर निराश हो पड़ा है। लेखक में नाग की तरह प्रहारक शक्ति है। वह शत्रु से बदला ले सकता है किंतु वह पिटारी में पड़ा हुआ है। अपने फन काढ़कर शत्रु से लड़ने को तैयार नहीं हो रहा है। लेखक के पास पंख हैं। वह चाहे तो आकाश की ऊँचाई को छू सकता है। आसमान तक उड़ सकता है। लेकिन उसके पंख नहीं फैल रहे हैं। वह आँधियों में उड़कर आकाश में तैरता नहीं है। उसमें शक्ति है कि चोट पहुँचाने वाले को सीधे ललकार सकता है किंतु चोट खाकर भी वह सहन कर लेता है। विरोधी को लड़ने के लिए ललकारता भी नहीं है। इन्कलाब के लिए जिस शब्दरूपी हथौड़े का प्रयोग उसे करना चाहिए, वह भी नहीं करता है। लेखक की स्थिति इतनी दयनीय हो गयी है कि चुपचाप बैठकर सारी यंत्रणाएँ सहन कर रहा है लेकिन प्रतिरोध की आवाज नहीं बुलंद कर पा रहा है। इसके बदले में वह मौत की मुरदा कहानियाँ लिख रहा है।

कवि लेखकों को जागने और अपनी कलम की शक्ति पहचानने की प्रेरणा देता है। कवि के अनुसार लेखकों में इतनी शक्ति होती है कि वे विपरीत परिस्थितियों में क्रांति ला सकते हैं लेकिन उन्होंने स्वयं को अलग कर लिया है। समाज के प्रति उनके दायित्वों का अहसास कराते हुए कवि कहता है कि हे लेखको, आप दधीचि ऋषि की तरह हो। उठो और स्वयं को जन

आंदोलन के लिए प्रस्तुत कर दो। आप की कलम में वह शक्ति है। इस कलम की शक्ति का डंका बजा दो जिससे अन्यायी-अत्याचारी शक्तियाँ नष्ट हो जाएँ और शांति का खुशियों भरा सूरज उदित हो जाए। ऐसा लाल सबेरा चमचमाओ कि फिर से लेखनी की दुनिया में रोशनी फैल जाए । लोग लेखनी की शक्ति को पहचानें और उसे उचित सम्मान दें। इस तरह 'लेखकों से' कविता में कवि ने वर्तमान समय में लेखकों की लेखनी के फीका पड़ जाने का उल्लेख करते हुए कलम की ताकत को प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया है। लेखकों में अपनी कलम से अन्याय-अत्याचार का विरोध करने की अद्‌भुत क्षमता होती है किंतु कई बार लेखनी की धार कुंद हो जाती है। कविने फिर से उस शक्ति का डंका बजाने तथा अन्याय-अत्याचार के बदले सुख-शांति स्थापित करने की प्रेरणा दी है।

१५.१.४ संदर्भ सहित व्याख्या –

ऐ दधीचो! शक्ति का डंका बजाओ,

शांति का उल्लासमय सूरज उगाओ,

लाल सोने का सवेरा चमचमाओ,

लेखनी के लोक में आलोक लाओ ।

संदर्भ - कवि केदारनाथ अग्रवाल प्रगतिवादी काव्य धारा के प्रमुख कवि हैं। उन्होंने अपनी प्रगतिशील विचारधारा के अनुरूप यह माना है कि क्रांति की भूमिका तैयार करने में लेखकों का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। कई बार लेखक वर्ग इस दायित्वबोध से भटक जाते हैं। इसी केंद्रीय भाव को लेकर इन्होंने 'लेखकों से' कविता लिखी है। प्रस्तुत पंक्तियाँ इसी कविता से ली गयी हैं जो हमारी पाठ्य पुस्तक 'प्रतिनिधि कविताए' : केदारनाथ अग्रवाल' में संकलित हैं। इस पुस्तक के संपादक श्री अशोक त्रिपाठी जी हैं।

प्रसंग - कवि केदार के अनुसार लेखकों में विचारों की वह विस्फोटक क्षमता होती है जो विषम परिस्थितियों में क्रांति का अग्रदूत बन जाते हैं लेकिन आज लेखक अपनी इस क्षमता का प्रयोग नहीं कर रहे हैं। वे हाथ में लेखनी रूपी तलवार होते हुए भी डर रहे हैं। ज्वालामुखी जैसी आग उनकी रचनाओं में हो सकती है लेकिन वे हिम के आँसू बो रहे हैं। सागर जैसा तूफान ला सकते हैं किंत वे चंद्रमा की मुस्कान में ही जी रहे हैं। उनमें नाग की तरह फन उठाकर अन्याय के विरुद्ध फुफकारने की क्षमता है लेकिन वे पिटारी में बंद पड़े हैं। पंख होते हुए भी आकाश में पंख खोलकर उड़ नहीं पाते। इस तरह कवि संकेत करता है कि लेखक वर्ग अपनी शक्ति और क्षमता का इस्तेमाल आजकल नहीं कर रहा है। उसका समाज के प्रति जो दायित्व है उसका निर्वाह भी वह नहीं कर पा रहा है। इन पंक्तियों में ऐसे ही लेखकों को उनका दायित्वबोध कवि ने कराया है।

व्याख्या - कवि के अनुसार वर्तमान समय में स्थितियाँ निरंतर विषम होती जा रही हैं। ऐसे में लेखकों का दायित्व होता है कि वे युगानुरूप साहित्य का निर्माण करें और मनुष्य-विरोधी अन्यायी ताकतों का प्रखर वाणी में विरोध करें लेकिन आज का लेखक मौन होकर सारी यंत्रणाएँ सह रहा है लेकिन उसकी लेखनी से इन्कलाबी ध्वनि नहीं सुनायी दे रही है। इसीलिए कवि कहता है कि हे लेखक वर्ग आप दधीचि ऋषि की तरह हो। अपनी लेखनी की शक्ति का डंका बजा दो। इस विषम वातावरण से संघर्ष में अपना अमूल्य योगदान दो जिससे अन्यायियों का पतन

हो और सब तरफ शांति का उल्लासमय सूरज उगकर अपनी रोशनी बिखेर सके। क्रांति की लालिमा से ऐसा सुनहला सवेरा सब तरफ चमक उठे और लेखनी के संसार में भी सब तरफ उजाला आ जाए।

विशेष - इस तरह कवि ने 'लेखकों को अपनी कलम की ताकत द्वारा सब तरफ सुख-शांति का उजाला फैलाने की प्रेरणा दी है।

१५.१.५ वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

१. कवि के अनुसार लेखक हाथ में तलवार ले कर भी क्या कर रहा है?

उत्तर - कवि के अनुसार लेखक हाथ में तलवार ले कर भी डर रहे हैं।

२. लेखक आग और ज्वालामुखी होकर भी क्या कर रहे हैं?

उत्तर - लेखक आग और ज्वालामुखी होकर भी सो रहे हैं।

३. लेखक किस तरह के आँसुओं को बो रहे हैं?

उत्तर - लेखक ओस के हिम-आँसुओं को बो रहे हैं।

४. लेखक क्रांति होकर भी कहाँ पले हैं?

उत्तर - लेखक क्रांति होकर भी पायलों में पले हैं।

५. लेखक कहाँ प्राण पाते हैं?

उत्तर - लेखक चाँद की मुस्कान में प्राण पाते हैं।

६. कवि ने लेखकों से मूक मन क्या न गाने के लिए कहा है?

उत्तर - कवि ने लेखकों से मूक मन होकर अपनी व्यथाएँ न गाने के लिए कहा है।

७. कवि के अनुसार लेखकों की भावना में किसका गर्जन है?

उत्तर - कवि के अनुसार लेखकों की भावना में मेघ-गर्जन है।

८. शिलाएँ किसके प्रहार से टूट सकती हैं?

उत्तर - शिलाएँ तीर के प्रहार से टूट सकती हैं।

९. कवि के अनुसार लेखक नाग हो कर भी किससे नहीं लड़ पाते?

उत्तर - कवि के अनुसार लेखक नाग हो कर भी फन काढ़ कर अरि (दुश्मन) से नहीं लड़ पाते।

१०. कवि के अनुसार लेखक पंख हो कर भी कहाँ नहीं फैलते हैं?

उत्तर - कवि के अनुसार लेखक पंख हो कर भी नभ में नहीं फैलते हैं।

११. कवि के अनुसार लेखक कौन सा घन नहीं मारते हैं?

उत्तर - कवि के अनुसार लेखक इन्कलाबी घन नहीं मारते हैं।

१२. कवि के अनुसार लेखक कौन-सी कहानी कह रहे हैं?

उत्तर - कवि के अनुसार लेखक मौत की मुरदा कहानी कह रहे हैं।

१३. कवि ने लेखकों से किसका डंका बजाने को कहा है?

उत्तर - कवि ने लेखकों से शक्ति का डंका बजाने को कहा है।

१४. कवि ने लेखकों से कौन-सा सूरज उगाने की प्रेरणा दी है?

उत्तर - कवि ने लेखकों से शांति का उल्लासमय सूरज उगाने की प्रेरणा दी है।

१५. कवि ने कहाँ आलोक लाने को प्रेरित किया है?

उत्तर - कवि ने लेखनी के लोक में आलोक लाने को प्रेरित किया है।

१५.१.६ बोध प्रश्न –

१. कवि ने लेखकों से क्या कहा है?

२. कवि केदारनाथ अग्रवाल ने लेखकों को उनका दायित्व बोध किस तरह कराया है?

३. 'लेखकों से' कविता के माध्यम से कवि ने लेखकों को किस तरह प्रेरित किया है?

टिप्पणी -

१. लेखकों का दायित्वबोध

२. 'लेखकों से' कविता का आशय

१५.२ चेतना मेरी जिलाये हैं तुम्हें

१५.२.१ उद्देश्य –

- इस इकाई द्वारा दांपत्य प्रेम के सकारात्मक पक्ष की जानकारी हो सकेगी।
- इस कविता से संबंधित प्रश्नों का उत्तर ज्ञात हो सकेगा।
- संदर्भ सहित स्पष्टीकरण एवं वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर लिखे जा सकेंगे।

१५.२.२ प्रस्तावना –

'चेतना मेरी जिलाये है तुम्हें' कविता में दांपत्य प्रेम के सकारात्मक पहलू को उजागर किया गया है। कवि अपनी पत्नी को पास बैठे हुए देखता है। उनके लंबे केश, माँग में सिंदूर, माथे पर टीका, बड़ी-बड़ी आँखें, मुस्कराते ओठ, हृदय में धैर्य, क्षीण कटि और आयु के अवशेष जैसे पैर देह को साधे हुए हैं। पत्नी जय-विजय की जिंदगी जी रही है। मौत भी उसे देखकर हारकर चली जाती है और कवि उनके साथ शक्ति से, सामर्थ्य से और आनंदपूर्वक जीवन जी रहा है। इस तरह पति-पत्नी के बीच के पवित्र प्रेम को रेखांकित करते हुए कवि ने स्पष्ट किया

है कि उसकी यही चेतना उसके जीवन साथी को जिलाये हुए है और वह पूरी शक्ति-सामर्थ्य और आनंद के साथ जीवन जी रहा है।

१५.२.३ भावार्थ –

'चेतना मेरी जिलाये है तुम्हें' कविता में कवि ने दांपत्य प्रेम की महत्ता स्पष्ट करते हुए जीवन के सकारात्मक पहलू को स्पष्ट किया है। कवि के जीवन में पत्नी के प्रेम का सहारा रहा है। उनका यह पत्नी-प्रेम ही चेतना बनकर पत्नी को जीवन जीने की प्रेरणा देता है और वे सामने आयी मौत को भी पछाड़ देती हैं। मृत्यु पर जीत के इसी क्षण को इस कविता में उकेरने का प्रयत्न इन्होंने इस कविता में किया है।

कवि पास बैठी पत्नी को प्रेम मग्न होकर देखता है। उसे लगता है कि उसकी चेतना ही पत्नी को जिलाये हुए है। पत्नी का रूप भी प्रेममंडित है। उनके केश लंबे और घुँघराले हैं। माँग में सिंदूर विराजमान है। माथे पर लाल रंग की बिंदी दमक रही है। बड़ी-बड़ी आखों में चमक है। आंतरिक खुशी से खुश प्रेम भरी मुस्कान उनके ओठों पर है जैसे उन्होंने जग जीत लिया है। उनके ह्रदय में धरती-सा धैर्य है। उनकी गोद में चिंता मुक्त आलोक पवन से खेल रहा है। अवशेष बची आयु की तरह उनकी कमर भी दुर्बल है और पैर देह का भार उठाये हुए से लग रहे हैं।

पत्नी का यह प्रेममय रूप जय-विजय की जिंदगी जी रहा है । इस प्रेम भरे रूप को मौत भी भौंहें ताने रुष्ट-सी दुखी मन से देखती है किंतु उसे छीन नहीं पाती। अतः हार कर कुंठित और क्रोधित हो उठती है। कवि उसे ललकारते हुए चुनौती देता है। वह रुक नहीं पाती और आँखों से ओझल हो जाती है। दिग्विजयिनी चेतना कविता गाती हुई वहाँ रह गयी। यह चेतना जहाँ उसकी पत्नी को प्रिय बनाये हुए है वहीं प्यार से उसे रिझा भी रही है। इस तरह कवि अपनी पत्नी के साथ शक्ति से, सामर्थ्य से और आनंदपूर्वक जीवन जी रहा है।

इस तरह इस कविता में कवि ने यहाँ यह संकेत किया है कि उसकी प्रेम भरी चेतना ही है जिसने उसकी पत्नी को इतनी सामर्थ्य और विश्वास दिलाया है कि वह मौत को भी हराकर जीवित है तथा मौत कुपित होकर भी कुंठित हो हारकर उसके पास से चली जाती है। वहाँ रह नहीं पाती। अतः कवि का प्रेम उसकी पत्नी को मृत्यु से भी बचा लेता है। यह विश्वास जीवन के सकारात्मक पहलू की ओर संकेत करता है। आज जब प्रेम का रूप तरह-तरह से कलुषित हो रहा है, कवि ने इस दांपत्य प्रेम की शक्ति को प्रतिष्ठित किया है।

१५.२.४ संदर्भ सहित व्याख्या –

मैं तुम्हारे साथ जीवन जी रहा हूँ

शक्ति से -

सामर्थ्य से

आनंद से ।

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक 'प्रतिनिधि कविताएँ : केदारनाथ अग्रवाल' में संकलित कविता 'चेतना मेरी जिलाये है तुम्हें' से ली गयी हैं। इसके रचयिता प्रसिद्ध प्रगतिवादी कवि केदारनाथ अग्रवाल जी हैं।

प्रसंग - इस कविता में कवि ने दांपत्य प्रेम के महत्त्व की प्रतिष्ठा की है। वस्तुत: केदारनाथ अग्रवाल जी ने हिंदी में दांपत्य प्रेम की प्रतिष्ठा करने वाली अनेक महत्त्वपूर्ण कविताएँ लिखी हैं। यह कविता भी इसी क्रम में लिखी गयी है।

व्याख्या - कवि अपनी पत्नी के रूप का वर्णन करते हुए अपनी चेतना में अपने जीवन-साथी को अनुभव करता है। उसे लगता है उसके जीवन साथी को मौत भी क्षुब्ध मन से क्रोधित होकर देखती अवश्य है किंतु उसके प्राण नहीं हर पाती। वह हारकर कुंठित हो चली जाती है। कवि की प्रेम भरी चेतना उसे बचा लेती है और वह उसके साथ पूरी शक्ति और सामर्थ्य से आनंदपूर्वक जीवन जीता है।

विशेष - इस कविता में दांपत्य प्रेम की महत्ता स्थापित की गयी है कि उस प्रेम के आगे मृत्यु भी विवश हो जाती है।

१५.२.५ वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

१. कवि की चेतना किसे जिलाये है?

उत्तर - कवि की चेतना उसकी पत्नी को जिलाये हुए है।

२. कवि की पत्नी के केश कैसे हैं?

उत्तर - कवि की पत्नी के केश लंबे और कुंडलित हैं।

३. कवि की पत्नी के अधर क्या जीतते हैं?

उत्तर - कवि की पत्नी के अधर जग जीतते हैं।

४. कवि के अनुसार धरा का धीरज कहाँ गूँजता है?

उत्तर - कवि के अनुसार धरा का धीरज उसके वक्ष में गूँजता है।

५. कवि की पत्नी के अंक में आलोक किस तरह बैठा दिखायी देता है?

उत्तर - कवि की पत्नी के अंक में आलोक चिंता-मुक्त बैठा दिखायी देता है।

६. कवि की पत्नी कैसी जिंदगी जी रही थी?

उत्तर - कवि की पत्नी जय-विजय की जिंदगी जी रही थीं।

७. कवि किसे ललकारता है?

उत्तर - कवि मौत को ललकारता है।

८. कवि की पत्नी को मौत किस तरह देखती है?

उत्तर - कवि की पत्नी को मौत भवें ताने, क्षुब्ध मन से देखती है।

९. मौत कुंठित और कुपित क्यों हो जाती है?

उत्तर - मौत कवि की पत्नी को हर न पाने के कारण कुंठित और कुपित हो जाती है।

१०. मौत के ओझल हो जाने पर कवि के पास क्या रह जाती है?

उत्तर - मौत के ओझल हो जाने पर कवि के पास दिग्विजयिनी चेतना की काम्य कविता रह जाती है।

११. कवि अपनी पत्नी के साथ जीवन किस तरह जी रहा होता है?

उत्तर - कवि अपननी पत्नी के साथ शक्ति से, सामर्थ्य से और आनंद से जीवन जी रहा होता है।

१५.२.६ बोध प्रश्न –

१. कवि की चेतना किसे जिलाये हुए है?

२. 'चेतना मेरी जिलाये है तुम्हें' कविता के माध्यम से दांपत्य प्रेम की श्रेष्ठता किस तरह व्यक्त हुई है?

३. 'चेतना मेरी जिलाये है तुम्हें' कविता में मानवीय सौंदर्य किस रूप में वर्णित हुआ है?

१५.३ टिप्पणी

१. 'चेतना मेरी जिलाये है तुम्हें' में रूप वर्णन।

२. 'चेतना मेरी जिलाये है तुम्हें' का आशय।

३. 'चेतना मेरी जिलाये है तुम्हें' में दांपत्य प्रेम की श्रेष्ठता।

□□□□□